हिन्दी मासिक प्रकाशन तिथि:३ फरवरी

एक प्रति मूल्य १८/-

ओ३म्

जनज्ञान

फरवरी २०१५ वर्ष:५० अंक:१०

माघ–फाल्गुन २०७१

स्वातन्त्र्य वीर
विनायक दामोदर सावरकर
पुण्यतिथि २६ फरवरी

महर्षि दयानन्द
जन्मदिवस १४ फरवरी

शिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनायें

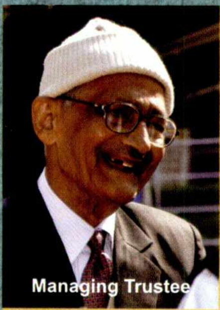

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ॥

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hCCt

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)
D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لئے کچھ کم نہ تھے کروبیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یارب علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یارب
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا درد مندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

सम्पादक : पंडिता राकेश रानी

सह-सम्पादक : दिव्या आर्य

मोबाइल : 8459349349, 9810257254

Email : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036

एक प्रति-18 रु०, वार्षिक शु०-200 रु०, पांच वर्ष-900 रु० और आजीवन-3100
विदेश में वार्षिक शुल्क-2100 रु.
(हवाई जहाज से) वार्षिक शुल्क-3100 रु.

फरवरी 2015 वर्ष 50 अंक 10

आवरण पृष्ठ : अरविन्द मोहन मित्तल

सम्पादकीय

गूँजे धरती, गूँजे अम्बर जय दयानन्द-जय सावरकर

स्वदेश का सहस्रों वर्षों का इतिहास इस तथ्य को बताता और जताता है कि **जब-जब अनीति और अन्याय की प्रबलता का दौर आता है तो राष्ट्र स्वातन्त्र्य सूर्य के प्रेरक प्रकाश से वंचित हो जाता है।** पराधीनता की काली छाया-गहन तिमिर के प्रबल थपेड़े, राष्ट्र को क्लान्त, आक्रान्त, कर इस देश में पनपी महान संस्कृति के अस्तित्व को विध्वंसित सा करने लगते हैं। **तब इस आर्यावर्त, हिन्दुस्थान, भारत की पुण्यभूमि की गोदी में कोई न कोई ऐसा लाल आता है, जो इस सत्य से संसार को अवगत कराता है कि आर्य कभी दासत्व को सहन नहीं करता।**

अन्याय, अत्याचार और अनाचार के विरुद्ध कोई न कोई महापुरुष युग प्रवाह की चुनौती को स्वीकार कर इस महान संस्कृति के रक्षण-संरक्षण हेतु कर्त्तव्य के समरांगण में अवतरित होकर आसुरी सत्ता से टकराता है और युग के प्रवाह को पलट कर सत्य के प्रशस्त पथ से दिगभ्रमित जन-गण को राह पर लाता है।

इस माह **देव दयानन्द की बोधरात्रि** (शिवरात्रि) है तो **स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की पुण्य तिथि** (26 फरवरी) भी इसी माह है।

देव दयानन्द का पावन स्मरण हमें इस तथ्य से अवगत कराता है कि **जब वह महामानव गुर्जर धरा गुजरात में एक सम्पन्न परिवार में जन्मा तो आर्यजाति आस्था और विश्वास के नाम पर सत्य पथ से विचलित होकर अनेक भ्रान्त धारणाओं को अपनाकर सुपथ को त्याग विपथ की अनुगामी हो चुकी थी।** वैदिक वर्ण व्यवस्था का

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

आधार कर्म नहीं रहकर जन्म हो गया था और जन्मना जातिवाद के कुष्ठ रोग ने आर्य-हिन्दू समाज को इतना क्षत-विक्षत कर दिया था कि समाज का ही वह अंग अस्पृश्य की संज्ञा पा गया था जिस पर इस समग्र समाज का अधिष्ठान है। **इस उपेक्षित वर्ग को विधर्मी सहानुभूति और आश्वासनों का प्रलोभन देकर अपना संख्या बल बढ़ाते रहे हैं।**

देव दयानन्द ने स्वराष्ट्र की इस विपन्न अवस्था पर दृष्टिपात कर इसे जागृत करने को अपना लक्ष्य बनाया। उनके प्रयास से भारत फिर से अँगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। **वह एक ऐसे युग पुरुष के रूप में उभरे कि अन्धविश्वास उनके भय से भाग खड़ा हुआ। अज्ञान का अन्धकार उनको देखते ही पलायन कर जाता था। शिवरात्रि को इस नरपुंगव ने जो बोध पाया था, उसने उन्हें सच्चे शिव की अनुभूति कराई थी।**

अपने व्यक्तिगत हित साधन की उपेक्षा कर महर्षि दयानन्द राष्ट्र आराधना और राष्ट्रहित साधन में अनुरक्त होकर ऐसे महामानव के रूप में उभरे थे कि जिनके द्वारा किए गए परम पिता परमात्मा की कल्याणी वाणी अर्थात् वेदों के पावन, प्रेरक प्रकाश ने सभी मत-मतान्तरों के अनुगामियों को अपने-अपने वैचारिक आधार के सुधार को प्रेरित किया। देव दयानन्द की तर्क-शक्ति व प्रखर बुद्धि को देखकर उनसे शास्त्रार्थ करने वाले विद्वतजन को भी सत्य पथ के अनुगमन हेतु नतमस्तक हो, मौन होना पड़ता था। **उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के रूप में जो प्रकाश पुंज प्रदान किया है वह जब तक सृष्टि रहेगी जन-गण को सही दृष्टि प्रदान करता रहेगा।** महर्षि दयानन्द ने भारत की जनता को दर-दर भटकने से बचाकर सत्य पथ दर्शाया है। **आडम्बर, अनाचार, मजहबी संकीर्णता, व साम्प्रदायिकता एवं सामाजिक कुरीतियों के निवारण, शिक्षा पद्धति में सुधार और नारी जागरण के भी दयानन्द पुरोधा बने।**

महर्षि दयानन्द एक जगद्उद्धारक सन्यासी थे उन्होंने अपने द्वारा संस्थापित आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना ही घोषित किया था। किन्तु साथ ही देव दयानन्द जहाँ अपने इस रूप में विश्व कुटुम्बी थे, वहीं इस विश्व भर के मित्र और सार्वभौम सन्यासी का भारत-हितैषी रूप भी अनुगमनीय और अनुकरणीय है। **इस परिपेक्ष्य में यह प्रश्न भी सहज रूप में ही मन में उठ सकता है कि क्या सर्वजगत हितैषी भारत भक्त भी हो सकता है?** किन्तु गम्भीरता से विचार किया जाए तो इस प्रश्न में ही समाधान भी विद्यमान प्रतीत होता है। **प्रत्यंगों की उन्नति के बिना सर्वांग की उन्नति असम्भव है। जब प्रत्येक अंग में चतुर्दिक विकास से ही सर्वांग का पूर्ण विकास सम्भव है, तब सारे संसार की उन्नति के लिए प्रत्येक देश की उन्नति क्यों आवश्यक नहीं?**

क्या एक धार्मिक पुरुष का विश्व भर के बालकों पर स्नेहभरी दृष्टि रखते हुए भी अपने बालकों के प्रति अप्रिय दृष्टि रखना आवश्यक है? यदि यह असम्भव है तो स्वामी दयानन्द का सार्वभौम धर्मोपदेष्टा सन्यासी रहते हुए भी भरत भक्त और भारत देश हितैषी रहना सम्भव है। **जिस मनुष्य में स्वदेशहित और स्वजातीयता के भाव नहीं हैं, वह आत्मसम्मान शून्य और स्वाभिमान रहित पुरुष के तुल्य निर्जीव है।**

सद्शिक्षा के जिस आदर्श पर आज सम्य जगत इतने परिवर्तनों के पश्चात पहुँचा है उसके मूल तत्वों को महर्षि दयानन्द की मर्मभेदी दृष्टि ने अर्धशताब्दी पूर्व ही निरख-परख लिया था। **महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व भारत कुरीतियों और कुप्रथाओं की क्रीड़ास्थली बना हुआ था।** आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द के प्रखर प्रताप ने आज हमें उस दिन का दर्शन करा दिया है, जब आर्यजाति की जड़ों को खोखला करने वाली इन कुप्रथाओं को कहीं कन्दराओं में भी स्थान नहीं मिल पाएगा।

महर्षि का ही यह पुण्य प्रताप है कि चिरकाल से विद्यमान जात्याभिमान और जन्म से जाति-पाँति के विचार को मिटाकर गुण, कर्म और स्वभावानुसार वैदिक वर्णाश्रम की मर्यादा के परिचालन का लक्ष्य धीरे-धीरे साकार हो रहा है। महर्षि द्वारा सामाजिक जागरण का ही यह पुण्य प्रताप [illegible] जिन वर्गों और सम्प्रदायों के व्यक्ति परमा[illegible] परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद के श्रवण मात्र तक के अधिकार से वंचित थे, उनमें भी आज अनेक कृतविद्य महाशय पण्डित और शास्त्री पदवी से विभूषित हैं।

यों तो भारत महासंस्कृति का सदैव से केन्द्र रहा है और इसमें सदैव ही देववाणी के धुरन्धर और प्रकाण्ड पण्डित अपनी ज्ञान-विज्ञान गंगा को सरसाने का भागीरथ प्रयत्न करते रहे हैं, किन्तु **कई शताब्दियों से इस देववाणी पर एक समुदाय-विशेष का ही वर्चस्व हो गया था।** महर्षि दयानन्द की दूरदृष्टि ने इस न्यूनता को अनुभूत करके सर्वसाधारण में संस्कृत के प्रचार-प्रसार

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

गूँजे धरती, गूँजे अम्बर जय दयानन्द–जय सावरक ३

सामायिक-विचार: ये दोस्ती...दगा नहीं देना –*अश्विनी कुमार* ६

महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी : क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते? १०

हृदय मंदिर के उद्गार –*दिव्या आर्य* ११

आपके पत्र १२

अध्यात्म धारा: हिंसक को मोक्ष धन नहीं मिलता –*श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती* १४

राष्ट्र की बाह्यान्तर सुरक्षा –*देवनारायण भारद्वाज* १५

कौन करे निर्माण? –*पंडिता राकेश रानी* १५

आर्य समाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या –*स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या* १६

महाशिवरात्रि पर हुआ महर्षि दयानन्द का बोध –*दिव्या आर्य* १८

'लड़ाई गरीबी, अशिक्षा और असमानता से है' –*कैलाश सत्यार्थी* १९

महर्षि दयानन्द का व्यक्तिगत पक्ष –*वेदाचार्य रघुवीर वेदालंकार* २२

ऋषि के सपनों का आर्यसमाज –*लालमन आर्य* २४

स्वामी दयानन्द का प्रिय आर्यावर्त्त –*सत्यानन्द आर्य* २५

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर २७

स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी योद्धा–वीर सावरकर –*डॉ. शशिबाला* २८

वीर सावरकर के चरण स्पर्श कर मैं तो धन्य हो गया –*गुरु चरण बिन्दल* ३१

आर्य समाज के आधार स्तम्भ –*जीवनियाँ भाग-6* ३२

गो-वध बन्दी का राष्ट्रीय कानून बने–*रामबहादुर राय* ३४

राजनीति: अमित शाह –*अरुण जेटली* ३७

हिन्दू धर्मरक्षक वीर बन्दा वैरागी –*सुन्दरदास* ४०

संस्मरण–रज्जू भैया –*आलोक कुमार 'एडवोकेट'* ४२

तांगेवाला कैसे बना मसालों... –*म. धर्मपाल गुलाटी* ४४

स्वास्थ्य विचार: वृद्धावस्था और... –*डॉ. फणिभूषण दास* ४५

समाचार-दर्शन ४६

का उपक्रम किया। वे जन्मना ब्राह्मणों से इतर जन को भी संस्कृत सीखने हेतु प्रेरित करते रहे। उनके मथुरा में रहते एक महाशय नयनसुख जड़िया ने उनसे पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्र कंठस्थ किए थे।

महर्षि दयानन्द ने संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री मानकर हिन्दी को आर्यभाषा के रूप में अपने उपदेशों और प्रवचनों की भाषा तो बनाया ही साथ ही आर्यसमाज के माध्यम से उसे राष्ट्र-भाषा का स्वरूप प्रदान करने में भी महती भूमिका निभाई।

महर्षि की एक और विभूति जो विशेष रूप से आकृष्ट करती है उनका वह रूप है, जिसे प्रो. मेक्समूलर ने उदार सनातनी की संज्ञा दी थी। **वस्तुतः महर्षि ने अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर लिखा है कि मेरे सारे सिद्धान्त वे ही हैं जिनको ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त सारे ऋषि मुनि मानते रहे।** देव दयानन्द द्वारा जिन मान्यताओं और व्यस्थाओं तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया उन्हें संक्षेप में **एक देव, एक देश, एक भाषा के प्रति अनुरक्ति का दर्शन भी कहा जा सकता है।** महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित प्रशस्त पथ पर चले **स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल और पण्डित लेखराम आदि सभी वन्दनीय मनीषियों, त्यागी, तपस्वियों का राष्ट्र को अन्धकार से उबार कर प्रकाश का पथ दर्शाने में उल्लेखनीय योगदान रहा है।** जबकि **स्वतन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर** का भी देव दयानन्द के प्रतिपादित सत्य पथ के अनुगामियोंा में विशिष्ट स्थान रहा है।

महर्षि दियानन्द ने राष्ट्र के स्वातन्त्र्य हेतु अपने महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में जो दिशा दान दिया था उसे वीर सावरकर ने अपने कर्म कौशल में उतारा था और विश्वास सहित यह उद्घोष गुँजाया था कि सत्यार्थ प्रकाश के रहते कोई भी अन्य मजहब का अनुगामी हमें चुनौती नहीं दे सकता। वीर सावरकर ने स्वदेश की स्वाधीनता का अग्नि-पथ वरण करने से पहले पुणे में विदेशी वस्त्रों का होलिका दहन कर देव दयानन्द के स्वदेशी अभियान का ही अनुगमन किया था।

स्वतन्त्रता की रूठी रमणी को रिझाने के लिए महर्षि दयानन्द के दर्शन के अनुगामी **नर केहरी ने अंडमान के कालापानी में अपनी जवानी कारावरण कर तेल का कोल्हू पेरते बिताई थी।** वीर सावरकर जिस हिन्दुत्व ग्रन्थ के सृष्टा थे। **(शेष पृष्ठ-13 पर)**

सामयिक-विचार

ये दोस्ती....दगा नहीं देना

–अश्विनी कुमार

अमेरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा गणतन्त्र दिवस समारोह में बतौर अतिथि शामिल हुए और चले गए। हमने उनके स्वागत में पलक-पांवड़े बिछाए। सुरक्षा के सात-सात चक्र बनाए। उन्होंने राजपथ पर रिमझिम वर्षा के बीच भारत का शक्ति प्रदर्शन देखा और देश की विविधता से भरी हुई सांस्कृतिक विरासत भी देखी। **यद्यपि वह ताज का दीदार करने आगरा नहीं जा सके,** लेकिन ताजमहल का तालाब फिर से आइने की तरह चमक पड़ा और ताजमहल की ओर जाने वाली हर सड़क इतनी चमक उठी कि शहर वाले भी खुशी के मारे पागल हो उठे।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने प्रोटोकाल तोड़ कर हवाई अड्डे पर **बराक ओबामा और मिशेल ओबामा का स्वागत किया। दोनों ने एक-दूसरे को जादू की झप्पी दी** यानी पंजाबी में कहें तो जफ्फियां-फफ्फियां भी खूब पड़ीं। **नरेन्द्र मोदी ने उन्हें अपने हाथों से चाय बना कर भी पिलाई।** उनके भोज में कई तरह के व्यंजन परोसे गए। विश्व के सबसे शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति अगर ढाई-तीन घंटे राजपथ पर बैठा रहा तो कूटनीति मोर्चे पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की महत्वपूर्ण उपलब्धि ही माना जाएगा। **कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि गुजरात के मुख्यमन्त्री रहे नरेन्द्र मोदी अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर एक कुशल नेता के तौर पर इतनी जल्दी उभर जाएंगे। पूरी दुनिया को उनकी नेतृत्व क्षमता पर पूरा विश्वास हो चला है और प्रवासी भारतीयों की 'मोदी-मोदी' की गूंज हमें अब तक सुनाई दे रही है।** यह सही है कि बदलती परिस्थितियों में अमरीका-भारत दोस्ती परवान चढ़ गई है।

भारत और अमरीका के बीच असैन्य परमाणु समझौते के मुद्दे पर एक कदम अमरीका पीछे हटा तो और एक कदम हम पीछे हटे और करार अपने अंजाम तक पहुंच गया। **दोनों देशों के बीच मतभेद का एक बिन्दु यह था कि अमरीका का मानना था कि भारत का असैन्य परमाणु समझौता कानून अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नहीं है। भारत ने अमरीका को आश्वस्त किया है कि भारत का कानून इन्टरनैशनल कन्वेंशन आफ सप्लिमैंट्री कम्पनसेशन के अनुरूप है।** अमरीका ने इसे स्वीकार कर लिया। बीमा सम्बन्धी जवाब देही के तहत अब साढ़े 7 सौ करोड़ रुपए सामान्य इंश्योरैंस कम्पनी देगी और बाकी साढ़े सात सौ करोड़ सरकार की गारंटी होगी। रक्षा, सुरक्षा, निवेश, मेक इन इंडिया पर सहमति और समझौते भी हुए। **कुल मिलाकर प्रधानमन्त्री मोदी ने ओबामा का दिल जीत लिया।**

मुझे भी बराक ओबामा से मिलने का अवसर मिला क्योंकि उनके सम्मान में राष्ट्रपति भवन में आयोजित रात्रि भोज के मौके पर मुझे भी प्रबुद्ध लोगों के साथ आमन्त्रित किया गया था। जब मैंने ओबामा से हाथ मिलाया तो उन्हें बताया कि–"I am the Member of Parliament and I am the Editor of Daily Hindi Newspaper Punjab Kesari." तब ओबामा ने मुस्कुराते हुए कहा–"So you are two-in-one." मैंने मिशेल ओबामा का अभिवादन किया और राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को नमस्कार कर आगे बढ़ गया। मैं स्वयं को गौरवान्वित तो महसूस कर रहा था कि लेकिन अमरीकियों के बारे में मेरे मन में शंकाएं हमेशा बनी रही हैं।

हैलो से बाय-बाय तक ओबामा की यात्रा का विश्लेषण करें तो चिन्ताएं अब भी मौजूद हैं, वह हैं अमरीका का दोगलापन। अमरीका ने पाकिस्तान को यह चेतावनी तो पहले ही दे दी थी कि ओबामा की भारत यात्रा के दौरान कोई आतन्की हमला न हो। आशंकाएं तो थीं कि ओबामा की भारत की यात्रा के दौरान पाक सेना और आतन्की संगठन कोई बड़ी वारदात कर सकते हैं। अमरीकी चेतावनी के बाद पाक ने सीमा पर हल्की गोलीबारी तो की लेकिन वह किसी बड़ी वारदात की हिम्मत नहीं जुटा पाया। अमरीका की चेतावनी में भी मुझे दोहरापन नजर आया। काश! अमरीका पाक को यह कहता कि वह भारत पर कोई आतन्की हमला न करे। केवल ओबामा की यात्रा के दौरान हमला न करने की चेतावनी का अर्थ यही है कि बाद में तुम जो करते हो करते रहो, लेकिन अमरीकी राष्ट्रपति की मौजूदगी में नहीं।

मुझे व्हट्स ऐप पर रोचक मैसेज भी दिखाई दे रहा है कि "अगर मोदी पाकिस्तानी हमलों से मुक्ति चाहते हैं तो ओबामा को भारत में ही रख लें तो फिर पाकिस्तान की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी।"

उधर ओबामा की भारत यात्रा से चीन भी परेशान हो उठा है। उसने तो भारत-अमरीका दोस्ती को सतही बताया तो उधर **गणतन्त्र दिवस यानी 26 जनवरी को ही पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल रहील शरीफ ने चीन की यात्रा की और वहां विदेश मन्त्री वांग यी और अन्य नेताओं से मुलाकात की। मुलाकात के बाद रहील शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान चीन का कभी नहीं बदलने लायक सदाबहार मित्र है और दोनों देश सांझा नियति के हिस्सेदार समुदाय हैं।**

पाकिस्तान आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के दबाव में तो है लेकिन वह बाज नहीं आने वाला। **भारत-अमरीकी सम्बन्ध पाकिस्तान को लेकर काफी जटिल रहे हैं इसी कारण दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र को दुनिया के सबसे पुराने लोकतन्त्र के मुखिया को अपने राष्ट्रीय पर्व गणतन्त्र दिवस पर आमंत्रित करने में सात दशक लग गए।**

रक्षा, ऊर्जा के अलावा आतंकवाद से मुकाबले का मामला भारत सरकार के लिए गम्भीर अर्थ रखता है। देखना यह होगा कि अमरीका पाकिस्तान की बोलती बन्द करने के लिए किस हद तक भारत के साथ आगे बढ़ता है। अमरीका की अब तक की नीति तो यही रही है कि पाकिस्तान के कटोरे में डालरों की भीख डाल दो और तमाशा देखो। **अमरीका क्यों नहीं पाक को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करता।** अफगानिस्तान को लेकर अमरीकी नीतियों पर भी भारत के मतभेद हैं। **घरेलू एजैंडा कुछ भी हो लेकिन भारत को आंतकवाद से मुक्ति चाहिए।**

अमरीकियों से बढ़ती दोस्ती से हमारा स्वाभाविक मित्र रूस हमसे दूर छिटक सकता है। इसके लिए अमरीका को दोगलापन छोड़ना होगा। **पाक का सच जानते हुए भी अमरीका जानबूझ कर उसको हमारे समकक्ष रखता है।** भारत-अमरीका दोस्ती किस मुकाम तक पहुंचेगी, यह समय ही बताएगा।......

(पंजाब केसरी, 28 जनवरी, 2015 से साभार)

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदिभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-36 दूरभाष: 08459349349

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती - 14 मार्च

एवं

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव - 15 मार्च

(दिनांक 9 मार्च से 15 मार्च 2015 तक)

इस अवसर पर

वेदकथा एवं नित्य यज्ञ का आयोजन, वेदों में विज्ञान विषय पर गोष्ठी,

सामाजिक समरसता सम्मेलन

तथा

राष्ट्ररक्षा संकल्प सम्मेलन (15 मार्च)

जनज्ञान पाठक गोष्ठी, राष्ट्रवादी कवि गोष्ठी भी आयोजित होगी।

स्थान:- वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर) दिल्ली-३६
चलभाष:- 08459349349, 09810257254 I Email: dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

सर्व श्री- स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, स्वामी प्रणवानन्द, महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच), जी. वी. जी. कृष्णामूर्ति (पूर्व चुनाव आयुक्त, भारत), डा. हर्षवर्धन (केन्द्रीय मन्त्री, भारत), भगत सिंह कोशियारी (पूर्व मुख्यमन्त्री, उत्तराखण्ड), योगी आदित्यनाथ (सांसद), आलोक कुमार एडवोकेट, मनोज तिवारी (सांसद), रिखबचन्द जैन(टी.टी.), अश्विनी कुमार चौबे (सांसद, बिहार), मायाप्रकाश त्यागी, मुन्ना कुमार शर्मा, मोतीराम(बीकानेर वाला), डा. श्यामसिंह शशि (पद्मश्री), बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम', प्रो. पूर्णसिंह डबास, डा. वीरपाल वेदालंकार, आचार्य वीरेन्द विक्रम, डा.शोभा विजेन्द्र, गोविन्दवल्लभ जोशी, राष्ट्रकवि डा. सारस्वत मोहन मनीषी, आशुकवि डा. हरिसिंह एवं विजय गुप्त, श्रीमती शकुन्तला आर्य (पूर्व महापौर) को भी आमन्त्रित किया गया है।

आर्य/हिन्दु सभी संस्थाओं एवं बहन-भाइयों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार एवं मित्रों सहित पधारें, तथा तन-मन-धन से सहयोग भी प्रार्थनीय है।

कार्यक्रम की सफलता हेतु अधिकाधिक सहयोग राशी चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC:UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

आपकी बहन

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर पहुँचने का मार्ग - अन्तर्राज्जीय बस अड्डा(कश्मीरी गेट) तथा किंग्ज़वे कैंप(जी.टी.बी.नगर) से बस नं.- 192,162,143,105 द्वारा केशव नगर बस स्टैण्ड पहुँचें। किंग्ज़वे कैंप (जी.टी.बी.नगर) से ग्रामीण सेवा नत्थू पुरा मोड़ तक उपलब्ध है।
(नत्थू पुरा मोड़ से वेद मन्दिर एक किलोमीटर है। जहाँ से रिक्शा आदि की सुविधा भी उपलब्ध रहती है।)

एक आग्रह-एक अनुरोध

मान्य बन्धु/ भगिनी! सादर नमस्ते।

इस पत्र के माध्यम से मैं आपके द्वार पर आपके अपने प्रतिष्ठान **''दयानन्द संस्थान''** के **वार्षिकोत्सव (15 मार्च) एवं महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह में (14 मार्च) यथाशक्ति सहयोग और योगदान के आग्रह के लिए उपस्थित हो रही हूँ।**

देव दयानन्द ने आर्य (हिन्दू) जाति को जो सन्देश **'लौटो वेदों की ओर'** एक आह्वान रूप में प्रदान किया था, महात्मा वेदभिक्षुः ने उसे क्रियान्वित करने के लिए ही लगभग छियालीस वर्ष पूर्व दयानन्द संस्थान की स्थापना की थी। संस्थान विगत छियालीस वर्षों में **''चारों वेदों का हिन्दी भाष्य''** लागत से भी कम की राशि पर आपके पवित्र दान और सक्रिय सहयोग के माध्यम से देश-विदेश में लगभग चार लाख परिवारों तक पहुँचा चुका है। दयानन्द संस्थान ने वेदों के अतिरिक्त अन्य **दुर्लभ वैदिक ग्रन्थ तथा राष्ट्रवादी साहित्य लागत से भी कम मूल्य पर उपलब्ध कराने का अभियान गतिमान रखा है।**

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम के नवनिर्माण का कार्य भी चल रहा है। भव्य यज्ञशाला का का निर्माण भी होना है। इसके अतिरिक्त अपने मुख्यालय महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशव नगर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-36 में एक 'गौशाला' और दातव्य 'आयुर्वेदिक चिकित्सालय' का संचालन भी कर रहा है। इस पुनीत कार्य में सभी का सहयोग प्रार्थनीय है।

वार्षिकोत्सव एवम् महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह (9-10-11-12-13-14 मार्च) के अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी इस अवसर पर सामाजिक समरसता सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा श्रेष्ठ आर्यजन सम्मान समारोह एवं राष्ट्रवादी काव्य गोष्ठी और सामूहिक प्रीतिभोज के कार्यक्रम आयोजित होंगे। मासिक **'जनज्ञान'** भी संस्थान के इस अभियान के प्रचार में संलग्न है।

इनकी सफलता के लिए तन, मन, धन से आपका सहयोग अपेक्षित है।

विश्वास है हमारे आग्रह पर ध्यान देकर **आप अधिक से अधिक सहयोग का हाथ बढ़ायेंगे**, तथा आयोजनों की सफलता में सहभागी बनेंगे।

सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम भिजवाएं। **अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434, IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।**

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

–आपकी बहन

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६ चलभाष : 8459349349, 9810257254
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

महात्मा वेदभिक्षु: की अमर-वाणी

क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते?

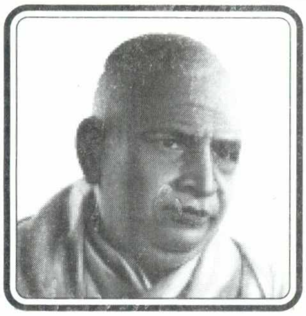

आज बहुत दु:खी मन से प्रत्येक दयानन्द की जय बोलने वाले से यह पूछना चाहता हूं कि-'**क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते?**' दयानन्द जैसा महापुरुष और कोई नहीं हुआ, पर आज उसका लक्ष्य भक्तों के अभाव में सिसक रहा है। असत्य और अज्ञान पर चलने वालों के विचार पर लगा कर फैल रहे हैं और मेरे गुरु का सन्देश घुट रहा है; यह देख अगर मैं रो सकता हूं तो क्या आप नहीं रो सकते? **आप दयानन्द की जय बोलते हैं पर जय कैसे होगी? क्या कभी सोचा है?** क्या कभी कुछ किया है आपने दयानन्द के लिए? उत्तर क्यों नहीं देते??

अपने-अपने स्वार्थों में उलझे तुम, हां तुम! दयानन्द का नाम लेने वाले ही दयानन्द के विचार-प्रसार की सबसे बड़ी बाधा बन गए हैं। दयानन्द के नाम पर जीवन देने वाला कहीं भी तो दिखायी नहीं पड़ रहा। आखिर क्यों? किससे कहूं, क्या करुं, कुछ समझ नहीं आता। आर्य समाज मन्दिरों में शून्यता, अधिकारियों में निराशा, नेताओं में पदों का मोह? क्या हो गया है सबको!

कहां गया वह सपना धरती को आर्य बनाने का; कहां गया उत्साह अरब में हलचल मचाने का, कहां गया जोश मतवादों को चुनौती देने का! पाखण्ड खंडिनी उठा कर चलने वाले हाथों ने चूड़ियां क्यों पहन लीं, क्रान्ति करने वाले मस्तिष्क भ्रान्ति में क्यों फंस गए-युग बदलने के अरमान कहां चले गए?

मेरे प्रश्नों का उत्तर दो! दयानन्द के अनुयायियों से मैं पूछना चाहता हूं कि तुम क्यों नहीं कुछ करते दयानन्द के लिए। या तो उसे अपना मानना छोड़ दो या फिर कुछ करो, आगे बढ़ो। **यह ठीक है कि समय का प्रवाह उलटा है लेकिन उतना नहीं जब अकेले दयानन्द ने युग को चुनौती दी थी।** आज तो तुम्हारे पास भवन हैं, साधन है, मार्ग हैं, फिर तुम कुछ नहीं कर पा रहे यह तुम्हारी कायरता है या स्वार्थ-आलस्य है या प्रमाद। इस पर स्वयं चिन्तन करो!!!

देव दयानन्द के प्राणों की ज्योति आज भी हमें बुला रही है पर हमारे कान बहरे हो गए हैं। वे पुकार सुनकर भी अनसुनी कर रहे हैं। हम हारे सिपाही की तरह घर में घुसकर बैठ गए हैं और हमारा देश आसुरी अज्ञान की छाया से ग्रस्त होता जा रहा है।

वह दिन दूर नहीं दीख रहा जब कहीं ईसाईलैंड होगा, कहीं पाकिस्तान, कई टुकड़े छोटे-छोटे। सब कुछ होगा पर धर्म नहीं होगा। राम नहीं होंगे, कृष्ण नहीं होंगे। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत नहीं होंगे। तब क्या होगा?

जब सब कुछ मिट जाएगा तब रोने से भी क्या होगा? इसलिए **आज और अभी उठो।** चूड़ियां तोड़कर हथकड़ियों का स्वागत करो। जो भी कर सकते हो, करो।

पागल बनकर दयानन्द की बात फैलाने में लगो, उत्साह और उमंग से भरकर आर्यसमाज मन्दिरों को शक्ति प्रसार का केन्द्र बनाओ। ऐसी अग्नि जलाओ कि अज्ञान जल जाए। ऐसी आंधी बनो कि पाप उड़ जाएं, ऐसी शक्ति संग्रह करो कि तुम्हारे सामने कोई ठहर न सके। लेखराम, श्रद्धानन्द की राह पर चलने के लिए आर्यवीर मचलें। आर्य समाज के अधिकारी लकीर पीटनी छोड़कर मन में उमंग और प्रचार योजना बनायें। उपदेशक, विद्वान्, संन्यासी अपनी प्रखर वाणी से युग को चुनौती दें।

दयानन्द की जय के लिए जो कुछ कर सकते हो, करो। करो या मरो...अन्यथा इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा। फिर पूछता हूं क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते? दयानन्द के लिए सब कुछ अर्पित कर दयानन्द का काम करो। अन्यथा मृत्यु निश्चित है!!!!!

+++

हृदय मन्दिर के उद्‌गार

–दिव्या आर्य

बोध हुआ ईश्वरीय ज्ञान के अन्वेषण का दयानन्द को उस 'बोधरात्रि', 'शिवरात्रि' को मूषक के भोग ने दिया ज्ञान, कि–'सच्चा शिव' पाषाण मूरत में नहीं, जो न कर सका अपनी रक्षा स्वयं, ऐसे शिव-सच्चे ईश्वर कैसे सम्भव हो गए!! यूं हुआ उस अन्वेषण का प्रादुर्भाव अन्तर्मन में कि–'मूलशंकर' 'दयानन्द' हो गए, हम भी करें सच्चे शिव के साक्षात्कार की अभिलाषा साकार, यही है हृदय मन्दिर के उद्‌गार!

हे महर्षि दयानन्द! शब्द ही नहीं मिलते जिससे आपकी प्रशंसा कर पाऊं!.. .अतुलनीय हो आप, प्रेरणास्रोत हो आप! **धन्य हो गई मैं कि जिस भारत भूमि पर ऋषि दयानन्द ने जन्म लिया। मुझे भी उसी धरा पर जन्म लेने का सौभाग्य मिला।** क्योंकि यह यथार्थ सत्य है कि अगर **ऋषि दयानन्द न होते तो न मैं आज यह लेख लिख रही होती, न वेद मन्त्रों का उच्चारण कर रही होती, और** न देश में आज महिलाओं सशक्तीकरण की बात होती, न बराबरी का दर्जा–आरक्षण होता **और भावाभिव्यक्ति तो शायद स्वप्न मात्र ही रही होती!**

रोम-रोम ऋणी है उस गुरुवर का, महान मनीषी का, ऋषि दयानन्द का! क्योंकि यदि दयानन्द न होते तो प्रथम स्वाधीनता संग्राम की चिन्गारी भी न भड़की होती।.... वीर सावरकर, भाई परमानन्द सरीखे क्रान्तिकारी, क्रान्ति यज्ञ के प्रणेता न होते, भगतसिंह- बिस्मिल-आजाद के जैसे आजादी के परवाने, आत्मोत्सर्ग करने वाले बलिदानी न होते और न आप-आप होते न मैं–मैं होती!

सम्पूर्ण विश्व को बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया जिसने, जिस उद्देश्य के लिए उस महामानव ने अपना सर्वस्व दिया और **जिनके दिखाए नक्शे-कदमों पर चल हम स्वाधीन हुए, आज स्वतन्त्र भारत में श्वास ले रहे हैं ऐसे गुरुवर को हमने क्या दिया?**

प्रतिवर्ष मेले आयोजित होते हैं इस माह भी होंगे। इस फरवरी माह में जहां **ऋषि दयानन्द का जन्मोत्सव** (14 फरवरी), **बोधोत्सव** अर्थात् शिवरात्रि (17 फरवरी) है। **वीर सावरकर जी की पुण्यतिथि** (26 फरवरी) इसी माह है, जिन्हें काला पानी की सजा हुई। कोल्हू का का बैल बनाकर जोता गया! **आप और हम तो एक दिन ऐसी सजा काटने का साहस नहीं जुटा सकते! और एक नहीं दो-दो आजन्म कारावास की सजा!**

7 फरवरी को दिल्ली में विधानसभा चुनाव हैं और जब तक यह लेख आप पढ़ रहे होंगे **तब तक सम्भवतः दिल्ली के भाग्य का फैसला भी हो चुका होगा।** मेरी स्वयं की चुनाव प्रचार में सक्रिय भागीदारी रहती है। लेकिन अत्यन्त **क्षोभ होता है कि राजधर्म में से राज की भावना तो यत्र-तत्र-सर्वत्र है और धर्म नदारद?.**

1969 में कांग्रेस का पहला विघटन होने के बाद जो नई कांग्रेस श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बनाई वह 1971 के लोकसभा चुनावों के बाद पूरी तरह व्यक्तिगत मूलक होकर संगठन के स्तर पर जड़विहीन हो गई और एक नई **'चारण परम्परा'** का शुभारम्भ हुआ। और **इसी चारण परम्परा को समाप्त करने का संकल्प लेकर ऐसा फूटा जनाक्रोश कि भाजपा जो 1984 में 2 संसद सदस्य मात्र थी, 2014 में 282 तक पहुंची!!**

राजनीति में धर्म का भाव कदापि यह नहीं है कि इसमें ठगी का धन्धा करने वाले तथाकथित धर्मगुरुओं का समावेश हो बल्कि नैतिकता-संस्कार जैसे जीवन मूल्यों का समावेश हो, जिसके लिए असंख्य बलिदानों के बाद हमें यह बहुमूल्य स्वतन्त्रता मिली है।......

गुरुवर ऋषि दयानन्द के जन्मोत्सव-बोधोत्सव की सार्थकता तभी होगी, जब हम उत्सवों तक ही गुरु दयानन्द के आदर्शों को सीमित न करें अपितु उसे जन-जन के आचार-व्यवहार और परिवेश में ढालने को संकल्पित हों। **न कि दयानन्द के नाम पर प्रोपर्टी जमा कर उन पर कब्जा जमाने की होड़ करें।**

आइए, **सच्चे शिव की खोज की लालसा का बोध लें इस बोधरात्रि, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के उद्‌घोष के साथ.....**

+++

आपके-पत्र

मनहर्षित है

श्रद्धेय पंडिता जी

सादर नमस्कार,

मैं सकुशल अमेरिका वापस आ गया। वेद मन्दिर के जीर्णोद्धार का कार्य आरम्भ होने पर मन अत्यन्त हर्षित है। इसके लिए बिटिया दिव्या को आशीर्वाद। वेद मन्दिर के लिए मैं अपना दूसरा अंशदान भेज रहा हूं। कृपा करके आप स्वीकार करके मुझे कृतार्थ करें।

शेष कुशल है। मेरी अगली भारत यात्रा के दौरान आपके दर्शन होंगे।

डा. फणिभूषण दास
(MD, MS, FACS, FRCS(C) अमेरिका

सावरकरवादी सोच का संविधान

महोदया,

1. देश का नाम सभी भाषाओं में हिन्दू देश-हिन्दू राष्ट्र या हिन्दुस्तान रखा जाता।
2. **हिन्दू धर्म** (सनातन धर्म, वैदिक धर्म, सिख धर्म, बोद्ध धर्म, जैन धर्म) **को राजकीय/सरकारी धर्म घोषित किया जाता।**
3. अहिन्दुओं (मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी) को मताधिकार नहीं देने की, वीर सावरकर की उचित मांग, अवश्य मानी जाती।
4. **अहिन्दुओं के पर्वों पर सरकारी अवकाश बन्द कर दिया जाता।**
5. अनुसूचित जाति/जनजाति को आरक्षण आर्थिक आधार पर दिया जाता न कि जाति के आधार पर।
6. जनगणना के फार्म में जाति में आर्य और धर्म में वैदिक धर्म का कॉलम की महर्षि दयानन्द जी की उचित मांग अवश्य पूरी की जाती।
7. **पूरे देश में गोहत्या बन्दी, शराब बन्दी लागू की जाती** और 756 वर्षों के मुस्लिम शासन काल में भ्रष्ट किए गए 3032 छोटे बड़े मन्दिरों का जीर्णोद्धार पुर्ननिर्माण करने का प्रावधान किया जाता। उपरोक्त कार्य करने से हिन्दू के आंसू पुंछते और उसके चेहरों पर मुस्कान दिखाई देती।

-शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट अतिरिक्त अध्यक्ष, (द्वितीय) सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्द शहर

चुनौतियों से लड़ना ही जीवन है

महोदय,

"मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता हौंसलों से उड़ान होती है।" ये पंक्तियां उन लोगों को समर्पित हैं जिन्होंने जीवन के संघर्ष में विजयी होकर विभिन्न परिस्थितियों में नवीन सृजन किया है।

ऐसे लोगों ने सामने आकर स्वयं का और समाज का नेतृत्व किया है। ये लोग कभी भयभीत नहीं हुए कि मैंने तो कदम बढ़ा दिया और अब आगे परिणाम क्या होगा?

वास्तव में सफलता, ऐश्वर्य और सम्मान इन्हीं लोगों के सामने नतमस्तक होते हैं। जीवन का द्वन्द्व धरती की गोद में पड़े दो बीजों की तरह है। एक में से अंकुर फूटा और वह ऊपर की ओर बढ़ने लगा तो दूसरा बीज बोला, "भैय्या! तुम ऊपर मत जाना, वहां भय है कि दूसरे तुम्हें मार डालेंगे।" यह सुनकर पहला बीज मुस्कुराता हुआ ऊपर की ओर बढ़ गया। सूर्य का प्रकाश, हवा व पानी पाकर अंकुर पौधे में बदल गया। **धीरे-धीरे वह पूर्ण विकास वृक्ष बना और संसार से विदा होते समय अपने असंख्य बीज छोड़कर उसे आत्मसन्तोष का अनुभव रहा। दूसरा बीज जहां का तहां रहा और सड़ गया।**

वास्तविक सत्य यही है कि जीवन में प्रगति वही कर पाते हैं जो चुनौतियों से लड़ने का जज्बा रखते हैं। अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, लालबहादुर शास्त्री जैसे अनेक महापुरुषों का जीवन हमें जीवन की चुनौतियों से लड़ने की प्रेरणा देता है। एक ऐसा समय आता है जब हमें कुछ समझ में नहीं आता, नकारात्मकता जीवन को चारों ओर से घेर लेती है तब हमें ईश्वर के प्रति अपने विश्वास को प्रबल करना चाहिए, साथ ही धैर्य और संयम बनाए रखना चाहिए। निश्चित ही आपको एक नई राह मिलेगी। **विषम परिस्थितियों से हार मान लेने वाले लोगों को जीवन में कुछ हासिल नहीं होता। जिन्दगी उनका साथ कभी नहीं देती जो स्वयं का साथ नहीं देते।** विकास

रुक जाएगा और वह कभी भी अपनी क्षमताओं से परिचित नहीं हो पाएगा।

–चामुंडा स्वामी (आध्यात्मिक उपचारकर्ता)

हिन्दू धर्म की पुकार

आदरणीया,

महर्षि मनु व महर्षि दयानन्द सरस्वती का सपना करना है साकार। **मनु स्मृति के उल्लेख को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि एक पुत्र न होने के बराबर है अतः एक से अधिक ही होने चाहिएं।**

इस पत्र के माध्यम से हिन्दू समाज से यह अपील हैं यदि आप भारत को इस्लामिक देश बनने से बचाना चाहते हैं और भारत को हिन्दुस्तान बनाए रखना चाहते हैं तो हम दो और हमारे चार का मन्त्र अपनाना होगा।

बच्चों को अल्ला की देन बताकर अपनी जनसंख्या बढ़ाकर मुसलमानों ने संसार के अनेक देशों को इस्लामिक बना दिया। इसी प्रकार हमें भी बच्चों को भगवान की देन मानकर अपनी जनसंख्या बढ़ाकर धर्म व राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए।

–यति नरसिंहानन्द सरस्वती
महन्त प्राचीन देवी मन्दिर-डासना, गाजियाबाद

अकाल मृत्यु होती है

महोदया,

आर्यसमाज में चली आ रही धारणा कि अकाल मृत्यु होती है या नहीं? इस विषय पर विद्वान् एकमत नहीं है। इस मान्यता को आर्यजगत से सदैव के लिए समाप्त किया जा सके। **अकाल मृत्यु होती है तथा महर्षि दयानन्द व वेद के सत्य सिद्धान्त को प्रकाशित किया जा सके। विद्वानों में इस विषय पर शास्त्रार्थ की अत्यन्त आवश्यकता है। क्योंकि दो विरुद्ध मान्यताएं हैं, दोनों कदापि सत्य सिद्ध नहीं हो सकतीं।........**

अब हम जन्म के समय आयु निश्चित न होने व अकाल मृत्यु होने व प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

1. **सत्यार्थ प्रकाश**–इस प्रकार जो स्त्री व पुरुष करेंगे उनके उत्तम सन्तान उत्तम व दीर्घ आयु होंगे। (द्वितीय समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
2. प्रसिद्ध है कि रोग रहित रहूंगा और आयु भी मेरी 70 व 80 वर्ष होगी। (तृतीय समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
3. अथवा उत्पन्न हो तो चिरकाल तक न जीवे। (चतुर्थ समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
4. सम्पूर्ण सतवर्ष व उससे अधिक आयु को आनन्द से भोगते हैं। (चतुर्थ समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
5. अन्यथा वीर्य व्यर्थ जाता है दोनों की आयु घट जाती है। (चतुर्थ समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
6. हानिकारक पशु व मनुष्य हो उनको दण्ड देवे व प्राण भी वियुक्त कर दें। (दशम समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
7. जिन पदार्थों से बुद्धि, बल, पराक्रम वृद्धि और आयु वृद्धि होवे। अतनडुल आदि (दशम समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)
8. बहुत से मनुष्य अकाल व जिनको अन्न आदि नहीं मिलते भूखे मरते हैं। (द्वादश समुल्लास सत्यार्थ प्रकाश)

यदि मृत्यु का समय निश्चित माना जाता है तो कुछ भी दण्ड व्यवस्था सिद्ध नहीं हो सकती।

–महेन्द्र सिंह आर्य,
अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द वेद संस्थान आर्य नगर बम्बावड, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

(पृष्ठ-5 का शेष)

उसमें महर्षि के महान् अनुगामी स्वामी श्रद्धानन्द ने वैदिक ऋषियों सरीखे चिन्तन की झलक पाई थी। **हैदराबाद के मुक्ति संग्राम में वीर सावरकर ने ही अपने राजनीतिक संगठन हिन्दू महासभा को आर्यसमाज का संकल्पित सहयोगी बनाया था।** देव दयानन्द के सपनों के आर्यावर्त, हिन्दुस्थान को ही वीर विनायक ने अपनी कल्पनाओं का अधिष्ठान बनाया था।

देव दयानन्द ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज से युक्त जिस भारत की कल्पना करते थे उसे ही वीर सावरकर ने भी अपने सपनों का सोपान बनाया था।

हम संकल्प ग्रहण करें ऋषि बोधोत्सव पर, सबल राष्ट्र के निर्माण का व्रत लें वीर सावरकर पुण्यतिथि पर, सबल समृद्ध सैन्य बल अर्जित हिन्दुस्थान के गठन का। प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता तथा माओवाद और आतंकवाद के शमन का यही है एकमात्र उपाय।.......

❖❖❖

अध्यात्म धारा

हिंसक को मोक्ष धन नहीं मिलता

–श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ओ३म् न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्य्ये दिवि॥

–सा. उ. ४-४-३-२

(**दुष्टुतिः**) बुरी कीर्ति वाला, दुष्ट साधनों वाला (**द्रविणोदेषु**) धन-दाताओं में (**न**) नहीं (**शस्यते**) गिना जाता, अच्छा माना जाता। (**स्रेधन्तम्**) हिंसक को (**रयिः**) धन मोक्ष धन, (**न**) नहीं (**नशत्**) प्राप्त होता है। हे (**मघवन्**) पूजनीय धनवन भगवन्! (**मावते**) मेरे जैसे के लिए (**पार्य्ये**) पार पाने योग्य (**दिवि**) प्रकाशावस्था में (**देष्णम्**) देने योग्य (**यत्**) जो धन है, (**सुशक्तिः**) उत्तम शक्ति वाला मनुष्य (**इत्**) ही (**तुभ्यम्**) तेरे निमित्त (उसको प्राप्त करता है)।

इस मन्त्र में जिस धन की चर्चा है, वह साधरण धन–धन-धान्य, मकान, पशु आदि नहीं। वरन् शान्ति रूप धन है। वेद में कहा भी है–**शं पदं मघं रयीषिणे** (सामवेद संहिता) धनाभिलाषी के लिए शान्ति-रूपी धन ही पद–प्राप्त करने योग्य है। **लौकिक धन-धान्य तो चोर डाकुओं के पास भी होता है।** वैसे भी **धन की अधिक मात्रा प्रायः अन्याय अत्याचार अनाचार से ही कमाई जाती है।** किन्तु इस धन से बुद्धिमानों की तृप्ति नहीं होती। याज्ञवल्क्य जब घर छोड़कर संन्यासी बनने लगे, तब उन्होंने अपनी धर्मपत्नी मैत्रेयी से कहा, आ मैत्रेयी, तेरा बंटवारा कर दें। इस पर मैत्रेयी ने पूछा–

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्, स्या न्वहं तेनामृता (बृहदा. ४-५-३)

भगवन्! यदि यह धन-धान्य से पूर्ण सम्पूर्ण पृथिवी मेरी हो जाए तो क्या में अमृत हो जाऊंगी?

सत्यदर्शी यथार्थ वक्ता याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं–

नेति नेति...यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्याद्, अमृतत्वस्य नु नाशास्ति वित्तेन (बृहदा. ४-५-३)

नहीं, नहीं... जैसे धनधान्य और सामान वालों का जीवन होता है, वैसे ही तेरा जीवन भी होगा। अमृतत्व की–मुक्ति की आशा-सम्भावना धन से नहीं हो सकती।

मैत्रेयी ने इस पर कहा–**येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्य्याम् यदेव भगवन् वेद तदेव मे ब्रूहि** (बृहदा. ४-५-४)

जिससे मैं मुक्त न हो सकुं, उससे मेरा क्या प्रयोजन? महाराज! मोक्ष का जो भी साधन आप जानते हैं वही मुझे बताइए।

धन के प्रति कितनी ग्लानि है। कितना गहरा निर्वेद है। सचमुच मोक्षाभिलाषी, शान्ति की कामना वाला चंचल धन को कैसे चाहेगा? जिसके सम्बन्ध में वेद स्वयं कहता है–

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः॥

(ऋ. १०-११७-५)

अरे, धन तो सचमुच एक से दूसरे के पास जाते हुए रथ के चक्रों की भान्ति अदलते-बदलते रहते हैं।

ऐसे विनश्वर भौतिक धन में अविनाशी के अभिलाषी की अभिलाषा कैसी!!! इसी वास्ते प्रकृत मन्त्र में कहा है–**न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते** अर्थात् दुष्ट साधनों वाला मनुष्य धनदाताओं में नहीं गिना जाता।

जब उसके पास है नहीं, तब देगा कहां से। वेद पाने की बात न कहकर देने की कहता है। क्योंकि वेद दान की महत्ता का प्रचारक है। ऋग्वेद ने तो स्पष्ट कह दिया–

न दुष्टती मर्त्यो विन्दते वसु (ऋ. ७-३२-२१)
मनुष्य दुष्ट उपायों से धन नहीं प्राप्त कर सकता।
दूसरे चरण में बहुत स्पष्ट कहा है–
न स्रेधन्तं रयिर्नशत्।
हिंसक भी धन नहीं प्राप्त कर सकता।

कितना ही शास्त्रवेता क्यों न हो, जब तक हिंसादि दुष्ट उपायों को नहीं छोड़ता, तब तक शान्ति धन, आत्म सम्पत्ति को नहीं प्राप्त कर सकता। यम से मार्मिक शब्दों में नचिकेता को समझाया था....

**नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्** (कठो. २-२२)

जो दुराचार से नहीं हटा, जो चंचल है, जो प्रमादी है, सावधान नहीं हैं, जिसके मन में क्षोभ है, वह बुद्धि से, ज्ञान से इस आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता।

आत्मज्ञान के बिना शान्ति नहीं। जब प्रमाद तथा अनाचार से आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती, तब उसकी प्राप्ति के बाद प्राप्त होने वाली शान्ति-सम्पत्ति की आशा कैसे की जा सकती है।

वेद कहता है, देने योग्य धन को कोई शक्तिशाली ही प्रभु समर्पण की भावना से प्राप्त कर सकता है।

बलहीन का संसार में ठिकाना नहीं, परलोक की तो बात ही क्या? वहां के लिए उपयुक्त धन कमाने को बड़ा बल चाहिए। ●●●

कौन करे निर्माण?

–पण्डिता राकेशरानी

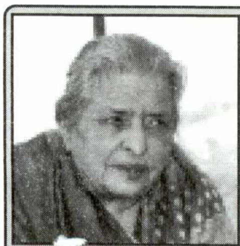

दयानन्द के दिव्य स्वप्न
का कौन करे निर्माण?
अन्धकार में चेतनता खो,
व्यथित हुआ संसार!
पथ विभ्रम में विकल दीन-सा, किसको रहा पुकार!
और निराशा की आंधी में, डगमग-डगमग प्राण–
सोच रहे हैं चला चलूं मैं, कहां करूं अभियान?
कौन बताए जग को बोलो, जीवन लक्ष्य महान्!
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण?

दूर-दूर तक एक प्रश्न है, एक राह हो कौन?
जाति, पंथ, मत, वाद, दुर्ग को, तोड़े, कैसे, कौन?
कौन करे मानव संरक्षण, दानव का संहार?
कौन सभी को दे पाएगा, शान्ति सुधा उपहार?
गूंज रहे हैं मस्तिष्कों में प्रश्न यही अविराम?
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण,
जटिल वेदना, सिसक रहे हैं, मानवता के गान!
महानाश की ज्वालाओं में, धधक रहे वरदान!
उजड़ चुकी है रम्य वाटिका, धरती है शमशान!
लाश पड़ी है मनुज पुत्र की क्रंदन की है तान!
टूटी वीणा गा न सकेगी, बिन पाए बलिदान!
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का, कौन करे निर्माण?

यही प्रश्न है जिनका उत्तर, मांग रही हूं आज!
कौन बजाएगा फिर उनको, टूट चुके जो साज!
सत्य ज्ञान गौरव को भू पर, फैलाएगा कौन!
"ओ३म्" ध्वजा को लेकर, भाई! बढ़ पाएगा कौन?
कौन करेगा, प्राण दान दे, नूतन युग आह्वान!
दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे निर्माण?

❖❖❖

राष्ट्र की बाह्यन्तर सुरक्षा

–देवनारायण भारद्वाज

य यत्परो नान्तरऽआदघर्षद्द वृषणवस्। दुःशङ्सो मर्त्यो रिपुः॥ यजु 20:52॥

हे जन गण मन शासक वृषान।
हो सावधान! हो सावधान॥

सम्पूर्णता प्रजा आरक्ष आप।
पुरुषार्थ पोषण दक्ष आप॥

बाहर भीतर के सकल शत्रु।
सुन शब्द आपके जायें कांप॥

पा जाएं नागरिक षवरित्राण।
हो सावधान! हो सावधान॥

तेरी सर्वोदय शिक्षा में।
सेनापति भी संरक्षा में।
सर्वत्र समुन्नति सम्मति हो,
सद्स्नेह और सद् इच्छा में।

रख स्नेह सन्तुलन स्वाभिमान।
हो सावधान! हो सावधान॥

हो दुराचार दुष्कर्मी हों।
द्रोही-लोभी भयचर्मी हों।
बाहर के अथवा भीतर के,
जो शत्रु सभी हठधर्मी हों।

दो उन पर अपना बाण-तान।
हो सावधान! हो सावधान॥

(–'वरेण्यम्', अवन्तिका प्रथम रामघाट मार्ग, अलीगढ़)

भाग-7 : सातवाँ नियम

आर्य समाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या

—स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या

गतांक से आगे—

सातवाँ नियम—सबसे प्रीतिपूर्व्वक धर्म्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

अर्थ—जो मनुष्य संसार का उपकार करना छठे नियम से स्वीकार कर चुका है उसको फिर संसार के साथ कैसे वर्त्तना चाहिए वह इस नियम में आदेश किया गया है, इस नियम की हिन्दी पुरानी चाल की है अर्थात् उसमें **धर्मानुसार** और **यथायोग्य** शब्दों के बीच में "**और**" शब्द छिपा हुआ है, और इसी से इसके अर्थ करने में लोग कुछ गड़बड़ किया करते हैं, परन्तु जब व्याकरण के अनुसार वर्त्तमान काल की चाल से हमारा निर्देश किया हुआ "**और**" शब्द का अर्थ करने का समय लक्ष्य कर लिया जाए तो उसकी भाषा का क्रम स्पष्ट हो जाता है, तदनन्तर समझना चाहिए कि उसमें "सबसे" संसार अर्थात् संसार भर के मनुष्य मात्र से अभिप्राय है चाहे वे किसी भी जाति आदि के क्यों न हों, और उनसे तीन प्रकार के बर्त्ताव रखने का आदेश किया गया है। अर्थात्......

1. प्रीतिपूर्वक, 2. धर्मानुसार और 3. यथायोग्य।

इनमें से जो पहिला **प्रीतिपूर्वक** नामक प्रकार है उसके विषय में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह हम भले प्रकार जानते हैं कि जिसे हम संस्कृत में प्रेम और अरबी तथा फारसी में इश्क अथवा मुहब्बत और अंग्रेजी में Love लव कहते हैं। उसी का नाम प्रीति है, और उसके विषय में जो अब तक देश-देशान्तर और द्वीप दीपान्तर में अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी भाषाओं में लिखा पढ़ा है उसके पढ़ने से निश्चित होता है कि **वह एक अद्भुत, अपूर्व और अमूल्य वस्तु है कि जिससे अनेक फुटकर भूत एक समूह रूप से जगत् में विद्यमान रहते और सुख भोग करते हैं और जहां वह नहीं रहती वहां उसका अभाव फूट कहलाती है,** और यह वह परम नष्ट वस्तु है कि जिसने बड़े-बड़े प्रतापी राज्यों तक को छिन्न-भिन्न और नष्ट-भ्रष्ट करके हीन और दीन बना दिए हैं, तथा उसके और उसके अभाव के चमत्कार जो किसी को देखने हों तो वह उनको आप करके तत्काल फल देख सकता है, अतएव इस सब नियम में इस अमूल्य वस्तु को धारण करने का आदेश किया गया है, **जब हम सब के साथ प्रीतिपूर्वक वर्तेंगे तब वे भी हमारे साथ वैसे ही व्यवहार करेंगे,** और यह तो कदापि सम्भव नहीं है कि हम तो अन्य मनुष्य को मनुष्य ही न समझें—वरन् अपने को अनेक गुण सम्पन्न और अन्य को अनेक अवगुण सम्पन्न समझ कर हकी ही समझें और वे हम से एक ओर से परम प्रीतिपर्वूक व्यवहार ही किया करें।

कितने अपने ही बड़ों को, सत्याचारी और अन्य को बड़े ही मिथ्याचारी समझ कर कहा करते हैं कि हम अप्रियाचरण करते हैं वह परम युक्त है परन्तु उनको श्री मनुजी महाराज का यह वचन सदैव ध्यान में रखना चाहिए—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एश धर्मः सनातनः॥
भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद् भद्रमित्येव वावदेत्।
शष्कवैरं विवादं च न कुर्य्यात्केनचित्सह॥

यदि हम यह मान भी लें कि सत्याचारी वास्तव में सत्य पर ही आरूढ़ है और मिथ्याचारी भूल पर है परन्तु यह तथापि असंगत है कि वह भ्रान्त पुरुष के साथ अप्रियाचरण ही करे, **अनुभव से देखा गया है कि उक्त भ्रान्त पुरुष के साथ सदैव प्रियाचरण करने से तो कालान्तर में कुछ अच्छा फल निकला है और निकलता भी है। परन्तु अप्रियाचरण से तो सदैव वैर के बढ़ने और अनिष्ट फल प्राप्त होने के सिवाय और कुछ सार नहीं निकलता है।**

अतएव, मानना चाहिए कि प्रत्येक आर्य को आपस में और मनुष्य मात्र के साथ अपनी ओर से तो जहां तक सम्भव हो वहां तक परम प्रीति पूर्वक ही व्यवहार रखना चाहिए, और जैसे ऊपर कहा हुआ श्री मनुजी महाराज का वचन सदा ध्यान में रखना उचित कहा है। वैसे ही **महाभारत में कहा हुआ आर्यशील का एक यह लक्षण भी सदैव स्मरण रखना चाहिए**

कि जिससे कोई भी आर्य अपने शील से कदापि च्युत नहीं हो सके–

न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तं न दर्पमारोहति नास्तमेति।
न दुर्गतोऽस्मीति करोत्कार्यं तमार्यशीलं परमाहुरार्याः॥
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः।
दत्वा न पश्चात् कुरुते नुतापं स कथ्यते सत्पुरुषार्यशीलः॥

इन दोनों वचनों का निदिर्ध्यान करने से थोड़े ही काल में हमको स्वतः अनुभव होने लगेगा कि हमारे अन्तःकरण में कैसा परम प्रेम का एक प्रवाह बहने लगता है।

इसके अनन्तर हम को **धर्मानुसार व्यवहार** करने का आदेश किया गया है, उसका यह अभिप्राय नहीं है कि हम समाजस्थों के साथ तो प्रीतिपूर्वक वा जितना वह इस धर्म को मानते हैं उसके अनुसार ही व्यवहार रखें अथवा अन्य धर्मावलम्बियों के साथ उनके वैधर्म्य के कारण से सदा विरोध ही किया करें, किन्तु यह अभिप्राय है कि **धर्मानुसार शब्द का ठीक-ठीक अर्थ पांचवें नियम में यह स्पष्ट किया हुआ है कि "सत्य और असत्य को विचार कर।"**

इससे यह सिद्ध होता है कि सत्यासत्य के विवेकपूर्वक अर्थात् जो भले मनुष्य है उनके साथ वैसा और बुरों के साथ वैसा व्यवहार करें। **इसका भी यह अभिप्राय नहीं है कि बदमाश के साथ हम बदमाशी करें, परन्तु यह है कि बुरे की बुराई से पृथक् रहें और प्रयत्न करते रहें कि वह किसी प्रकार से अपनी बुराई को त्याग दे और भला हो जाए।**

क्योंकि, जैसे हमारा कोई निजी भाई अथवा बेटा जो कदाचित् बदमाश होता है उसमें भी हमारी भाईपने वा बेटापने की प्रीति तो यथावत् स्थिर रहती है। परन्तु उसकी बुराई का मन में शोक और उसको वह किसी प्रकार से छोड़ दे इसका सदा चितवन और प्रयत्न बना रहता है; वैसे ही **संसार भर के बुरे मनुष्यों के प्रति हमारी ऐसी ही शुद्ध भावना सदैव बनी रहनी चाहिए,** जब कि हम ऐसी शुद्ध भावना से सम्पन्न हो जाएंगे तब हम अपने को आप ही धन्य मानेंगे।

अब रहा <u>तीसरा प्रकार</u> **"यथायोग्य"** वह सम्बन्ध का सूचक है, और वह अनेक सम्बन्ध को भले प्रकार ज्ञात हैं जैसे राजा-प्रजा, स्वामी-सेवक, गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, बन्धु-बन्धु, इष्ट-मित्र, वृद्ध-बालक, हाकिम-महकूम, और अफसर-मातहत आदि। यदि हम प्रत्येक अपने-अपने पद के अनुसार अर्थात् **यथायोग्य रीति से संसार भर के मनुष्य मात्र से व्यवहार करें तो कदापि विरोध नहीं उत्पन्न होगा।** किन्तु जब मनुष्य अपनी औकात से बढ़कर हपट्टा भरता है तब ही अनेक अड़चनें उपस्थित होती है, <u>निदान</u>–अपने-अपने पद और अधिकारादि के अनुसार वर्तना यथायोग्य कहलाता है।

वाह क्या कहना है! कि इस नियम के आदेश करने वाले पुरुष कैसे नेक-नियत और संसार भर का भला चाहने वाले और सब में शान्ति फैलाने वाले थे कि कुछ प्रशंसा नहीं कर सकते हैं। वैसे ही उनकी बुद्धिमत्ता की भी क्या प्रशंसा करें कि संसार भर के मनुष्य मात्र के परस्पर के व्यवहार को इन तीन प्रकारों के उत्तम बन्धन में कैसी सुन्दरता से बांध दिए हैं कि कोई शंका ही उत्पन्न नहीं हो सकती है और न उसके अनुसार चलने में कुछ अड़चन पड़ती है, और जो मनुष्य उनमें एक को भी भले प्रकार सिद्ध कर ले तों निःसन्देह वह एक बड़ा भद्र पुरुष हो सकता है, भले प्रकार ध्यान देने से ज्ञात होगा कि सामाजिक उद्देश्यों के अनुसार हर तरह की कामयाबी अर्थात् सफलता प्राप्त करने का बड़ा ही आधार इस नियम पर है, जो हम इसको भली प्रकार अमल में ले आवेंगे तो सर्व प्रकार की सिद्धियें प्राप्त होने में कुछ सन्देह ही नहीं है, **हे प्रभु! वैसा इस नियम के आदेश करने वाले महर्षि का अभिप्राय है, वैसा ही तू उसका प्रभाव हमारे अंतःकरण में प्रकाश कर!**

इत्योम्। ❐ ❐ ❐

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –सम्पादक

महाशिवरात्रि पर हुआ महर्षि दयानन्द को बोध

—प्रस्तुतिः दिव्या आर्य

तीव्र बुद्धि बालक मूलशंकर को एक बार जो पढ़ाया गया वह भूलता नहीं था। आठवें वर्ष में प्रवेश करते ही व्याकरण के साथ-साथ 'रघुवंश' तथा हितोपदेश' की पढ़ाई शुरू की। शैवमत में विश्वास रखने वाले कुल में उत्पन्न होने के कारण शिव सहस्रनाम महिम्न:स्तोत्र तथा अन्य स्तोत्र कण्ठस्थ कराए गए। **यज्ञोपवीत की विधि समारोह पूर्वक सम्पन्न की गई।** यज्ञोपवीत धारण करते ही वेदाध्ययन का कार्य शुरू किया गया। 'सामवेदी औचित्य कुल में पैदा हुए बालक मूलशंकर को '**सामवेद**' पढ़ाया जाने लगा। **मूलशंकर भी छोटी अवस्था में सामवेद का सुन्दर पाठ करने लगे।**

चौदह वर्ष की अवस्था में '**यजुर्वेद**' भी कण्ठस्थ कर लिया। मेधावी मूलशंकर ने निरूक्त, निघण्टु, पूर्व मीमांसा और कर्मकाण्ड के ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। **चारों ओर बालक मूलशंकर की प्रतिभा और पाण्डित्य की चर्चा होने लगी।** हर प्रतिष्ठित परिवार चाहता था कि उनकी बेटी का सम्बन्ध मूलशंकर जैसे गुणी युवक से हो। सम्वत् 1874 की शिवरात्रि के महापर्व पर परिवार में हर वर्ष की भान्ति उपवास और रात्रि में जागरण का कार्यक्रम रखा गया। बालक मूलशंकर को भी पिता ने उपवास रखने के लिए कहा। बालक मूलशंकर ने पिता की आज्ञा का पालन किया। शहर के बाहर डेमी नदी के रमणीय किनारे पर शिवमन्दिर में रात्रि-जागरण का कार्यक्रम रखा गया। मन्दिर के घण्टे से आकाश गूंज रहा था। असंख्य स्त्री-पुरुष मन्दिर में आ जा रहे थे। बालक मूलशंकर ने पिता के साथ शिव मन्दिर में प्रवेश किया।

पूर्ण रात्रि का जागरण करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं—दर्शनों की लालसा लेकर दृढ़ संकल्प से मूलशंकर शिवलिंग के सामने बैठ गए। ज्यों-ज्यों रात्रि बढ़ती गई त्यों-त्यों मन्दिर में शान्ति का साम्राज्य छाने लगा। शोर-शराबा बन्द हो गया। एक-दो बजते ही लगभग सब भक्तगण निद्रा देवी के वशीभूत हो गए। घण्टे-घड़ियालों के स्थान पर व्यक्तियों के खर्राटों की आवाजें आने लगीं। पुजारी भी सो गए। **जाग रहे थे एकमात्र सच्चे शिव के दर्शनों के चाहक जिज्ञासु बालक मूलशंकर।** आंखों पर पानी के छींटे मारते रहे, और निद्रा देवी को पास फटकने नहीं दिया। **रात्रि के तीसरे पहर वे क्या देखते हैं कि कुछ चूहे शिवलिंग पर चढ़ाए गए भोग को खा रहे हैं। उछल-कूद करके उसे मल-मूत्र द्वारा गन्दा कर रहे हैं।** नैवेद्य का बड़ी शान से सफाया किया जा रहा था।

यह दृश्य देखकर बालक मूलशंकर का दिमाग ठनक गया। उन्होंने अपने पिता से सुन रखा था कि शंकर त्रिशूलधारी हैं, कैलाश बिहारी हैं, तीनों लोकों के ज्ञाता हैं। राक्षसों का दलन और संहार करने वाले हैं, वरदान देते हैं और शाप देकर भस्मीभूत कर देते हैं। डमरू बजाते हैं, ताण्डव नृत्य करते हैं। सांपों को गले में माला के सामान डाले फिरते हैं। ऐसे शक्तिशाली महादेव का ये साधारण चूहे मल-मूत्र करके अपमान कर रहे हैं तथा उन पर चढ़ाया गया भोग खा रहे हैं। फिर भी वे उन्हें हटा नहीं पा रहे हैं। क्या यही सच्चा शिव है जिसकी महिमा प्रायः पिताजी मुझे सुनाया करते हैं? यह वही शिव नहीं हो सकते।

जिज्ञासु बालक ने अपने पिता को जगाया। चूहों की लीला उन्हें दिखाकर पूछने लगे, 'क्या यह वही शिव हैं जिसकी चर्चा आप नित्य मुझसे किया करते हैं? यदि यही वह सच्चा शिव है तो इन चूहों को हटाने में क्यों असमर्थ हैं?'

पिता के उत्तर से पुत्र को सन्तोष नहीं हुआ।

'सच्चा शिव कैलाश में रहता है तो मैं उसके दर्शन करूंगा। **इस पाषाण मूर्ति से मेरा क्या सम्बन्ध जो अपना अपमान करने वाले को भी हटाने में असमर्थ है। यह मेरा क्या कल्याण करेगा?' इस प्रकार बालक मूलशंकर के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न खड़े हो गए।** पाषाण-पूजा के प्रति मन से श्रद्धा उठ गई। वे मन्दिर से उसी समय घर चले गए। ममतामयी मां से खाना मांगकर खा लिया। उपवास तोड़ दिया। पिता को अच्छा नहीं लगा। पुत्र को पत्थरों की पूजा में विश्वास नहीं रहा। चूहों की इस घटना ने मूलशंकर के मन-मस्तक में तूफान खड़ा कर दिया। वे सच्चे शिव की खोज करने के लिए कैलाश जाने की योजनाएं बनाने लगे। **यह शिवरात्रि मूलशंकर के लिए 'बोधरात्रि' बन गई।** क्योंकि उसी दिन मूलशंकर को सच्चे शिव का बोध प्राप्त हुआ था। उनका तीसरा नेत्र खुल गया। सच्चे शिव को पाने की प्रबल इच्छा मन में जागृत हुई। ●●●

सत्ता और संपत्ति पर दयानन्द का दृष्टिकोण

'लड़ाई गरीबी, अशिक्षा और असमानता से है'

–कैलाश सत्यार्थी

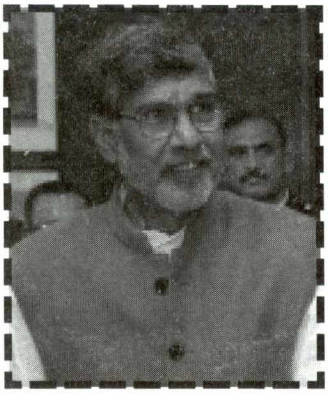

आर्यसमाजी इतिहासकारों का बड़ा वर्ग इस नतीजे पर पहुंचा है कि महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस भाद्रपद्र शुक्ला नवमी है। **दयानन्द के अनुयायी इस अवसर पर जगह-जगह समारोह मनाकर इस स्थापित सत्य को और जोर से प्रचारित करेंगे कि वह एक, महान समाजसुधारक थे, वेदों के प्रकाण्ड पंडित थे, योगी थे।** कुल मिलाकर वह सब कुछ थे जो महान से महान पुरुष हो सकता है। **इस शोर शराबे में भूल से भी जो बात दयानन्द के बारे में नहीं कहीं जाएगी, वह है- सत्ता के केन्द्रीकरण और संपत्ति के स्वामित्व के खिलाफ उनके विचार।**

राजनीतिक सत्ता के केन्द्रीकरण, पूंजीवाद, सामाजिक, ऊंच-नीच, आदमी-औरत की गैरबराबरी, भाग्यवाद, धार्मिक अंधविश्वास आदि पर टिकी समाज व्यवस्था की मूर्ति के मंजक एक क्रान्तिदृष्टा फकीर को **महज** मूर्तिपूजा विरोधी, विभिन्न सम्प्रदायों के खण्डनकारी और हिन्दू सम्प्रदाय के एक जंग की तरह प्रचारित करके **दयानन्द का सारा मिशन व्यवस्थापोषक बताया जा चुका है।**

आज हिन्दू समाज के झण्डाबरदार बन चुके कितने आर्यसमाजी यह ऐतिहासिक तथ्य लोगों को बताते हैं कि आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में एक मुसलमान सज्जन रहमतुल्ला खां सोनावाला के घर पर हुई थी। बम्बई के पहले आर्यसमाज कांकड़वाड़ी में दानियों की सूची के नामपट्ट पर पहला नाम उन्हीं का हैं। मृत्यु होने तक दयानन्द के निजी चिकित्सक डॉ. खां थे, और मृत्युशैया पर पड़े स्वामीजी ने ऐसे **'शुभचिन्तकों'** को लताड़ा जो मुसलमान होने के कारण चिकित्सक पर सन्देह कर रहे थे। ईसाईयों से उनके रिश्ते इतने अच्छे थे कि **एनी बेसेंट अपनी थियोसोफिकल सोसायटी का विलय तक आर्यसमाज में करने वाली थीं,** लेकिन किसी कारण यह टल गया। पंजाब में आर्यसमाज की तो बागडोर ही सिख ने सम्भाली थी। **लोग जानते है कि शहीद भगत सिंह के दादा-पिता आदि सिख होते हुए भी कट्टर आर्यसमाजी थे।**

दयानन्द राजनैतिक या आर्थिक विचारक नहीं थे। लेकिन **जब देश दिमाग से भी गुलाम हो चला था, तब दयानन्द ने हिन्दी में 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' शब्द गढ़े बाद में तिलक, गांधीजी तथा दूसरों ने इन दोनों शब्दों का इस्तेमाल किया न इसी के अनुरूप भारतीय समाज व्यवस्था की व्याख्या की।**

> ***लोकतन्त्र का प्रयास तो दूर, उसकी कोई सांगोपांग व्याख्या तक जिन दिनों देश में उपलब्ध नहीं थी, तब दयानन्द निर्वाचन पद्धति तथा विकेन्द्रित सत्ता पर आधारित राज्य व्यवस्था की बातें लिख रहे थे! जब मार्क्स और एंजेल्स की 'कैपीटल्स' लिखी नहीं गई थी, तब पूर्व में बैठा वह मनीषी सम्पत्ति के स्वामित्व के पैतृक अधिकार को नकार चुका था। किन्तु आज कितने लोग यह बात जानते है, अथवा उस पर बहस करने को राजी हैं?***

दयानन्द के विचार से देश के पढ़े-लिखे चेतनाशील तथा राष्ट्रवादियों की एक बड़ी जमात प्रभावित हुई। **डॉक्टर पट्टाभि सीतारामैया** ने अपने कांग्रेस के इतिहास में लिखा है **'असहयोग आन्दोलन'** में भाग लेकर जेल जाने वालों में **अस्सी प्रतिशत से अधिक या तो आर्यसमाजी थे अथवा स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रेरित।' गांधी, महर्षि अरविन्द, विवेकानन्द, सुभाषचंद्र बोस, सर सैयद अहमद खां आदि ने कई बार दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन से प्रेरणा लेना स्वीकारा है।**

गोरी सरकार इस तथ्य से नावाकिफ नहीं थी। अंग्रेजों के षड्यन्त्र के तहत **सन् 1900 के आसपास आर्यसमाज में रायबहादुरों, सरों, रायसाहबों तथा सम्पन्न लोगों की भरमार शुरू की गई। वे सरकारपरस्त लोग थे जो धीरे-धीरे पूरे आर्यसमाज पर हावी हो गए। दयानन्द के चिन्तन का यह पक्ष पर्दे के पीछे धकेल दिया गया।** आज भी स्थिति यही है।

स्वामी दयानन्द ने समाज में सारी गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार तीन दुश्मनों को पहचाना। पहला जमाव, दूसरा अज्ञान और तीसरा अन्याय। इन्हें लोकसभा में गरीबी, अशिक्षा, और गुलामी-गैरबराबरी भी कह सकते हैं। अपनी संस्था के छठवें नियम में उन्होंने इसकी स्थापना का उद्देश्य लिखा– 'संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

शारीरिक उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बताया-अभाव को, आत्मिक उन्नति में-अज्ञान को, और सामाजिक उन्नति में-अन्याय को।

इनका क्रम भी महत्वपूर्ण है। **आत्मा ऊपर है किन्तु मनुष्य का मनुष्य होना उसके शरीर पर आधारित है। शरीर की जरूरतें पूरी किए बिना, उसके रखरखाव के बिना व उसकी उन्नति के बिना सारी मनुष्यता का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। रोटी, कपड़ा, रिहाईश तो चाहिए ही।**

दूसरी है आत्मिक उन्नति। शरीर महज एक साधन है उसकी उन्नति साधन को मजबूत करना है। किन्तु इसके साथ ही **आन्तरिक शुद्धता भी जरूरी है।** निजी नैतिकता के बिना सार्वजनिक नैतिकता नहीं आ सकती। **तीसरा** सार्वजनिक उन्नति है। शरीर और आत्मा का विकास यदि सिर्फ निजी दायरे की चीज बनी रह जाए तो भी समाज व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी। **इन दोनों से विकसित आदमी ही समाज के बाकी हिस्से पर नियन्त्रण करने लगेगा, दूसरे अर्थों में तानाशाह हो जाएगा।** अत: सामाजिक उन्नति के बिना निजी उन्नति की कोई उपादेयता नहीं। इसलिए **समाज की तरक्की में हर आदमी की भागीदारी तय होनी चाहिए।**

गरीबी, अशिक्षा और गुलामी गैर-बराबरी के खिलाफ लड़ाई का ढंग उन्होंने **स्वदेशी समाजव्यवस्था में खोजा।** अलग-अलग रूचि, योग्यता तथा क्षमता के हिसाब से तीन तरह की जिम्मेदारियां सभी लोग सम्भालेंगे। **कुछ लोग अज्ञान व अशिक्षा के विरुद्ध जेहाद चलाएंगे, कुछ गरीबी और अभाव के विरुद्ध लड़ेंगे और कुछ विषमता - अन्याय के विरुद्ध।** बाकी लोग जो प्राकृतिक कारणों से स्वतन्त्र रूप से इन तीनों के लिए अक्षम हो, वे अपनी रुचियों के अनुसार तीनों में से किसी में सहायता के काम में लगें। यदि अनुभव के साथ वे अपनी क्षमताएं बढ़ा लेते हैं तो उन्हें इस कार्य वर्ग की पहली पंक्ति में शामिल किया जाए।

इस तरह समाज में काम के हिसाब से चार हिस्से हो गए। **शिक्षक, उत्पादक, व्यवस्थापक और सहायक।** चूंकि हरेक व्यक्ति का काम उसकी निजी सामाजिक भूमिका से जुड़ा है, अत: **कार्यक्षेत्र के पैतृक उत्तराधिकार का प्रश्न ही नहीं उठता।**

किसी खास काम में लगे व्यक्ति की सन्तान की रुचि, योग्यता या क्षमता उसमें भी हो सकती है और किसी दूसरे काम में भी। यदि उसमें ये गुण हैं, तो भी उसे जो जिम्मेदारी मिलेगी, उसकी मात्रा चुने हुए विशेषज्ञों की समितियां तय करेंगी, पिता नहीं।

इस व्यवस्था में जहां तक सम्पत्ति के मालिकाना हक का सवाल है, बड़ा साफ है। **शिक्षण के काम में जुड़े वर्ग का उत्पादन से कोई सरोकार नहीं। उसके रहन-सहन, गुजर-बसर का इंतजाम समाज करेगा।** उसकी अपनी कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। **व्यवस्थापक वर्ग** वितरण व्यवस्था की देखरेख, समाज में पैदा होने वाली गड़बड़ियों, अपराधों आदि पर नियन्त्रण करेगा, और साथ ही सीमाओं की सुरक्षा का जिम्मा उठाएगा। **शिक्षक की तरह उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी समाज की होगी।** ठीक उन्हीं दो की तरह **सहायक वर्ग की** जो वैसे भी संख्या के हिसाब से बहुत कम होगा, **आजीविका का प्रबन्ध समाज करेगा।**

अब सिर्फ **चौथे तबके के वे लोग जो उत्पादन-साधनों की जितनी जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसी का संचालन और नियन्त्रण करेंगे, एक तरह से इसके ट्रस्टी होंगे।** इस व्यवस्था में गैरबराबरी का पूरी तरह निषेध है, परन्तु **बनावटी बराबरी की जोर जबरदस्ती की गुंजाईश भी नहीं है। पूरी समाज व्यवस्था विकेंद्रित है, जिसमें विकास और स्पर्धा के अवसर भी समान हैं।** उत्पादन, शिक्षण और व्यवस्था-सम्बन्धी क्षेत्र में हरेक को उसकी योग्यता व क्षमता के हिसाब से जिम्मेदारियां मिलेंगी। उदाहरण के लिए एक ऐसी योग्यता के चार आदमियों को मिलाकर दो हजार रुपए की एक उत्पादक इकाई सौंपी गई है, तो उनसे दुगुनी योग्यता व क्षमता वाले चार व्यक्तियों को चार हजार रुपए की इकाई सौंपी जाएगी। अपने उत्पादन के अनुपात का एक निश्चित हिस्सा वे अपने ऊपर खर्च कर सकेंगे। बाकी समाज के अधीन रहेगा। लेकिन उल्लेखनीय है कि अधिक से अधिक और कम से कम योग्यता के बीच का फर्क बहुत कम रहेगा क्योंकि सभी को एक जैसे शिक्षण और प्रशिक्षण से गुजरना पड़ेगा। **यहां सवाल उठ सकता है कि इस तरह सभी लोग अपनी सम्पत्तियां अर्जित क्यों नहीं करेंगे?**

उनके मरने के बाद उनकी सम्पत्ति का क्या होगा?

कब से कब तक सम्पत्ति उनके पास रहेगी, आदि-आदि। इनके **जवाब के लिए हरेक आदमी की जिन्दगी को भी चार हिस्सों में बांटा गया है।**

पहला हिस्सा, यानी उम्र के शुरू के 10-15 साल हरेक का अध्ययन और प्रशिक्षण का समय रहेगा। **सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से सात-आठ साल की उम्र में ऐसे विद्यालयों में दाखिल होना पड़ेगा जिनमें उनके रहने, खाने-पीने, तथा पढ़ने की व्यवस्था रहेगी।** स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ **'सत्यार्थ प्रकाश'** के **तीसरे समुल्लास में बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा** 'सबको एक जैसे वस्त्र, खानपान, आसन दिए जाएं, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान। सभी को तपस्वी (**परिश्रमी**) होना चाहिए।'

इस तरह के समतापूर्ण वातावरण में अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार हरेक व्यक्ति को अनिवार्य शिक्षा लेनी पड़ेगी। **इस दौरान समाज इनका खर्च वहन करेगा।** इस अवधि के बाद वे अपनी अभिरूचि तथा पसंद के हिसाब से विवाह कर सकेंगे। हालांकि यह हैरत में डालने वाली बात है। लेकिन **लगभग डेढ़ सौ साल पहले दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के ही चौथे समुल्लास में स्वयं प्रश्न पूछा 'विवाह माता-पिता के अधीन होना चाहिए या लड़के-लड़की के?' और उत्तर दिया, 'लड़के- लड़की के अधीन ही विवाह होना उत्तम है।** जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें, तो लड़के-लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिए।'

यहां यह नहीं भूलना चाहिए कि पढ़ाई या प्रशिक्षण के मामले में लड़के-लड़की के बीच कतई कोई फर्क नहीं रखा गया। इस तरह की समान योग्यता वाले पति पत्नी-उत्पादन, शिक्षण या प्रबन्ध के कार्य क्षेत्रों में से किसी एक में, साथ-साथ प्रवेश कर सकेंगे।

यह सारा काम कोई भी व्यक्ति अपनी उम्र से ज्यादा से ज्यादा अगले पच्चीस वर्षों तक करके मुक्त हो जाएगा। उम्र के तीसरे हिस्से में, जो कार्यक्षेत्र उसे सौंपा गया था, वहां से निकलकर, वह अपने अनुभवों के लेखन संकलन, सम्पादन और अपनी आध्यात्मिक उन्नति में कुछ साल गुजारेगा अथवा सुविधानुसार प्रशिक्षण आदि में मार्गदर्शन का काम करेगा। **आयु के अन्तिम तथा अन्य भाग में व्यक्ति अपने परिवार तथा अन्य घरेलु बातों से छुटकारा लेकर पूरी तरह सामाजिक जागृति, नैतिक मूल्यों की स्थापना और लोकशिक्षण के अभियान में जुट जाएगा।**

कुल मिलाकर **हरेक आदमी की उम्र चार हिस्सों में बंटी होगी।** इनमें से सिर्फ एक हिस्से में वह उत्पादन, शिक्षण, व्यवस्था अथवा सहायता में से कोई एक काम कर सकेगा। जीवन के बाकी हिस्से सभी के लगभग एक जैसे रहेंगे। ऐसे समाज में न जाति का सवाल है, और न सम्पत्ति के पैतृक स्वामित्व का।

अब सवाल यह है कि कार्यक्षेत्र व जिम्मेदारियों का विवरण, उत्पादन के साधनों का वितरण, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय तथा सभी प्रकार की आन्तरिक व्यवस्था कौन और कैसे करेगा? समाज की छोटी-से-छोटी ईकाई जो गांव हो सकती है, अपना जनपद बनाएगी। सभी मिलकर जनपद के संचालन के लिए कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का चुनाव करेंगे। **यही जनपद अपने इलाके की पूरी आर्थिक व्यवस्था चलाएगा।** अन्न, दूध, भू-खनिज और वनस्पति का सामाजिक उपयोग तथा वितरण का काम और सभी आन्तरिक प्रबन्ध सम्भालेगा। **सामाजिक सत्ता की यही विकेन्द्रित इकाई 'जनपद' उत्पादन ईकाई की स्वामी होगी।**

अथर्ववेद का हवाला देकर **'सत्यार्थ प्रकाश'** के छठवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने लिखा है, 'एक स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न रहना चाहिए किन्तु **राजा जो सभापति है, सभा के अधीन, उसके अधीन सभा राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।** यदि ऐसा न करोगे तो जो प्रजा में स्वतन्त्र स्वाधीन राज वर्ग होंगे, वे राज्य में प्रवेश करके प्रजा का न्याय किया करेंगे। इसलिए अकेला राजा स्वाधीन उन्मत हो के प्रजा का नाशक होता है, अर्थात वह राजा प्रजा को खाए जाता है। इसलिए केवल किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। इस विकेन्द्रित व्यवस्था में आगे और भी स्पष्ट किया गया है **'जनता सभा का निर्वाचन करेगी, सभापति चुनेगी, सभापति मिलकर राजसभा को चुनेंगे और राजसभा नीति निधार्रिक सभा होगी।'** इस व्यवस्था में पूरी तरह कोशिश की गई है कहीं किसी भी स्तर पर कोई आदमी तानाशाह न बनने पाए।

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र के संचालन और जनपदों के संचालन के लिए अलग-अलग नियम बनाने की बात भी 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखी है। 'पृथक जाति (**सामाजिक**) नियम और राज (**राष्ट्रीय**) नियम होने चाहिए।' **स्वामी दयानन्द के बीज रूप में विकेन्द्रित समाज व्यवस्था की बात इस तरह की है।**

❖❖❖

महर्षि दयानन्द का व्यक्तिगत पक्ष

–वेदाचार्य रघुवीर वेदालंकार

महर्षि दयानन्द अन्य महापुरुषों की तुलना में विशेष स्थान रखते हैं। स्वामी जी **स्वराज्य के प्रथम उद्‌धोबक हैं। प्रखर राष्ट्र भक्त, समाज सुधारक, स्त्री-शूद्रों के त्राता, वेदों के अप्रतिम विद्वान, हिन्दी के उपासक आदि-आदि अनेक स्वरूपों वाले हैं।** इनकी चर्चा प्राय: यत्र-तत्र होती ही रहती है। यहां हम इनमें से किसी का भी उल्लेख न करके स्वामी जी के व्यक्तिगत पक्ष का अवलोकन करते हैं।

जिज्ञासु–स्वामी जी मूलत: एक जिज्ञासु व्यक्ति हैं। अपने चाचाजी तथा बहन की मृत्यु पर मृत्युविषयक जिज्ञासा उनके मन में उठती है तथा शिवरात्रि पर शिवालय में जागरण करते हुए सच्चे शिव विषयक जिज्ञासा भी बालक मूलशंकर के मन में उठ गयी थी जबकि इससे पहले शिवभक्त जनता तथा पुजारियों ने कभी भी इस पर ध्यान नहीं दिया था। **जो जिज्ञासु है, वह सत्य की खोज करेगा तथा सत्य को प्राप्त करेगा। मूलशंकर ने घर त्याग करके यही मार्ग अपनाया तथा सच्चे शिव की खोज में घर छोड़ दिया।** जिज्ञासा ही व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाती है। सिद्धार्थ भी मृत्यु तथा व्याधि की जिज्ञासा में घर छोड़कर महात्मा बुद्ध बने थे। वेद ऐसे व्यक्तियों के लिए ही कहता है– **'यो जागाद: तमृ्य: कामयन्ते'** जो जागता है, सावधान रहता है, उसे ही स्तुतियां प्राप्त होती हैं।

ब्रह्मचारी–मूलशंकर ब्रह्मचारी है तथा इसी निष्कलंक ब्रह्मधर्म का पालन उसने दयानन्द बनकर भी आजीवन किया। इस प्रकार के ब्रह्मचारी सभी नहीं बन सकते। इस विषय में स्वामी जी इतने सतर्क थे कि ध्यान की अवस्था में बैठे हुए जब एक स्त्री ने प्रणाम करते समय उनके चरणों को छू लिया तो स्वामी जी इसके प्रायश्चित स्वरूप तीन दिन तक निराहार रहकर ध्यान लगाते रहे। यही कारण था कि **किसी के पूछने पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मुझे इतना अवकाश ही नहीं है कि काम मेरे ऊपर आक्रमण करे। स्वामी जी ने कभी भी महिलाओं से चरणस्पर्श नहीं कराए।**

आदर्श बह्मचारी ही ऐसा कर सकता है, आजकल के धर्मगुरुओं की तरह नहीं कि जो महिलाओं से तन-मन-धन सभी कुछ गुरु के अर्पण करने को कहते हैं तथा रात-दिन उनसे घिरे रहते हैं। आसाराम जैसे सन्त तो स्त्री परिचारिका की मांग भी करते हैं।

योगी–इसके पश्चात् स्वामी जी का स्वरूप एक योगी का है। **वे घंटों समाधि लगाते हैं। उपदेशादि करते हुए भी उन्होंने अपने इस कार्य को नहीं छोड़ा।** मुंशीराम भी जानना चाहते थे कि स्वामी ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर प्रतिदिन कहां जाते हैं। उन्होंने देखा किसी वृक्ष के नीचे स्वामी जी ध्यानावस्थित हो गए। स्वामी जी को समाधि सिद्ध थी, इसका पता उनके इस उत्तर से लगता है कि **'मैं चाहूं तो अपनी समस्त चेतना को शरीर के किसी एक ही स्थान पर केन्द्रित कर सकता हूं। इससे शेष शरीर निर्जीव हो जाएगा तथा परकाया प्रवेश इससे एक कदम आगे की ही बात है।"** इससे पता चलता है कि स्वामी जी योग विद्या में पूर्णत: निष्णात थे। उन्होंने जन सामान्य के लिए भी प्राणायाम तथा ध्यान का विधान अपने ग्रन्थों में किया है।

तपस्वी–योगी तथा ब्रह्मचारी के लिए तपस्वी होना अनिवार्य है। कोई भी विलासी तथा आराम पसन्द व्यक्ति ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। स्वामी जी ने अपनी तपस्या का स्वयं वर्णन किया है कि शीत ऋतु में भी ठण्डी बालू पर आसन जमाए रखना उनके लिए साधारण कार्य था। **एक बार गंगा किनारे शीत ऋतु में रात्रि में स्वामी जी को ठण्डी बालू पर आसन जमाए देखकर अंग्रेज दम्पती ने दांतो तले अंगुली दबा ली थी।** शीत-उष्ण, भूख-प्यास आदि के बाह्य द्वन्द्व तथा मानसिक द्वन्द्वों पर विजय पाना ही तपस्या है। स्वामी इसमें निष्णात थे। यही कारण है कि **उनका शरीर तपस्या तथा ब्रह्मचर्य के कारण ही अत्यन्त सुदृढ़ तथा बलशाली हो गया था। जिसका प्रदर्शन उन्होंने विक्रमसिंह की घोड़ों की बग्घी को पीछे से रोक कर किया था।** जिसे चाबुक मारने पर भी घोड़े आगे बढ़ने में समर्थ नहीं हो पा रहे थे। जब गुरू दण्डी जी ने उनके पैर में डण्डा मारा तो स्वामी जी स्वयं कहते हैं कि मेरे पैर तो लोहे की लाट के समान कठोर हैं।

सच्चे नि:सङ्ग साधु–इन गुणों के साथ-साथ दयानन्द सच्चे वीतराग साधु हैं। **सन्यासी के लिए लोकेषणा, पित्तेषणा तथा पुत्रेषणा का त्याग अनिवार्य है।** स्वामी जी इन तीनों ही ऐषणाओं से सर्वथा अछूते हैं। उनके समय भी सन्तो-महन्तों के बड़े-बड़े आश्रम, मठ आदि होते थे किन्तु क्या यह आश्चर्य नहीं है कि स्वामी जी ने अपने लिए एक छोटी सी कुटिया भी नहीं बनायी।

जब सुन्दरलाल जी ने स्वामी जी से कहा कि छपे हुए वेद भाष्य को कहीं रखने का प्रबन्ध करने कीजिए, तो स्वामी जी उत्तर देते हैं कि मेरा तो कोई घर नहीं है, जहां इसे रख सकूं। अपने घर को ही मेरा घर समझ कर अपने पास ही रखिए। **अपने लिए ही नहीं, अपने वेदभाष्य आदि के लिए भी स्वामी जी ने स्थान निर्माण नहीं किया।** इससे बढ़कर वीतरागता और क्या होगी? ऐसे निःस्वार्थ साधु के सम्बन्ध में यही श्लोक घटित होता है। **निर्मान मोहाजित सङ्दोषा अध्यात्म विद्या विनिवृत कायाः। द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुख-दुःख संज्ञैर्गच्छत्यमूढा पदमव्ययं तत्।**

अर्थात् मान, मोह तथा संग दोषों से रहित एवं अध्यात्म विद्या के द्वारा अपनी सांसारिक कामनाओं को समाप्त कर देने वाले, राग-द्वेष आदि तथा सुख-दुख रूपी द्वन्द्वों से मुक्त विद्वान परम पद को प्राप्त होते हैं।

मान सम्मान से सर्वथा दूर–राग-द्वेष, ईर्ष्या, मान सम्मान आदि द्वन्दों से रहित होना भी तप है। सच्चा संन्यासी लोकेषणा तथा मान सम्मान से सर्वथा अछूता रहता है। भयंकर से भयंकर अपमान भी उन्हें विचलित नहीं कर सकता। **काशी में शास्त्रार्थ के समय काशी नरेश, काशी के पण्डितों तथा गुण्डों ने मिलकर शोर मचा कर छल से दयानन्द की पराजय घोषित कर दी तो वह स्थितप्रज्ञ मुनि इससे जरा भी विचलित नहीं हुआ।** रात्रि में साधु जवाहरदास जी स्वामी जी के पास उनका हाल जानने पहुंचे तो स्वामी जी ने उस अभद्र घटना का जिक्र तक भी नहीं किया तथा प्रेमालाप करते रहे। जिससे जवाहरदास जी ने कहा कि आप तो **स्थितप्रज्ञ** योगी हैं। यही नहीं स्वामी जी का अपमान तो पता नहीं कितनी बार कहां-कहां हुआ किन्तु इससे वह महामुनि न तो कभी खिन्न हुआ तथा न ही उसने अपना मार्ग छोड़ा।

दयालु दयानन्द–दया करना किसी भी ईश्वर भक्त का प्रथम गुण है। दयानन्द में यह गुण इतने गहराई में था कि **विषदाता जगन्नाथ को भी अपने पास से धन देकर बोले कि नेपाल चले जाओ, अन्यथा राजा तुम्हें दण्ड देगा। ऐसा उदाहरण कहां मिल सकता है।** कठिन से कठिन संकटों में भी न घबराने वाला दयानन्द तब रो पड़ता है जब वह देखता है कि **एक स्त्री एक बच्चे का शव गंगा में बहाकर उसके ऊपर लिपटा कपड़ा भी वापस उतार लेती है। दयानन्द इस दृश्य को देखकर भारत की गरीबी पर रो पड़ता है।** स्वामी जी का अपकार करने वाले को सिपाही पकड़ कर जब उनके सामने लाते हैं तो स्वामी यह कह कर कि मैं संसार को कारागार में डलवाने नहीं अपितु मुक्त कराने आया हूं, उसे मुक्त करा देते हैं। यही है सच्चे साधु की क्षमाशीलता जो दयानन्द में थी।

सत्याग्रही–महर्षि सर्वदा सत्य के ग्रहण में तत्पर तथा आग्रही रहे। वे सत्य को धर्म मानते हैं तथा लिखते हैं कि **सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिएं।** सत्यान्वेषण के लिए स्वामी जी पूरे भारत वर्ष में सभी मतमतान्तरों में घूमे। लगभग **3000 ग्रन्थों का आलोकन करके उन्होंने वेद को ही सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा तथा सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने का नियम माना।**

निर्भय एवं ईश्वरभक्त–महर्षि परम ईश्वर भक्त एवं विश्वासी थे। इसके बल पर ही उन्होंने कभी कोई अंगरक्षक भी नहीं रखा। अंग्रेजों के द्वारा प्रस्तावित सुरक्षा को भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। ईश्वरभक्ति के आधार पर स्वामी जी सर्वदा सर्वत्र निर्भय रहे। उन पर तलवार से भी वार किए गए, गुण्डे मारने भी आए, तथापि स्वामी जी किसी से नहीं डरे। एक बार तो भरी सभा में गरज कर उन्होंने कहा कि 'वह सूरमा हमें दिखलाओ जो मेरी आत्मा का नाश कर सके। **दयानन्द को यदि तोप के मुंह से बांध कर पूछा जाएगा कि सत्य क्या है तो उसके मुख से वेद की श्रुति ही निकलेगी।' ऐसी निडरता कहां मिलेगी?**

दयानन्द समय के अनुसार बोलना जानते थे। उन्हें एक स्टेशन पर केवल कौपीन में टहलते देखकर एक अंग्रेज ने स्टेशन मास्टर से उन्हें एक ओर हटाने को कहा तो स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया कि कह दो यह साधु उस युग का है जब आदम के बाग में आदम और हव्वा नंगे घूमा करते थे। अंग्रेज चुप हो गया। किन्तु कौपीन मात्र में ही जन सभा में व्याख्यान देने पर जन केशवचन्द्र सेन ने उनसे जनसभाओं में वस्त्र धारण करने की प्रार्थना की तो स्वामी जी ने सहर्ष उसे स्वीकार कर लिया।

गुरुभक्ति–दयानन्द उच्च कोटि के गुरुभक्त तथा आज्ञाकारी थे। गुरु विरजानन्द जी के लिए स्वयं यमुना से पानी लाते थे। विद्या समाप्ति पर गुरुजी ने आर्ष विद्या का पुनरुद्धार करने का आदेश दिया तो स्वामी ने सिर झुका कर तुरन्त स्वीकार कर लिया। इस प्रकार

स्वामी जी का व्यक्तिगत पक्ष भी अति उन्नत तथा एक सच्चे साधु का है। **वस्तुतः वह एषणा रहित वीतराग साधु था।** जिसके विषय में भगवद् गीता के अनुसार यही कहा जा सकता है।

दु:खेष्वनुद्विग्नः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतराग भयक्रोधोविनत धीर्मुनिरुच्यते। अर्थात् दु:खों में सर्वथा उद्वेग रखने वाला तथा सुखों के प्रति स्पर्धा न रखने वाला, भय-क्रोध आदि से रहित व्यक्ति मुनि कहलाता है। दयानन्द इन विशेषणों के कारण सच्चे मुनि थे। **दयानन्द एक ऋषि भी थे।** ऋषि का सुप्रसिद्ध लक्षण '**ऋष्यो मन्त्रद्रष्टरः**' है। अर्थात् वेदमन्त्रों का साक्षात्कार करने वाला ही ऋषि होता है। दयानन्द वेदार्थ के सच्चे ज्ञाता होने के कारण ऋषि हैं।

महर्षि दयानन्द के ये व्यक्तिगत गुण उन्हें अन्य साधु-सन्तों की अपेक्षा बहुत ऊंचा उठा देते हैं। आज तो प्रायः आध्यात्मिक सन्त भी बड़े-बड़े आश्रमों, शिष्य-शिष्याओं तथा सांसारिक सर्वविधऐश्वर्य वाले होते हैं। उस समय भी ऐसा होता था।

दयानन्द ने आश्रम तो क्या, न तो कोई कुटिया बनाई तथा न ही उत्तराधिकारी शिष्य। उस समय भी ऐसे योगी-तपस्वी थे, जो योग साधना तथा तपस्या में रत रहकर प्रचार आदि कार्यों को आवश्यक नहीं मानते थे। दूसरी ओर ऐसे सुधारक भी विद्यमान थे जो अध्यात्म से दूर ही थे। **दयानन्द में हम उच्च कोटि के अध्यात्म तथा नि:संग क्रियाशीलता का अद्भुत सामंजस्य देखते हैं। योगी अरविन्द कहते हैं** कि दयानन्द में आध्यात्मिक क्रियाशीलता थी। इन **दोनों गुणों का सामंजस्य श्री कृष्ण आदि विरले व्यक्तियों में ही देखा गया है।**

सच्चे वीतराग साधु होकर भी दयानन्द मृत्युपर्यन्त क्रियाशील रहे। **उनका कोई भी कार्य अपने लिए न था** सम्भवतः वो अपने आप कुछ कर भी नहीं रहे थे।। **गुरुवर विरजानन्द जी के माध्यम से परमेश्वर ने उन्हें जिस कार्य में लगाया था, उस कार्य को उन्होंने भगवद्गीता के अनुसार समत्व भावना से युक्त होकर परमेश्वरीय मानते हुए किया।**

दीपावली के दिन '**ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की**' ये अन्तिम शब्द स्वामी जी के इसी स्वरूप को प्रकट कर रहे हैं।

❖❖❖

ऋषि के सपनों का आर्यसमाज

–स्व.लालमन आर्य, हिसार

ऋषि दयानन्द के सपनों का हम
आर्यसमाज बना सके।......
है खेद कि इन वर्षों में भी
उनकी शिक्षा अपना न सके।।......
गुरुकुल शिक्षा वैदिक प्रणाली पर,
ऋषि ने था जोर दिया,
हमने अंग्रेजी शिक्षा का प्रचलन घनघोर किया,
प्रिय आर्य संस्कृति और संस्कृत को,
स्वदेश में ला न सके।।.......

ऋषि ने गुणकर्मानुसार चारों वर्ण
मानना बतलाया,
पर जाति-पांति के चक्कर में
हमने न सत्य वह अपनाया,
हम खान पान व विवाह आर्य
आर्यों में भी करवा न सके।।........
हों सुदृढ़ संगठन सब विधि
यह ऋषि थे शिक्षा देने वाले,
हम करते चुनाव में झगड़े,
लग रहे मन्दिरों में ताले।
गुटबन्दी पद लोलुपता यह
दुर्गुण अब तलक हटा न सके।।......
उपदेशक योग्य न रहे ठोस,
होता है धर्म प्रचार नहीं,
यदि हैं सुयोग्य कुछ उपदेशक,
तो उनका है सत्कार नहीं,
घट रहे विद्वान यहां,
सुविधा उचित उन्हें दिला न सके।।........
ऋषिराज सत्य के बल पर ही
जग में दिग्विजयी कहलाए,
उनके कुछ शिष्यों ने भी
सत्यादर्श लालमन दिखलाए,
हम खरे उतरकर सत्य कसौटी पर,
आज सत्यार्थ बहा न सके।।...... ❖❖❖

स्वामी दयानन्द का प्रिय आर्यावर्त्त

–सत्यानन्द आर्य

उन्नसवीं शती में उत्पन्न हुआ दयानन्द जैसा महामानव इस धरा पर कम ही जन्म लेते हैं। जिस प्रकार वे अभूतपूर्व प्रतिभा के व्यक्ति थे उसी के अनुरूप उन द्वारा रचित **ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश** उनके अद्‌भुत ग्रन्थ हैं। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास तथा सभी दिशाओं में पथ प्रदर्शन का कार्य ये करते हैं। जहां एक ओर इन ग्रन्थों में अध्यात्मिक ज्ञान की गंगा को अनुभव किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर महर्षि जी ने इतिहास व देश की गौरव की बातें बड़े सहज व वास्तविक रूप में वर्णित की है। देश के प्रति समर्पित ऋषि की देश वन्दना बहुत सरल हृदय से लिखी गई है। कहीं कोई पक्षपात, छलकपट या तुष्टिकरण की गन्ध नहीं आती। इन ग्रन्थों में बिखरे हुए आर्यावर्त्त व आर्य राज्य सम्बन्धित वाक्यों को पढ़कर ऋषि के राष्ट्रस्नेह व देश वन्दना का पक्ष हमारे सामने अद्‌भुत प्रेरणा प्रदान करते हैं।

तीन प्रकार की गणित विद्या आर्यों ने वेदों से ही सिद्ध की है और इसी आर्यावर्त्त देश से सर्वत्र भूगोल में गई है। (ऋग्वेद भा. पृ.-398)

जो उन्नति करना चाहें तो आर्यसमाज के साथ मिलकर व उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। (स.प्र.-363)

जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। (स.प्र.-363)

जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है। (स.प्र. 363)

कलियुग नाम काल का है। काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म करने में साधक-बाधक नहीं। (स.प्र. 369)

इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता (स.प्र. 260)

संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि बहुत-सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहित, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। (**स.प्र.-260**)

जब युद्ध विभाग में युद्धविद्या, कौशल और सेना इतनी बढ़े कि जिसका सामना करने वाला भूगोल में दूसरा न हो तब उन लोगों में पक्षपात, अभिमान बढ़कर अन्याय बढ़ जाता है। (स.प्र.-260)

वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या-अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। (स.प्र.-257)

"यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है।" (स.प्र. 259)

"आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र, विदेशी छूने के साथ ही स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।" (स.प्र.-259)

सृष्टि से ले कर पांच सहस्र वर्षों से पूर्ण समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। (स.प्र. -59)

केवल खाना-पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है। (स.प्र.-251)

जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। (स.प्र.-251)

आपस की फूट में कौरव-पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। (स.प्र.-251)

जब तक एकमत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुख परस्पर खानपान न हो, तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। (स.प्र.-251)

धर्म हमारे आत्मा और कर्त्तव्य के साथ है। जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप में करने से लगते हैं। (स.प्र.-249)

क्या बिना देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य का व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? (स.प्र.-249)

आर्यों के घर में शूद्र अर्थात् मूर्ख सभी पुरुष पाकादि सेवा करें परन्तु वे शरीर, वस्त्र आदि में पवित्र रहें। (स.प्र.-250)

आर्यावर्त देशीय लोग व्यापार राजकार्य और भ्रमण के लिए सब भूगोल में घूमते थे। (स.प्र.-248)

देश-देशान्तर के अनेक विधि मनुष्यों के समागम रीति भांति देखने, अपना राजा और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते हैं और अच्छे व्यवहार का ग्रहण, बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर हो के बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। (स.प्र.-249)

इसमें आर्यों के बसने से पूर्व इस देश का नाम कोई नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। (स.प्र.-212)

किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकाल कर इस देश के राजा हुए। (स.प्र.-213)

इक्ष्वाकु से लेकर कौरव-पाण्डव तक सर्व भूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त से भिन्न देशों में भी रहता था। (स.पृ.-213)

कोई कितना ही करें परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह एक सर्वोपरि उत्तम होता है। (स.प्र.-213)

एक अरब छानवे करोड़ कई लाख और कई सहस्र वर्ष, जगत की उत्पत्ति और वेदों के प्रकाश होने में हुए हैं। (1960852976) वर्ष वेदों की और जगत की उत्पत्ति हो गए हैं। (सत्यार्थप्रकाश-214 एवं ऋग्वेद भूमिका द. ग्र. माला-263)

यह आर्यावर्त कितना सुन्दर है, कितना सुपीक है, जो जलवायु भी यहां का कितना उत्कृष्ट है। इसमें छहों ऋतु क्रम से आते रहते हैं। (पूना प्रवचन)

भला जब इसी देश का अन्न जल खाया पीया अब भी खाते पीते हैं तब अपने माता-पिता पितामहादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, इंगलिश भाषा पढ़के अभिमानी होकर वृद्धिकारक काम क्यों कर हो सकता है। (स. प्र.)

आर्यावर्त, आर्यराज्य व राजधर्म से सम्बन्धित महर्षि के उपरोक्त मन्तव्यों व सन्देश को एकबद्ध करने का प्रयास किया है। ताकि गलत धारणाओं व भ्रान्तियों को छिन्न-भिन्न कर हम लोग महर्षि जी के आदेशों व उपदेशानुसार अपने को ढाल सकें तथा देश गौरव, राष्ट्र स्नेह व निज संस्कृति के कार्यों के प्रति समर्पित हो सकें। जिसकी आज के समय में नितान्त आवश्यकता है।

❖❖❖

विशेष सूचना

जनज्ञान का मार्च अंक विशेषांक होगा।

14 मार्च हमारे प्रेरणास्रोत जन-ज्ञान (मासिक), दयानन्द संस्थान एवं वेद मंदिर (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्र नाथ) की 87वीं जयन्ती है।

साथ ही दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव भी।

आप सभी से साग्रह अनुरोध है कि इस मौके पर महात्मा जी से जुड़े संस्मरण, पत्र अथवा आपके जो भी विचार अथवा सुझाव हो, हमें शीघ्रताशीघ्र निम्न पते पर अपनी पासपोर्ट साईज फोटो के साथ प्रेषित करें। आप इस अवसर पर अपने प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान का विज्ञापन भी दे सकते हैं।

संपर्कः दिव्या आर्य (सह सम्पादक)

विशेषः आप एजेंसी अथवा अधिक प्रतियों के लिए भी पहले ही संपर्क करें। एक प्रति का मूल्य होगा-25/-रु. परन्तु जनज्ञान के पाठकों व सदस्यों को अधिक प्रति मंगवाने पर भी मात्र रु. 18/- पर ही उपलब्ध होगा।

मेरा दर्द

-महात्मा वेदभिक्षुः

हमने यौवन चढ़ाया तेरे द्वार पर,
तूने समझा नहीं, भाव माना नहीं,
सब कुछ दिया तुझ को हमने मगर,
तुझ से कभी कुछ तो मांगा नहीं।
इच्छा थी केवल तेरी शान का,
चर्चा हो दुनिया के हर देश में,
तेरी रोशनी से हो रोशन जमीं,
तेरे गीत गूंजे हवा में सदा!
तू मेरे लिए तो सभी कुछ रहा,
मैंने सपना जो देखा वो तेरा ही था,
मेरी तमन्ना तो बस एक थी,
कि झंडा तेरा ही फहरे सदा!
घड़ी आज चलने की है आ गयी,
जिन्दगी का दिया टिमटिमाने लगा,
दर्द केवल है इतना मेरे दिल में अब,
मैं तुझे को 'शहंशाह' बना ना सका!

स्वातन्त्रयवीर सावरकर

–प्रस्तुतिः दिव्या आर्या

जिसे तुम्हीं ने पाला-पोसा
स्नेह हृदय का दे माता-सा।
वत्सल भाभी तव चरणों में,
नतमस्तक नव कलिका-सा।

तव आशीषों से भरपूर,
पत्र पढ़ा मन हर्ष-मयूर।
पुलकित-प्रमुदित-ध्यान-धारण,
पाकर तब संकेत मधुर॥

धन्य-धन्य अपना सद्वंश,
निश्चय ही यह ईश्वर-अंश।
पाया पुण्य-प्रताप-भाग्य से,
रामचरण सेवा निःशंक॥

वन में खिलते पुष्प अपार,
सूख भूमि गिर होते छार।
कब किसने उनको गाया है?
जीवन उनका व्यर्थ असार॥

पर जो पुष्प गजेन्द्र उठाया,
भक्तिभाव हरिचरण चढ़ाया।
कमल पुष्प वह देव समर्पित,
धन्य हो गया, मुक्ति पा गया॥

जैसे ग्राह-ग्रसित गजराज,
पड़ी उसी दुःस्थिति में आज।
करुण याचना भारत-माता,
करती 'हे प्रभु रख लो लाज'॥

अपना कुल है ऐसा उपवन,
अगणित पुष्प खिले मनभावन।
प्रभु चरणों में करती अर्पण,
मातृ-वस्तला हो प्रमुदित मन॥

धन्य-धन्य अपना सद्वंश,
निश्चय ही यह ईश्वर-अंश।
पाया पुण्य-प्रताप भाग्य से,
रामचरण सेवा निःशंक॥

चुन-चुन पुष्प समर्पित होंवे,
रामचरण की महिमा गावें।
अर्पित नश्वर तन अपना यह,
जीवन सार्थक अमर बनावें॥

ईश-कार्य हित वंशलता,
मिट जावे तो मिले अमरता।
दिगदिगन्त को करे सुगन्धित,
जनहित का शुभ ध्येय सदा॥

हम असंख्य सुकुमार पुष्प हैं,
गूंथ बनाओ सुन्दर माला।
अर्पण कर दो मां चरणों में
यह नवरात्रि की शुभ बेला॥

अब नवरात्रि समाप्त हो रही,
जीवनमाला पूर्ण हो रही।
कुल देवी प्रकटित हो काली,
विजय-लक्ष्मी मुक्त कर मही॥

धैर्य-मूर्ति है, तू है दृढ़ता,
भाभी देती स्फूर्ति सदा।
रामचरण सेवा की पूर्ति,
करने यह निकली सरिता॥

महत्कार्य का व्रत है धारा,
उसी पूर्ति हित जीवन सारा।
संत मगन मन झूम उठे लख,
प्रबल साधना का उजियारा॥

अपने पूर्वज ऋषि अपार,
अजात वंशज का सम्भार।
जीवन प्रकटाएं हम ऐसा,
महिमा गाएं अपरम्पार॥

–सावरकर 125वीं जयन्ती स्मारिका 2009 से साभार

❖ ❖ ❖

स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी योद्धा - वीर सावरकर

–डॉ. शशिबाला

आज हमारा देश **भारतवर्ष विश्व की एक अजेय शक्ति बनना चाहता है परन्तु बन नहीं पा रहा है। उसके पीछे अनेक कारण हैं, जिनमें से एक है अपने क्रान्तिवीरों को, उनके विचारों और उनकी योजनाओं को भुला देना तथा उनके द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीयता के दर्शन का तिरस्कार करना।** स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जो देशभक्ति, साहस और शौर्य की मूर्ति थे, जो एक महान लेखक, राजनीतिज्ञ, क्रान्तिदृष्टा, जन-जन के नेता और दार्शनिक विचारक थे, **जिनके लिए भारत पुण्यभूमि, मातृ और पितृ भूमि थी, जो भारत की पूजा और उसके प्रति भक्ति को ही धर्म मानते थे। अपना सर्वस्व राष्ट्र के प्रति समर्पित करने वाले नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और हुतात्मा भगतसिंह, लाला हरदयाल और भाई परमानन्द जैसे महान् क्रान्तिकारी वीरों ने भी उनसे प्रेरणा पायी थी।**

भारत को अजेय शक्ति बनाने के लिए वीर सावरकर जी ने सूत्र रूप में कहा था-"हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है"। **यदि हिन्दुओं का धर्मान्तरण होता है, वे ईसाई या मुसलमान बनते हैं तो भारत दुर्बल होता है। भारत में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ जाने के परिणामस्वरूप पाकिस्तान बना अर्थात् धर्मान्तरण से ही राष्ट्रान्तरण हुआ।**

उनके अनुसार यदि भारत को शक्तिशाली बनाना है तो राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण आवश्यक है। उनकी इसी विचारधारा से प्रेरणा पाकर तृतीय विश्व युद्ध के अवसर पर यह बड़ी संख्या में हिन्दू सेनाओं में भर्ती हुए और प्रशिक्षण पाया।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि सावरकर जी की प्रेरणा एवं परामर्श से ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने विदेश मे जाकर 'आजाद हिन्द फौज' का निर्माण किया था। सिंगापुर रेडियो से एक बार उन्होंने सावरकर जी के प्रति आभार भी प्रकट किया था।

जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ सावरकर जी ने सैनिकों के बीच अंग्रेजों के विरुद्ध प्रचार आरम्भ कर दिया। परिणामत: 19 फरवरी 1946 को सेना ने विस्फोट किया, जलसेना के 3000 सैनिकों ने यूनियन जैक उखाड़ फेंका। स्थान-स्थान पर अंग्रेजों को मारना आरम्भ कर दिया। अंग्रेज घबरा गए, समाचार लन्दन पहुंचा, इग्लैंण्ड के तत्कालीन प्रधानमन्त्री कालीमैण्टर एटली ने तुरन्त घोषणा की कि वे केबिनेट मिशन को भेज रहे हैं और 3 जून 1947 से पहले-पहले भारत को स्वतन्त्र कर देंगे। **यह निश्चित है कि सशस्त्र क्रान्ति के बिना देश को स्वतन्त्रता मिलना असम्भव था। क्रान्तिवीर सावरकर क्रान्किारियों के प्रबल समर्थक थे जबकि गांधी जी उनका विरोध करते थे।** एक राजनीतिज्ञ के रूप में सावरकर जी की दूरदर्शिता समय के प्रवाह को भलीभांति परख लेती थी।

वीर सावरकर एक ऐसे राष्ट्रनायक थे जिनके हृदय में राष्ट्रभक्ति की ज्वाला बचपन से ही धधकने लगी थी। **एक बार वे सामान्य बालक के समान चिड़िया को लक्ष्य बना रहे थे, तो उनके अध्यापक ने उनसे कहा 'इसे क्यों मारते हो यह तो निरपराध है, उन अंग्रेजों को निशाना बनाओ जिन्होंने आपका धन, धर्म और देश लूटा है। अध्यापक के इस वाक्य ने असीम ऊर्जा का कार्य किया** और तभी से उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन करने प्रारम्भ कर दिए। **15 वर्ष की आयु में वे मराठी भाषा में देशभक्ति के गीत लिखने लगे।**

जब वे इंग्लैण्ड में क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न थे तो **22 फरवरी 1910 को वारंट निकाला गया।** उन्हें बन्दी बना लिया गया। **12 मई को न्यायाधीश ने निर्णय सुनाया कि अभियुक्त अत्यन्त खतरनाक है, इसे भारत सरकार के हवाले कर दिया जाना चाहिए।** वे बन्दी थे परन्तु उनकी प्रंरणा में इतना बल था कि अंग्रेजों को डर था कि उससे लन्दन का वातावरण युद्धमय हो सकता था। अत: उन्हें भारत भेजने के लिए जलयान पर सवार करवाया गया। मार्ग में फ्रांस में जलयान को रुकना था अत: वहां विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गयी, उस क्षेत्र को सेनाओं के विशेष दल ने घेर लिया। **साम्राज्यवादी शक्तियों को भयभीत कर देने वाले इस 22 वर्ष के पतले दुबले नवयुवक ने फ्रांस के समुद्र तट के निकट चलते हुए जलयान में से छलांग लगा दी। उन्हें जलयान में केवल शौच जाने के लिए खोला जाता था।** शौच के बहाने से वे अन्दर गए। पोर्ट होल में से निकलना कुछ कठिन था।

अतः **उन्होंने अपने सारे शरीर को साबुन से मला और कूद पड़े।** अंग्रेजों को पता चल गया तुरन्त गोलियों की बौछार होने लगी। **गोलियों से बचते-बचते वे तट पर पहुंचे परन्तु जो कार उन्हें वहां लेने आने वाली थी वह समय पर पहुंची ही नहीं, अतः वे पुनः अंग्रेजों के चुंगल में फंस गए।**

नियम के अनुसार उन्हें फ्रांस की धरती पर पकड़ नहीं सकते थे, परन्तु वे अंग्रेजों के लिए सबसे बड़ा खतरा थे। अतः उन्होंने किसी भी देश के समाचार पत्रों में छपने वाली अपनी भर्त्सना की चिन्ता किए बिना उन्हें पकड़ लिया। **इस घटना के पश्चात् उन्हें भारत लाने के लिए और बड़े जलयान की व्यवस्था की गयी, वीर सावरकर को ऐसे पिंजरे में कैद किया गया। जिसमें न तो वे लेट सकते थे और बैठ सकते थे।** बेड़ियों और पिंजरे में बन्द होने के पश्चात् भी शेर के समान उनकी निर्भीकता अंग्रेज सैनिकों के लिए अज्ञात भय उत्पन्न कर रही थी। भारत आने पर उन पर जब मुकदमा चल रहा था तो एक गवाह जिसे अंग्रेजों द्वारा बयान देने के लिए लाया गया था। उसने सावरकर जी को दण्डवत् प्रणाम करके कहा काश विनायक दामोदर सावरकर जी की वीरता संसार के लिए प्रेरणा बने। यही मानते हुए **आज भी फ्रांस की सरकार मार्सेलिस नामक उस द्वीप पर स्मारक बनाना चाहती है जहां वे 104 वर्ष पूर्व पहुंचे थे। परन्तु भारत सरकार महान दृष्टा वीर सावरकर का नाम भी लेने वालों को साम्प्रदायिक कह कर कलंकित करने में लगी हुई है। मुस्लिम वोटों के लालची, स्वार्थी, पदलोलुप, भ्रष्ट नेताओं ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व लुटा देने वाले महान् देशभक्तों को भी पार्टियों में बांट लिया है।**

> ***सावरकर जी ही इतिहास में एकमात्र ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्हें एक जीवन में दो जन्मों के आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया और अण्डमान की काल कोठरी में भेज दिया गया। उन्होंने अण्डमान की जेल में 27 वर्षों तक कारावास सहा। एक ओर तो वहां उन्हें घोर यातनाएं दी जातीं, उन्हें तोड़ने के लिए-उन पर कोड़े बरसाए जाते थे, तेल पिलाने के लिए कोल्हू चलवाया जाता था। दूसरी ओर, सहबन्दी उनके दर्शन करने आते और उनकी जय-जयकार करके चले जाते थे।***

यदि आज भारत एक नवीन ऊर्जा प्राप्त करना चाहता है एक अजेय शक्ति बनना चाहता है तो उसे वीर सावरकर जी को स्मरण करना होगा। उनके दिखाए मार्ग पर चलना होगा। उनके सिद्धान्तों का पालन करना होगा। **इतिहास के गहन अध्ययन से उन्होंने समझ लिया था कि जेहादी भावना से मुसलमान लगातार हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन कर रहे हैं।** अण्डमान की कारावास में भी उन्होंने देखा कि मुसलमान वार्डन, जमादार और बन्दी तरह-तरह के हथकण्डे अपना कर हिन्दू बंदियों का धर्म परिवर्तन कर रहे थे। अतः **उन्होंने भयानक और कड़े प्रतिबन्धों के बाद भी जेल में ही शुद्धि का आन्दोलन चला दिया था। वे धर्मान्तरित हिन्दुओं से गुपचुप रूप से मिलते, हिन्दू धर्म का महत्व समझाते, मन्त्रोच्चारण और जलाभिषेक कर उनकी शुद्धि करते थे।** एक महान विचारक, विशुद्ध हिन्दू राष्ट्रवादी, त्याग और तपस्या की मूर्ति, साहसी, आत्मबलिदानी, क्रान्तिकारी, समाज सुधारक, राष्ट्र हित में अपना सर्वस्व अर्पित करने वाले विनायक दामोदर सावरकर कवि हृदय एवं मार्मिक काव्यों के रचियता थे। **उन्होंने काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य, एकांकी नाटक उपन्यास आदि सभी प्रकार की युगों-युगों तक प्रेरणा देने वाली कृतियां भारतीय युवकों को समर्पित की हैं।** उनकी वीर रस से ओतप्रोत कविताएं बचपन से ही मराठी पत्रों में प्रकाशित होनी आरम्भ हो गयी थीं। भारतीय युवकों को सशस्त्र क्रान्ति के तत्त्वज्ञान की शिक्षा देने के उद्देश्य से उन्होंने **'1857 का स्वातन्त्र्य समर'** नामक ग्रन्थ लिखा। अण्डमान में कोल्हू चलाने के उपरान्त जो समय मिलता उसमें भी वे साहित्य आराधना करते थे। **लेखन सामग्री के अभाव में उन्होंने जेल की दीवारों पर नुकीले पत्थर से काव्य लिख डाला। वहीं पर उन्होंने कमला और गोमान्तक नामक खण्डकाव्य लिखे।** गोमान्तक में पुर्तगाली ईसाई पादरियों द्वारा हिन्दुओं पर किए गए घोर अत्याचारों की कहानी है।

सावरकर जी प्रथम ऐसे भारतीय थे जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की स्वतन्त्रता के लिए अभियान चलाया। महात्मा गांधी के समान ही सावरकर जी इंग्लैण्ड में वकालत पढ़ने गए थे, सावरकर जी को उपाधि नहीं दी गई। क्योंकि उन्होंने अंग्रेजी के ताज के प्रति राज-निष्ठा की शपथ लेने से मना कर दिया था। **उन्होंने कहा था कि मेरी निष्ठा मेरी मातृभूमि और वहां के देशवासियों के प्रति है।**

वीर सावरकर ही एक ऐसे महापुरुष थे जिनके

द्वारा दी गई राष्ट्रीयता की परिभाषा को सूत्र रूप में प्रस्तुत किया गया। उनका मानना था कि एक राष्ट्र का निर्माण युगों-युगों से चली आ रही अनवरत परम्पराएं हैं। इसका निर्माण ऋषियों-महर्षियों के त्याग, तप और मनीषा ने किया है। हिन्दू की परिभाषा देते हुए उन्होंने लिखा–**आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका मातृभू:पितृभूश्चै स वै हिन्दूरिति स्मृतः।**

सिन्धु सरिता से सिन्धु सागर तक फैली इस भारत भूमि को जो मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता ही वही हिन्दू है।

लगभग एक हजार वर्ष की इस्लामी व अंग्रेजी दासता के पश्चात् सावरकर जी की हिन्दू राष्ट्र की मांग के कारण पहली बार यह अवसर आया था कि भारत इस्लामी और अंग्रेजी दोनो ही प्रकार दासता से एक साथ मुक्त हो जाता। परन्तु शायद नियति को यह स्वीकार नहीं था।

सत्ता ऐसे पदलोलुपों के हाथ में आ गयी जो अंग्रेज, अंग्रेजी, अंग्रेजियत और इस्लाम, सभी के भक्त थे, धर्म के आधार पर देश का विभाजन हुआ परन्तु **तत्कालीन नेताओं ने यह स्वीकार नहीं किया कि बचा हुआ भारत हिन्दुओं का देश होगा।**

सावरकर एक व्यक्ति नहीं दर्शन है। उनका दर्शन जितना उनके जीवन काल में उपयोगी था उससे अधिक आज है। परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि राजनैतिक प्रतिद्वंदिता के कारण राष्ट्ररत्न के दर्शन को ओझल कर दिया गया। राष्ट्रोन्नति के सतत् ऐसे पुजारी के वीरता पूर्ण कृत्य और उनके प्रेरक जीवन की गाथाएं आज हर नवयुवक और युवती को सुनायी जानी चाहिएं। वे जीवन भर स्वनिर्मित कांटों की सेज पर सोये थे।

यहां तक कि तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी इन्हें श्रद्धांजलि देते हुए लिखा था कि असंख्य लोग उनके जीवन से प्रेरणा पाते रहेंगे। उनका सम्पूर्ण जीवन साहसपूर्ण कृत्यों का एक महाकाव्य है। उनके हिन्दू राष्ट्रवाद का महान आदर्श एवं दर्शन ही देश को सुदृढ़ बनाकर उन्नति के शिखर पर ले जा सकता है। राष्ट्र शीघ्र विश्व की राजनीति में प्रभावी स्थान प्राप्त करेगा।।। **जय हिन्दू राष्ट्र।।**

–नयागंज, गाजियाबाद

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम पांच घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नामः...

पूरा पता...

....

पिनकोड .... मोबाईल ....

ई-मेल.. व्यवसाय ....

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो)...

एक प्रति–18 रुपए, द्विवार्षिक शुल्क–380 रुपए, त्रिवार्षिक शुल्क–500 रुपए
पांच वर्ष–900 रुपए, आजीवन–3100 रुपए, संरक्षक सदस्य–5100 रुपए

कुछ भूली बिसरी यादें...

वीर सावरकर के चरण स्पर्श कर मैं तो धन्य हो गया

–गुरु चरण बिन्दल

देश के क्रान्तिकारियों और देशभक्तों के सम्बन्ध में अपने बचपन में मैंने काफी सुन रखा था। **गांधी हत्याकाण्ड में मेरे पूज्य पिताजी लाला चतुरसेन गुप्त को प्रशासन ने अनर्गल आरोप लगाकर जेल भिजवा दिया था।** जिससे मेरा बालमन क्रान्तिकारियों के प्रति और अधिक दृढ़ हो गया था।

मैं प्राय: सोचा करता था कि कैसे वीर सावरकर ने कालेपानी की यातनाएं सहीं, कैसे समुद्र को लांघ दिया। उनकी देशभक्ति की चर्चाएं सुनकर सोचा करता था कि क्या कभी मैं इनके दर्शन कर सकूंगा??

अन्तत: वह दिन आ ही गया जब मुझे स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के दर्शन ही नहीं उनके श्रीचरणों में बैठने का अवसर मिला। मैंने अपने आपको सौभाग्यशाली और धन्य समझा। बात सन् 1957 की है। जोधपुर में अखिल भारतीय हिन्दुमहासभा का अधिवेशन था। स्वातन्त्र्यवीर सावरकर मुख्य अतिथि थे। उस अधिवेशन में दिल्ली से काफी लोग गए थे। मैंने अपने पिताजी से आज्ञा लेकर जोधपुर का कार्यक्रम बनाया।

मैं, प्रोफेसर रामसिंह जी जिन्हें मैं ताऊ जी कहा करता था तथा चाचा पन्नालाल आर्य के साथ जोधपुर पहुंचा। तीन दिन के अधिवेशन में पहले दिन शोभा यात्रा तथा अन्य कार्यक्रम होते रहे। दूसरे दिन प्रात: हम कुछ लोग जोधपुर मे बालसमन्दर पैलेस गए। जहां पर सावरकर जी को ठहराया गया था। **रास्ते भर गुप्तचर विभाग के लोग पूछताछ करते रहे। अन्तत: पैलेस के एक हॉल में हम सभी को बैठाया गया।**

कुछ ही देर में सावरकर जी वहां पर आए और एक बड़ी सी कुर्सी पर बैठ गए। हम सभी लोग फर्श पर बिछे कालीन पर बैठे थे। सभी ने उठकर उनका अभिवादन किया। **सावरकर जी के मैंने चरण स्पर्श किए और उनकी कुर्सी के पास बैठ गया। प्रोफेसर रामसिंह जी ने उनके स्वास्थ्य आदि के बारे में पूछा। वह बहुत धीरे-धीरे बोल रहे थे।** सावरकर जी ने प्रोफेसर साहब से मेरे बारे में पूछा तो उन्होंने पिता जी का नाम लेकर मेरे बारे में बताया। उन्होंने पिताजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा।

मैंने सकुचाते हुए सावरकर जी से पूछा–**'आपका ढाई हाड़ (दुबला-पतला) का शरीर है। आपने अथाह समुद्र में छलांग लगाकर तैरकर इतनी दूरी कैसे पार की?'** उन्होंने कहा **'मन की दृढ़ता और आत्मबल से।'**

मैं तो सुनकर गद्‌गद हो गया। बालसमन्दर पैलेस से चलते समय पुन: उस महान विभूति के चरण स्पर्श कर मैं धन्य हो गया। **मैंने उस कालजयी सावरकर के दर्शन कर अपने आपको कृतार्थ किया।**

10 मई 1957 को दिल्ली में स्वतन्त्रता संग्राम की शताब्दी मनाई गई थी। उस कार्यक्रम में वीर सावरकर जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। उसी उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम आर्यसमाज दीवान हॉल में हुआ था। उस कार्यक्रम में भी मुझे उनके समीप बैठने का अवसर मिला। दूसरा कार्यक्रम दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित किया गया था। मैं उस कार्यक्रम का भी दर्शक रहा हूं।

साहस और देश भक्ति के पर्याय आदर्श क्रांन्तिकारी स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सारवकर को उनकी पुण्य तिथि पर मैं अपनी हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूं।

(–संस्थापक सत्य चक्र, न्यू आर्य नगर, गाजियाबाद)

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य अपने तथा अपने मित्र परिवारों में पहुँचाएं। मूल्य 2800 रु.। बढ़िया कागज-मूल्य 3600 रु.

आर्यसमाज के आधार स्तम्भ

जीवनियां : भाग-६

जिन देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति देकर सत्य-धर्म और ज्ञान के प्रकाश को पुनः प्रसारित करने हेतु आर्यसमाज संगठन को सुदृढ़ बनाकर ऋषि दयानन्द के उद्देश्यों को फैलाया-उनको, दयानन्द बोधोत्सव तथा जन्मोत्सव का यह विशेषांक इस पावन अवसर पर अर्पित करते हैं-.......

आर्यसमाज के विख्यात विद्वान् आर्यजन

स्वामी विश्वेश्वरानन्द

महर्षि दयानन्द के जिन अनन्य भक्तों ने इस मूलमन्त्र को हृदयंगम किया था कि **'जो बोले सो अभय-वैदिक धर्म की जय'** का उद्घोष कर देना मात्र ही ऋषि ऋण से उऋण होने का साधन नहीं है **अपितु वैदिक धर्म और उसके साहित्य पर अनुसंधान और शोध कार्य कर जनता को दिशाज्ञान कराना भी उनका आवश्यक कर्त्तव्य है,** उनमें स्वामी विश्वेश्वरानन्द का नाम भी सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

स्वामी विश्वेश्वरानन्द ने अपनी शोध की लगन का ही परिणाम पुरुषार्थ प्रकाश नामक पुस्तक का प्रकाशन कर प्रस्तुत किया था। उस ग्रन्थ ने आपको तथा स्वामी नित्यानन्द को आर्यजगत् में विशेष सम्मान प्रदान कराया था।

आपके परिश्रम और ज्ञान तथा विद्वत्ता के प्रकाश में जिन वरेण्य आर्यजनों ने अपने जीवन की भावी राह खोजी थी, उनमें से स्वामी नित्यानन्द भी आपकी भांति ही आर्यजनों के प्रेम और आदर का पात्र बने थे।

होशियारपुर स्थित वैदिक अनुसंधान केन्द्र आज भी आपके यशोगान का जीवित जाग्रत कीर्तिमान है। आप सरीखे मनीषियों और त्यागी तपस्वी विद्वानों पर आर्य समाज को सदा गर्व रहेगा। ❖❖❖

पं. तुलसीराम स्वामी

आर्यसमाज के प्रारम्भिक वर्षों में मेरठ को प्रदेश में वही स्थान प्राप्त था, जो पंजाब में लाहौर को था। **समाज की अनेक प्रकार की प्रवृत्तियों का श्रीगणेश मेरठ की क्रान्ति नगरी से ही हुआ था।** मेरठ में ही उपदेशक श्रेणी की योजना का भी आरम्भ हुआ था।

मेरठ को जिन महान् मनीषियों ने आर्य समाज के क्षेत्र में और अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करा दिया उन्हीं में से प्रमुख थे प्रसिद्ध पत्रकार और साहित्यकार पं. तुलसीराम स्वामी भी। व्याख्यानों और शास्त्रार्थों द्वारा तो उन्होंने समाज की सेवा की ही थी लेखनी द्वारा भी आपके महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने **'वेद प्रकाश'** मासिक का सम्पादन भी नितान्त कुशलता सहित किया था। **इसके अतिरिक्त आपने सामवेद भाष्य और मनुस्मृति का अनुवाद तथा भास्कर प्रकाशन आदि ग्रन्थों की रचना करके भी आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की थी।**

आपके द्वारा **वैशेषिक, न्याय और मीमांसा पर किए गए भाष्य आर्यसमाज के साहित्य भण्डार की अमूल्य निधि है।** यह भी उल्लेखनीय है कि जब पं. भीमसेन शर्मा ने आर्यसमाज से पृथक् होकर सनातन धर्म का प्रचार कार्य आरम्भ किया तथा अपने इस नए

मुखौटे को ओढ़कर आप महर्षि दयानन्द और समाज पर घोर प्रहार करने लगे तो **पं. तुलसीराम जी ने आपसे डटकर लोहा लिया।**

यह मेधावी विद्वान् जहां एक सिद्धहस्त लेखक और प्रभावी वक्ता थे, वहां आलोचकों की युक्तियों का युक्ति और प्रमाण से उत्तर देने में भी नितान्त प्रवीण।

❖❖❖

पं. भीमसेन

पं. भीमसेन इटावा के निवासी थे और **कभी आपकी गणना महर्षि दयानन्द के मुख्य शिष्य के रूप में की जाती थी।** आप संस्कृत के विद्वान थे तो हिन्दी के सुलेखक भी। आपने स्वामीजी के अनेक ग्रन्थों का अनुवाद और संशोधन कार्य भी सम्पन्न किया था और उसके कारण भी आपके लेखन कार्य में निपुणता आ गई थी। **देव दयानन्द के निर्वाण के उपरान्त आपने वैदिक सिद्धान्तों के समर्थन में अनेक ग्रन्थों की भी रचना की थी।**

ऐसी भी धारणा है कि संस्कार चन्द्रिका को लिखने में भी उन्होंने सहयोग दिया था। उस समय के सुविख्यात मासिक आर्य सिद्धान्त में भी उन्होंने सहयोग दिया था। उस समय के सुविख्यात **मासिक आर्य सिद्धान्त** में भी उन्होंने सहयोग दिया था। **आर्य सिद्धान्त में आपके लेख प्रायः प्रकाशित होते रहते थे और उनमें आप प्रायः सनातन धर्म की मान्यताओं का खण्डन किया करते थे।**

इसके अतिरिक्त आपने उपनिषद, भगवद्गीता और मनुस्मृति के अनुवादों का भी प्रकाशन किया था। **वस्तुतः आर्यसमाज की जो सेवाएँ आपने की थीं उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती किन्तु अपने जीवन के अन्तिम प्रहर में पं. भीमसेन जी ने अपने ही लिखे का खण्डन और कहे का विखण्डन आरम्भ कर दिया। वे पौराणिकों के साथ जुट गए थे और इस प्रकार उन्होंने जिस साहित्य का सृजन किया था वह अन्ततः मूल्य की दृष्टि से शून्य ही रह गया।**

❖❖❖

पं. गणपति शर्मा

पं. गणपति शर्मा भी आर्यजगत् के ज्योतिर्मान नक्षत्र थे। **आप संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् तथा प्रवीण वक्ता थे।** शास्त्रार्थों में तो आपकी कीर्तिपताका कश्मीर से कन्याकुमारी तक फहरा उठी थी। **आपने देश के उत्तरी भागों में आर्यसमाज के प्रचारार्थ जो प्रचार यात्राएँ कीं उनमें आपकी कश्मीर यात्रा तो ऐतिहासिक ही सिद्ध हुई।**

जिन दिनों आप वहां वैदिक धर्म के प्रचारार्थ पहुँचे, उन दिनों कश्मीर में संस्कृत के एक अच्छे विद्वान् पादरी जानसन की धाक जमी हुई थी। उनका कश्मीर अधिपति से भी अच्छा परिचय था। **पादरी जानसन ने पंडितों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी तो श्रीगणपति शर्मा ने उस चुनौती को स्वीकार किया।**

पहले तो पादरी महोदय ने बचने का प्रयास किया। किन्तु अन्ततः उन्हें सामने आना ही पड़ा और शास्त्रार्थ के प्रारम्भ में तो पादरी साहब संस्कृत में बोले किन्तु **जब पं. गणपति शर्मा के श्रीमुख से वेदवाणी की सरिता प्रवाहित हो उठी तो पादरी महोदय को परास्त होना पड़ा** और शास्त्रार्थस्थल पं. गणपति शर्मा के जननाद से गूँज उठा।

❖❖❖

विचार के पुंज ला. रामकृष्ण

पंजाब में आर्यसमाज के महात्मा दल के नेताओं में जालन्धर के सुप्रसिद्ध वकील ला. रामकृष्ण जी का स्थान अग्रगण्य था। कई दृष्टियों से आप अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। **आप ला. मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के अनन्य सहयोगी रहे और लगभग 40 वर्ष तक महात्मा मुंशीराम के साथ उनका सम्बन्ध ऐसा रहा कि लोगों में वे दोनों राम-लक्ष्मण की जोड़ी के रूप में विख्यात हो गए।**

किन्तु इतना सन्निकट सहयोग होते हुए भी आप दोनों की प्रवृत्तियाँ सर्वथा भिन्न थीं। **स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम जी) भावुकता की प्रतिमूर्ति थे और लाला रामकृष्ण भावुकता से कोसों दूर।** वस्तुतः वे विचारक के पुंज थे। **वे लगातार 12 वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर आसीन रहे।** उनके अध्यक्ष काल की एक विशेषता यह रही कि बड़े-से-बड़े विक्षोभ का अवसर आने पर भी, आवेश का प्रभंजन उठने पर भी आप पर्वत के तुल्य अडिग रहते थे और प्रत्येक उलझन का मार्ग शान्त होकर खोज निकालते थे। **आप जहां नितान्त कर्त्तव्यपरायण नेता था, वहां अत्यन्त सीधे-सादे और मितभाषी मेधावी भी।**

❖❖❖

गो-वध बन्दी का राष्ट्रीय कानून बने

–रामबहादुर राय

सैकड़ों साल पुराने गो-वध बंदी आन्दोलन को कोई सरकार दबा नहीं सकती। यह आन्दोलन अपनी राख से फिर जिन्दा हो जाने के उदाहरण पेश करता रहा है। भले ही इस समय कोई संगठित आन्दोलन न हो रहा हो और कोई बड़े नामी संत उसका नेतृत्व न कर रहे हों फिर भी इस आन्दोलन की चिंगारी को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह आन्दोलन अपनी मंजिल पर ही जाकर रुकेगा। वह है–पूर्ण गो-वध बन्दी।

गोरक्षा का सवाल सैकड़ों साल पुराना है। इसका सम्बन्ध भारत की सभ्यता से है। **हमारी सभ्यता में गाय और गोवंश का स्थान बहुत ऊंचा है। जब कभी इस भावना को चोट पहुंची तो विरोध हुआ। आन्दोलन हुए। गोरक्षा के लिए बलिदान और अपनी जान की बाजी लगा देने वालों की कभी कमी नहीं रही।** इस बारे में बहुत कुछ इतिहास के पन्नों में बिखरा हुआ है। गांधी धारा के **विचारक और इतिहासकार धर्मपाल ने इस बारे में अध्ययन कर कुछ ऐसे तथ्य खोजे जो अज्ञात थे।**

उन्होंने लिखा कि गाय की पवित्रता का वर्णन 'प्राचीन ऋषियों के काव्यों, वेदादि से लेकर उत्तरवर्ती साहित्य और लोकगीतों में भी मिल जाता है।' **उन्होंने ही यह पहली बार बताया कि 1860 से ब्रिटिश बौद्धिकों ने हमारे अंग्रेजी पढ़े-लिखे समाज को बताना शुरू किया कि वेदों में वर्णन है कि विशेष अवसरों पर गोमांस का सेवन होता था।** वे हमारे मन में गाय की महत्ता को कम करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन उसका भारतीय मानस पर खास प्रभाव नहीं पड़ा। **अंग्रेजी शासन में गोमांस के लिए ज्यादा कत्लखाने खुले। गायों की हत्या बढ़ी। गाय की दुर्दशा होती गई। इसके बावजूद भारतीयों के लिए गाय पवित्र और पूज्यनीय बनी हुई है।**

धर्मपाल ने इस धारणा की भी बारीकी से छानबीन की है कि **गो-वध की शुरूआत भारत में इस्लाम विजय के साथ हुई।** उसके कारणों को उन्होंने स्पष्ट किया। यह बताया कि **'इस्लामी परम्पराओं में बलि चढ़ाने में भेड़, बकरा और जहां भोज में सात से ज्यादा लोग शामिल होते थे, तो ऊंट की बलि चढ़ाई जाती थी। गाय की बलि का तो प्रश्न ही नहीं उठता था क्योंकि जहां इस्लाम फला-फूला वहां ज्यादा गोवंश नहीं था।'** उन्होंने लिखा है कि जब भारतीयों और इस्लामी विजताओं में विद्वेष बढ़ा तब अपमानित करने के ख्याल से कई बार बड़ी संख्या में गोहत्या कराई गई। लेकिन विरोध होने पर **इस्लामी राजाओं ने अपने शासन क्षेत्र में गोवध पर प्रतिबन्ध भी लगाए।** 'इस्लामी प्रभुता के दौर में सलाना गो-हत्या का आंकड़ा अधिकतम बीस हजार ठहरता है।' गो-वध पर अज्ञान का आलम यह है कि शासन और न्याय के ऊंचे पदों पर बैठे लोग भी वास्तविकताओं से अपरिचित हैं। वे इस झंझट में पड़ना नहीं चाहते। इतिहास की हकीकत को जानने का वे प्रयास नहीं करते। यही हाल उनका भी है जो गो-वध बन्दी की मांग करते हैं।

अब यह तथ्य सामने आ गया है। कि **1750 से अंग्रेजों ने गो-वध कराना शुरू किया। अंग्रेज अपने आहार के लिए गोमांस का उपयोग करते थे। जैसे-जैसे यह जानकारी लोगों तक पहुंची तो उसका विरोध होने लगा।** यह भी सही है कि गोहत्या के विरोध में उस समय जो आन्दोलन हुए उसे इतिहासकारों ने ज्यादा महत्व नहीं दिया। उसका उल्लेख चलते-फिरते ढंग से किया गया है।

1750 से 1830 तक गो-हत्या से भारतीय दुखी हुए पर वे भयभीत और लाचार भी थे। जो विस्फोट 1857 में हुआ। उसमें गोहत्या भी एक बड़ा कारण था। 1857 में अंग्रेज जीते। सेना में अंग्रेजों की संख्या पहले से दो-तीन गुनी ज्यादा हो गई। **1858 में एक लाख से भी अधिक अंग्रेज सेना में हो गए। नए अंग्रेज सैनिक ज्यादातर उत्तर भारत में विभिन्न स्थानों पर नियुक्त किए गए। गोवध में भी अन्य जगहों के मुकाबले इन जगहों पर ज्यादा वृद्धि हुई।** दैनिक गोवध के कारण भारतीय कृषि और ग्रामीण जीवन अधिक प्रभावित होने लगा। **इसका परिणाम पंजाब के कूका विद्रोह (नामधारी सिक्ख) के रूप में प्रकट हुआ।**

नामधारी पंथ के लोगों ने गोरक्षा के लिए 1860 के आस-पास ही हथियार उठा लिए। वह

विद्रोह दस साल चला। जो धीरे-धीरे देशव्यापी हुआ। भारत के हर हिस्से में बढ़ती गोहत्या से जो विद्रोह की भावना भड़की उसका नेतृत्व सन्यासियों ने किया। दक्षिण भारत के सन्यासी श्रीमन स्वामी और दयानन्द सरस्वती का नेतृत्व पाकर समाज खड़ा हो गया। गोरक्षणी सभाएं बनीं। ये सभाएं उत्तर समाज में हर जगह थी। गोरक्षा के लिए साधु-सन्त देशभर में अलख जगाते रहे। जिनका नाम इतिहास के पन्नों में अमर रहेगा–ऐसे संत अलाराम, गोपालानन्द स्वामी, स्वामी भाष्करानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द और खाकी बाबा हैं। इस तरह के जनजागरण में गोरक्षा का जो आन्दोलन खड़ा हुआ है, वह 1880 से 1894 तक पूरे देश में चला।

आन्दोलन को एक दिशा देने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक लाख हस्ताक्षरों वाला एक ज्ञापन महारानी विक्टोरिया, ब्रिटिश संसद और वायसराय को देने की घोषणा की। उसे छपवाया। उसमें गोरक्षा के तर्क थे और मांग थी कि गोवंश का वध बन्द हो। एक अनुमान है कि कई लाख हस्ताक्षर एकत्र हुए। जिसमें चालीस हजार हस्ताक्षर मेवाड़ से थे और साठ हजार पटियाला से।

जब आन्दोलन तेज हुआ तो महारानी विक्टोरिया ने वायसराय को पत्र लिखा। उसमें उन्होंने माना कि 'गोरक्षा का यह आन्दोलन वास्तव में हमारे खिलाफ है क्योंकि अपने सैनिकों के लिए हम अधिक गोवध करते हैं।' उस आन्दोलन में कांग्रेस के नेता पण्डित मदनमोहन मालवीय भी शामिल हुए। उनके जगह-जगह व्याख्यान हुए। उनके सहयोगी लाला रामचरण दास और राजा रामपाल सिंह भी गोरक्षा सभाओं की अध्यक्षता करते थे। उस आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण ब्रिटिश दस्तावेज और रिपोर्ट का इतिहासकार धर्मपाल ने अध्ययन कर एक पुस्तक बनाई। पुस्तक है–'गौवध और अंग्रेज।'

अगर इस पर गहरी खोजबीन हो और अध्ययन विधिवत हो तो यह प्रमाणित हो जाएगा कि अंग्रेजी राज में अस्सी साल से ज्यादा लम्बा आन्दोलन गोरक्षा के लिए चला है। वही आजादी के आन्दोलन की प्रेरणा बना। तभी तो महात्मा गांधी यह कहते हैं कि 'गाय की पवित्रता हिन्दू धर्म का केन्द्र बिन्दु है।' उन्होंने यह भी कहा कि 'गाय की रक्षा के लिए मैं किसी मनुष्य को नहीं मारुंगा, इसी प्रकार किसी भी मनुष्य के जीवन की रक्षा के लिए, चाहे वह कितना भी महत्त्वपूर्ण हो, मैं गाय को नहीं मारुंगा।' गांधी जी की प्रेरणा से ही 1928 में साबरमती आश्रम में गोसेवा संघ गठित किया गया। इसके लक्ष्य की घोषणा में कहा गया–'क्योंकि हिन्दू अपने धर्म के निर्देशानुसार गोरक्षा का कर्तव्य पालन करने में विफल रहे हैं, भारत में गोवंश का दिन पर दिन ह्रास तथा क्षय हो रहा है, अतः उस धर्म कर्तव्य के पालन के लिए गो-सेवा संघ गठित किया जाता है। संघ का लक्ष्य होगा–सभी नैतिक उपायों द्वारा गोवंश का रक्षण।'

1946 में अंतरिम सरकार बनने पर गोवध बन्दी की मांग की गई। नेहरु सरकार पर दबाव बढ़ा। खाद्य मन्त्री डॉ. राजेंद्रप्रसाद ने सर दातारसिंह की अध्यक्षता में गोरक्षण और गो पालन विशेषज्ञ समिति बनाई। उसकी रिपोर्ट को ध्यान में रखकर संविधान सभा में गोवध निषेध के लिए नीति-निर्देशक तत्व में व्यवस्था दी, जो संविधान की धारा 48वां है।

स्वाधीन भारत में विनोबा जी ने पूर्ण गोवध बन्दी की मांग रखी। उसके लिए कानून बनाने का आग्रह नेहरु से किया। वे अपनी पदयात्रा में यह सवाल उठाते रहे। कुछ राज्यों ने गोवध बन्दी के कानून बनाए। इसी बीच हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्मलचंद्र चटर्जी (लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी के पिता) ने एक विधेयक 1955 में प्रस्तुत किया। उस पर जवाहरलाल नेहरु ने लोकसभा में घोषणा की कि 'मैं गोवध बन्दी के विरुद्ध हूं। सदन इस विधेयक को रद्द कर दे। राज्य सरकारों से मेरा अनुरोध है कि ऐसे विधेयक पर न तो विचार करें और न कोई कार्यवाही!'

लेकिन 1956 में कसाईयों ने उसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। उस पर 1960 में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया। धीरे-धीरे समय निकलता जा रहा था। लोगों को लगा कि अपनी सरकार अंग्रेजों की राह पर है वह आश्वासन देती है। लेकिन आचरण उसका गोवध के नाश का होता है।

इससे ही गोरक्षा का प्रश्न पिछली सदी के छठे दशक में राष्ट्रीय सवाल बन गया। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, स्वामी करपात्री जी और देश के तमाम संतों ने इसे आन्दोलन का रूप दिया। गोरक्षा का अभियान शुरू हुआ। वह अभियान जैसे-जैसे बढ़ा उसके महत्व को राजनीतिक नेताओं ने समझा। सबसे पहले लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को पत्र लिखा। वह 21 सितम्बर, 1966 का है। उन्होंने लिखा कि 'गो-वध बन्दी के लिए लम्बे समय से चल रहे आन्दोलन के बारे में आप जानतीं ही हैं। संसद के पिछले

सत्र में भी यह मुद्दा सामने आया था।....और जहां तक मेरा सवाल है मैं यह समझ नहीं पाता कि **भारत जैसे एक हिन्दू-बहुल देश में, जहां गलत हो या सही, गोवध के विरुद्ध ऐसा तीव्र जन-संवेग है, गोवध पर कानून प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाया जा सकता?'**

इन्दिरा गांधी ने जे.पी. की सलाह नहीं मानी। परिणाम हुआ कि सर्वदलीय गोरक्षा महा अभियान ने दिल्ली में विराट प्रदर्शन किया। दिल्ली के इतिहास का वह सबसे बड़ा प्रदर्शन था। गोरक्षा के लिए तब प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पुरी के शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ ने गोरक्षा के लिए प्रदर्शनकारियों पर पुलिस जुल्म के विरोध में और गो-वध बन्दी की मांग के लिए 20 नवम्बर, 1966 को अनशन प्रारम्भ कर दिया। वे गिरफ्तार किए गए। **प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का अनशन 30 जनवरी, 1967 तक** चला। **73वें दिन** डॉ. राममनोहर लोहिया ने अनशन तुड़वाया। अगले दिन **पुरी के शंकराचार्य** ने भी अनशन तोड़ा। उसी समय **जैन संत मुनि सुशील कुमार ने भी लंबा अनशन किया था।** ऐसे संकल्प तो संत अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए ही करते हैं।

ऐसा नहीं है कि गोरक्षा का प्रश्न उस आन्दोलन के बाद बन्द हो गया। उसे **दस साल बाद** फिर संत विनोबा ने उठाया। 12 अप्रैल, 1978 को डॉ. रामजी सिंह ने एक निजी विधेयक पर अमल के लिए कानून बनाने की मांग थी। **21 अप्रैल, 1979 को विनोबा ने अनशन शुरू कर दिया। पांच दिन बाद प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई ने कानून बनाने का आश्वासन दिया और विनोबा ने उपवास तोड़ा। 10 मई, 1979 को एक संविधान संशोधन विधेयक पेश किया गया। जो लोकसभा के विघटित होने के कारण अपने आप समाप्त हो गया।** इन्दिरा गांधी के दोबारा शासन में आने के बाद 1981 में पवनार में गोसेवा सम्मेलन हुआ। उसके निर्णयानुसार 30 जनवरी, 1982 के सुबह विनोबा ने उपवास रखकर गोरक्षा के लिए सौम्य सत्याग्रह की शुरूआत की। **वह सत्याग्रह 18 साल तक चलता रहा।**

गोवध बन्दी आन्दोलन और सत्याग्रहों का ही प्रभाव था कि **अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने धर्मपाल की अध्यक्षता में गो-पशु आयोग बनाया।** धर्मपाल ने जल्द ही आयोग की सीमाएं पहचान लीं। वे समझ गए कि मसले को टालने के लिए आयोग बनाया गया है। सरकार गोवंश की रक्षा के प्रति ईमानदार नहीं थी। उन्होंने यह अनुभव करते ही आयोग से इस्तीफा दे दिया। **धर्मपाल मानते थे और यह सच भी है कि गोवध पर पूरा प्रतिबन्ध लगना चाहिए।** इसके लिए कानून हो। नेहरु के जमाने में सुप्रीम कोर्ट से थोड़ी अड़चन थी। तत्कालीन प्रधानमन्त्री को इसका बहाना भी मिल जाता था। इस समय वह अड़चन सुप्रीम कोर्ट ने खुद दूर कर दी है।

गुजरात में गोवध बन्दी पर रोक नरेन्द्र मोदी की सरकार ने लगाई। जिस पर गुजरात हाई कोर्ट ने फैसला सुनाया कि पूरी रोक नहीं लगाई जा सकती। 2005 में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार के कानून को सही ठहराया। अगर गुजरात में पूरी रोक लगाई जा सकती है तो प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी केन्द्रीय कानून बनाकर पूरे देश में उसे लागू क्यों नहीं कर सकते?

अगर मोदी सरकार ऐसा निर्णय करती है तो खेती, पशुपालन और गांव की पुनर्रचना का वह सपना साकार हो सकता है जिसका सम्बन्ध स्वराज्य और राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना से है। ●●●

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही **शीघ्र शुल्क भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।** डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी. पी. भेजने में अब ३० रुपये लगते हैं।

अत: **मनीआर्डर** या **बैंक ड्राफ्ट** अथवा **चैक द्वारा "जनज्ञान"** के नाम शुल्क भेजें।

अथवा

आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

वार्षिक शुल्क-२००/-रु0, द्विवार्षिक-३८०/-रु०, पांच वर्ष-९००/-रु० और आजीवन ३१००/-रु० हैं।

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ....., पिन कोड.....तथा मोबाइल नम्बर ....अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही दें!

धन्यवाद....... **-सम्पादक**

राजनीति

अमित शाह दोषमुक्त

–अरुण जेटली

मैं उन कुछ लोगों में शामिल था जो पिछले तीन वर्ष से लगातार एक ही बात कह रहे थे कि अमित शाह पर "बिना किसी सबूत" के मुकदमा चलाया जा रहा है। सबूत का विस्तार से अध्ययन किए बिना, मीडिया ने सीबीआई की जानकारी के अनुसार रिपोर्ट किया। यहां तक कि मीडिया के लिए सीबीआई की फाइल में की गई एक महत्वपूर्ण टिप्पणी कोई खबर नहीं थी कि अमित शाह को फंसाना जरूरी है ताकि गुजरात के तत्कालीन मुख्यमन्त्री को फंसाया जा सके। मुझे संतोष इस बात का है कि भारत में स्वतन्त्र न्याय प्रणाली है जिसने अमित शाह को दोषमुक्त ठहराया।

मुम्बई में सीबीआई की विशेष अदालत ने **भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति की कथित हत्या में शामिल होने सम्बन्धी मामले में सभी आरोपों से बरी कर दिया है।** मैं इस मामले की जांच शुरू होने, आरोपपत्र दायर होने, अमित शाह की गिरफ्तारी और उन्हें जमानत दिए जाने के समय से ही इस पर लगातार नजर रखे हुए हूं। **मैंने राज्य सभा में विपक्षी नेता होने की हैसियत से तत्कालीन प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह को 27 सितम्बर 2013 को एक पत्र लिखा था। पत्र में मैंने भाजपा नेतृत्व के खिलाफ सीबीआई का दुरुपयोग करने की बात कही थी।** उस पत्र में मैंने इन दो मामलों के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा था–

"सोहराबुद्दीन मुठभेड़ मामला"

वह मुठभेड़ जिसमें सोहराबुद्दीन शेख मारा गया वह एक ऐसी कार्रवाई थी जो केन्द्र सरकार के गुप्तचर ब्यूरो के निर्देश पर की गई थी। **यह परिपाटी रही है कि जब गुप्तचर ब्यूरो को कोई जानकारी मिलती है और वह धीरे-धीरे उस पर आगे बढ़ती है,** तो वह निशाने के प्रति सतर्कता बरतती है। तत्पश्चात निशाने को गिरफ्तार करने का जब एक अवसर सामने आता है तो उस कार्य में राज्य पुलिस को शामिल किया जाता है। **सोहराबुद्दीन कुख्यात माफिया था जो गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान में सक्रिय था और उसे पकड़वाने के लिए मध्यप्रदेश ने ईनाम घोषित कर रखा था। वह अवैध हथियारों का डीलर था। टाडा के अन्तर्गत भी उसे दोषी ठहराया गया था।**

मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा उज्जैन जिले में झरनिया गांव स्थित उसके परिसरों में ली गई तलाशी में 40 से ज्यादा एके-56 राइफलें, सैकड़ों एके-56 के कारतूस और सैकड़ों हथगोले मिले। विभिन्न राज्य सरकारों की पुलिस एजेंसियों ने उसे भगोड़ा घोषित कर रखा था।

मुठभेड़ के बाद 24/25-11-2005 को उसके भाई ने उच्चतम न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की। यह रिट याचिका भी कांग्रेस द्वारा प्रायोजित थी। भारत के तत्कालीन अतिरिक्त सॉलीसीटर जनरल, श्री गोपाल सुब्रमण्ह्यम पहले से सोचे-समझे और पूर्व नियोजित तरीके से, पहले दिन अदालत में उपस्थित होकर केन्द्र सरकार से निर्देश लेने को तैयार हो गए। इसके बाद एटॉर्नी जनरल भारत सरकार के लिए उपस्थित हुए और गोपाल सुब्रमण्ह्यम ने उनकी नियुक्ति करने वाली अदालत के आदेश के बिना खुद को एमिकस ब्यूरो मनोनीत कर लिया। भारत सरकार मामले की जांच सीबीआई को सौंपने के लिए तैयार हो गई। हालांकि केन्द्र सरकार को सिर्फ एक औपचारिक पक्ष होना चाहिए था, तत्कालीन एटॉर्नी जनरल उपस्थित होते रहे और स्थगित प्रस्तावों का विरोध करते रहे। चूंकि सीबीआई के निष्पक्ष होने को लेकर सवाल उठाए जाते रहे हैं, उच्चतम न्यायालय ने अपनी देख-रेख में राज्य पुलिस में गुजरात पुलिस के अधिकारियों की एक टीम से जांच कराने का आदेश दे दिया। **राज्य की, माननीय उच्चतम न्यायालय की देख-रेख में वैज्ञानिक तरीके से जांच की और तीन आईपीएस अधिकारियों सहित अनेक पुलिस अधिकारियों को फंसाया और गिरफ्तार कर लिया।**

केन्द्र और एमिकस ब्यूरो श्री गोपाल सुब्रमण्ह्यम और अन्य की दलीलें सुनने पर, उच्चतम न्यायालय ने यह मामला सीबीआई को सौंप दिया। **जिस आधार पर उच्चतम न्यायालय ने यह मामला सीबीआई को सौंपा था, वह यह था कि जांच में अन्तर्राज्यीय जटिलताएं हैं और मामले में आन्ध्रप्रदेश के दृष्टिकोण की जांच नहीं की गई है।** वास्तव में आन्ध्र प्रदेश में कांग्रेस सरकार ने गुजरात पुलिस को जांच में सहयोग नहीं किया जो रिकॉर्ड में है।

सीबीआई ने मामले की जांच की लेकिन उन चार

बिन्दुओं की जांच नहीं की जिनके आधार पर यह मामला सीबीआई को सौंपा गया था जो बिन्दु गुजरात पुलिस की जांच में शामिल नहीं थे। इस मामले में आन्ध्र प्रदेश के दृष्टिकोण की गम्भीरता से जांच नहीं की गई। लगता है कि **सीबीआई का उद्देश्य गुजरात के राजनैतिक संस्थान को फंसाना, भारत की शासन व्यवस्था के संघीय चरित्र की बनावट को खारिज करना था।** सीबीआई ने गुजरात के तत्कालीन गृह मन्त्री श्री अमित शाह और साथ ही कानून मन्त्री, परिवहन और संसदीय कार्य मन्त्री को निशाना बनाया और **उसका इरादा आखिर में गुजरात के मुख्यमन्त्री नरेन्द्र मोदी को फंसाना था।**

चौंकाने वाली बात तो ये है, जब सीबीआई के कानून विभाग ने बताया कि श्री अमितशाह के खिलाफ कोई मामला नहीं है, यही बात सीबीआई के पर्यवेक्षी अधिकारी ने इस "टिप्पणी" के साथ कही कि अमित शाह की गिरफ्तारी से सीबीआई के पास कुछ और गवाह खासतौर से पुलिस अधिकारी आ जाएंगे क्योंकि वे डरे हुए होंगे। उन्होंने यह भी **कहा कि अमित शाह को गिरफ्तार करना आवश्यक है क्योंकि पूछताछ के अन्तिम लक्ष्य नरेन्द्र मोदी तक पहुंचने के लिए ऐसा करना जरूरी है।** इस टिप्पणी को सीबीआई के निदेशक श्री अश्विनी कुमार ने मंजूरी दे दी।

सीबीआई ने मुकदमा चलाने लायक सबूतों के बिना अमित शाह को गिरफ्तार कर लिया। **अमित शाह को गिरफ्तार करने के लिए उन्होंने गुजरात के दो भू- माफियाओं रमनभाई पटेल और दशरथ भाई पटेल की झूठी गवाही पर भरोसा किया।** आरोपपत्र में सीबीआई की थ्योरी के अनुसार, श्री अमित शाह ने मुठभेड़ के छह महीने बाद दोनों को कथित तौर बताया था कि सोहराबुद्दीन ने खुद के लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। इस बात को न्याय सम्बन्धी असाधारण स्वीकारोक्ति के रूप में शामिल कर लिया गया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि **रमन भाई पटेल और दशरथ भाई पटेल दोनों का आपराधिक रिकॉर्ड रहा है और दोनों के खिलाफ गुजरात में आपराधिक मामले चल रहे हैं।**

श्री अमित शाह के खिलाफ गवाही देने पर इन दोनों को गुजरात कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री शंकर सिंह वघेला की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में बधाई दी गई। इन दोनों गवाहों की गवाही उन्हें पासा (पीएएसए) हिरासत में मदद करने के लिए उनसे जबरन वसूली पर आधारित थी। गुजरात सरकार के रिकॉर्ड से पता चलता है कि पासा के अन्तर्गत इन दोनों व्यक्तियों को हिरासत में लेने का कभी विचार ही नहीं किया गया। **दोनों गवाहों ने यह भी दावा किया है कि उन्होंने किसी अजय पटेल के जरिए तीन किश्तों में श्री अमित शाह को 75-75 लाख रुपए दिए** और इसके लिए उन्होंने अपने बयान में कुछ तारीखों का जिक्र किया है। उन्होंने कुछ तारीखें बताई हैं जब उन्होंने कथित रूप से कथित धनराशि श्री अजय पटेल को खुद जाकर सौंपी। **उन्होंने यह भी दावा किया है कि वे उन सभी तारीखों पर मौजूद थे। यह गवाही अन्य बातों के अलावा इस आधार पर झूठी है कि कुछ तारीखों पर अजय पटेल भारत में नहीं थे और इस तथ्य की उनके पासपोर्ट से पुष्टि होती है।**

श्री अमित शाह के खिलाफ दायर आरोपपत्र में लगाए गए ओछे आरोपों की यह वास्तविकता है। श्री अमित शाह को गुजरात उच्च न्यायालय ने इस आरोपपत्र पर जमानत दे दी और अन्य बातों के अलावा विस्तार से कहा कि **श्री अमित शाह के खिलाफ प्रथम दृष्टया कोई मामला नहीं बनता है। लेकिन सीबीआई ने इस आदेश को चुनौती दी और सीबीआई के अनुरोध पर, उच्चतम न्यायालय ने आदेश दिया कि श्री अमित शाह गुजरात से बाहर और सभी राजनैतिक गतिविधियों से दूर रहें। वह दो वर्ष की अवधि तक गुजरात से बाहर रहे।** उच्च न्यायालय के इस आदेश को उच्चतम न्यायालय ने बरकरार रखा।

"तुलसी प्रजापति मुठभेड़"

तुलसी प्रजापति का मामला सोहराबुद्दीन मामले का सीबीआई द्वारा किया गया विस्तार है। सीबीआई ने अदालत में इस मामले की जांच के लिए विशेष निवेदन किया। **उनका तथाकथित मामला यह था कि तुलसी प्रजापति गिरफ्तारी और पुलिस अधिकारियों की हिरासत से सोहराबुद्दीन के लापता होने के मामले में गवाह था तथा परिणामस्वरूप गुजरात पुलिस ने उसका सफाया कर दिया।**

सीबीआई ने इस मामले में श्री अमित शाह के खिलाफ जिस एकमात्र सबूत का जिक्र किया है वह यह है कि **भारतीय पुलिस सेवा के एक अधिकारी श्री आर. के. पांडियन से नियमित सम्पर्क में थे जो इस मामले में एक आरोपी हैं। विस्तृत समसामयिक रिकॉर्ड बताते हैं कि श्री आर. के. पांडियन की श्री अमित शाह के साथ इस घटना से काफी समय पहले से और घटना के बाद रोजाना टेलीफोन पर बातचीत होती थी** क्योंकि वह राजनैतिक आन्दोलनों

और राजनैतिक गतिविधियों पर नज़र रखने वाली राज्य पुलिस के पुलिस अधीक्षक, गुप्तचर ब्यूरो का काम भी देख रहे थे। **किसी भी राज्य के गृह मन्त्री के लिए राजनैतिक आन्दोलनों और राजनैतिक गतिविधियों पर नज़र रखने वाली राज्य पुलिस के पुलिस अधीक्षक, गुप्तचर ब्यूरो (खुफिया) के साथ सम्पर्क में रहना जरूरी है** क्योंकि उसे नियमित आधार पर इन गतिविधियों के बारे में खुद जानकारी लेनी होती है। बिना किसी सबूत के तुलसी प्रजापति मामले में श्री अमित शाह के खिलाफ एक अलग आरोपपत्र दायर कर दिया गया। यह बात बेहद महत्वपूर्ण तरीके से गौर करने लायक है, हालांकि सीबीआई उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर काम कर रही थी और उसे तुलसी प्रजापति मामले में **जांच का काम 11-04-2011 से 6 महीने के भीतर पूरा करने को कहा गया था, सीबीआई ने जान-बूझ कर राजनैतिक साजिश के तहत निर्देश का पालन नहीं किया और 04-09-2012 को आरोपपत्र दायर कर दिया ताकि गुजरात विधानसभा के चुनाव से ठीक कुछ महीने पहले श्री अमित शाह को एक बार फिर गिरफ्तार किया जा सके,** जो दिसम्बर 2012 से पहले होने थे। श्री अमित शाह को माननीय उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाना पड़ा। **उच्चतम न्यायालय ने अपने दिनांक 08-04-2013 के आदेश में कहा कि इस मामले में अलग आरोपपत्र दायर नहीं किया जा सकता** क्योंकि सीबीआई ने खुद आरोप लगाया है कि दोनों मामले एक जैसे हैं और उसने आरोपपत्र को सोहराबुद्दीन मामले के आरोपपत्र के साथ मिला दिया जिसके परिणामस्वरूप **सीबीआई एक बार फिर श्री अमित शाह को गिरफ्तार नहीं कर सकी।**

"तुलसी प्रजापति और राजस्थान के पूर्व गृह मन्त्री श्री गुलाबचन्द कटारिया की गिरफ्तारी"

श्री गुलाब चंद कटारिया राजस्थान के गृह मन्त्री रह चुके हैं और इस समय पार्टी की केन्द्रीय कार्य समिति के सदस्य हैं। सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति नाम के किसी शख्स के बारे में उनके पास दूर-दूर तक कोई जानकारी नहीं थी। सीबीआई ने गुलाब चंद कटारिया के खिलाफ पूरक आरोपपत्र दायर कर दिया जिसमें उसने **आरोप लगाया कि तुलसी प्रजापति का सफाया करने का गुलाब चंद कटारिया का मकसद राजस्थान के संगमरमर विक्रेता आर.के. मार्बल्स से धन ऐंठना था।**

सीबीआई के अनुसार इसके दो मकसद थे; पहला सोहराबुद्दीन मामले में गवाह को सफाया करने के लिए गुजरात पुलिस उसका सफाया करना चाहती थी **और राजस्थान के गृह मन्त्री संगमरमर विक्रेता से धन ऐंठने के लिए उसका सफाया करना चाहते थे।** कैसा संयोग है। सीबीआई ने आरोप लगाया कि श्री गुलाब चंद कटारिया ने गुजरात पुलिस के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री डी. जी. बंजारा से कथित तौर पर 26/12/2005 और 28/12/2005 के बीच उदयपुर के सर्किट हाउस में कथित मुलाकात की थी। उनकी उपस्थिति के बारे में सीबीआई के पास जो सबूत हैं वह यह है कि श्री गुलाब चंद कटारिया का निजी सचिव उस अवधि के दौरान उसी सर्किट हाउस में रुका हुआ था और श्री डी.जी. बंजारा भी उसी सर्किट हाउस में ठहरे हुए थे। लेकिन राजस्थान सरकार के रिकॉर्ड बताते हैं कि श्री गुलाब चंद कटारिया अपनी पत्नी के साथ 25/12/2005 को मुम्बई चले गए थे और वह 2/1/2006 तक वहां रहे। उन्होंने भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में भाग लिया और उसके बाद राष्ट्रीय परिषद की बैठक में शामिल हुए तथा अपनी पत्नी के साथ नया वर्ष मनाने के बाद वे 2/1/2006 को जयपुर लौट आए।"

ऊपर दी गई बातों से यह **स्पष्ट है कि अमित शाह के खिलाफ तत्कालीन राजनैतिक सरकार के इशारे पर दायर किए गए कानूनी तौर पर उनके खिलाफ कोई सबूत स्वीकार करने योग्य नहीं है।** बरी करने सम्बन्धी अमित शाह की अर्जी का सीबीआई और सोहराबुद्दीन के भाई दोनों ने विरोध किया था। अदालत ने दोनों के वकीलों को सुना। आरोप निराधार थे। यह सच्चाई चिन्ता का विषय है कि सीबीआई ने उस समय अपना दुरुपयोग होने दिया।

चूंकि मैंने जांच के दौरान और आरोपपत्र दायर होने के बाद कथित सबूत का विश्लेषण किया, मैं उन कुछ लोगों में शामिल था जो पिछले तीन वर्ष से लगातार एक ही बात कह रहे थे कि **अमित शाह पर "बिना किसी सबूत" के मुकदमा चलाया जा रहा है।** सबूत का विस्तार से अध्ययन किए बिना, मीडिया ने सीबीआई की जानकारी के अनुसार रिपोर्ट किया। यहां तक कि **मीडिया के लिए सीबीआई की फाइल में की गई एक महत्वपूर्ण टिप्पणी कोई खबर नहीं थी कि अमित शाह को फंसाना जरूरी है ताकि गुजरात के तत्कानीन मुख्यमन्त्री को फंसाया जा सके!** मुझे सन्तोष इस बात का है कि **भारत में स्वतन्त्र न्याय प्रणाली है जिसने अमित शाह को दोषमुक्त ठहराया।**

–(लेखक केन्द्रीय वित्त एवं सूचना प्रसारण मन्त्री हैं।)

हिन्दू धर्मरक्षक वीर बन्दा वैरागी

–सुन्दरदास

(बन्दा वीर वैरागी स्वातन्त्र्य योद्धाओं में अति जाज्वल्यमान नक्षत्र थे, जिनके प्रकाश को उस समय के कुछ बेसमझ, कायर और देशद्रोही लोगों के षड्यन्त्र ने लील लिया। कौन थे ये और इसके पीछे के लोग?–इस बात की पूरी जानकारी प्रत्येक देशवासी को आज होनी चाहिए। देवतास्वरूप भाई परमानन्द की पुस्तक 'वीर वैरागी' इस विषय में एक ऐतिहासिक दस्तावेज का स्थान रखती है–(सम्पादक)

भारत वर्ष का इतिहास वीर पुरुषों की क्रान्तिकारी गाथाओं से भरा पड़ा है। इन महापुरुषों में वीर बन्दा वैरागी का स्थान बहुत ऊंचा है। **वीर बन्दा वैरागी के समान भारत क्या, दुनिया के किसी भी देश के इतिहास में ऐसी वीर गाथा नहीं मिलती**, जो इनके जीवन में मिलती है। **वह एक तरफ तो सेनापति, संगठनकर्ता थे, दूसरी तरफ एक राजपुरुष और उत्तम न्यायकर्ता थे तथा तीसरी ओर एक सन्त-तपस्वी भी थे।** इन गुणों के कारण आज भी वे हमारे हृदय में सम्राटों के सम्राट हैं। वे कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे। उनका **न केवल वीर पुरुष के रूप में ही बहुत ऊंचा स्थान है, अपितु वे ईश्वर-भक्ति, ज्ञान और धार्मिक शक्ति से भी भरपूर थे ओर राजसत्ता प्राप्त करने पर भी उन्होंने वैराग्य नहीं छोड़ा।**

वीर वैरागी का जन्म कश्मीर के पुंछ जिले के राजौरी में एक किसान डोगरा राजपूत राजा श्रीरामदेव के घर 27 अक्टूबर सन् 1670 को हुआ था।

इनका बचपन का नाम लक्ष्मणदेव था। वे बचपन से ही चंचल स्वभाव के थे। इनका क्रीड़ास्थल घर-आंगन न रहकर जंगल बना। **जब वे 14 वर्ष के हुए तो एक दिन शिकार करते समय उनके बाण से एक हिरणी का वध हो गया। हिरणी के पेट से दो बच्चे निकले, जो उसी समय तड़प-तड़प कर मर गए। यह देखकर लक्ष्मण को बहुत दुःख हुआ और इस कारण उन्होंने घरबार छोड़ दिया। वैराग्य से भरे हुए साधु वैरागी ने जानकीदास के पास जाकर वैराग्य ज्ञान की दीक्षा ली।** वहां उनका नाम माधोदास वैरागी रखा गया। उन्होंने वैराग्य धारण कर ईश्वर-भक्ति में वर्षों तपस्या की। इसके बाद वे तीर्थ यात्रा के लिए हरिद्वार, बद्रीनाथ, काशी होते हुए दक्षिण में गोदावरी नदी के तट पर नान्देड़ पहुंचे। वहां उन्होंने अपना एक स्थायी आश्रम बनाया।

वैरागी की तपस्या का प्रभाव इतना बढ़ गया कि इनका नाम सारे क्षेत्र में विख्यात हो गया। वहां के लोगों में इनके प्रति अटूट श्रद्धा हो गई। वे गरीबों और बीमारों की सहायता करते। वहां के लोग इनके प्रति अटूट श्रद्धा से नतमस्तक होते। **श्री माधोदास वैरागी इतने विख्यात हो चुके थे कि हजारों की संख्या में लोग इतने दर्शन करने आते। वह उन लोगों को सद्भावना, सम्मान देते, लेकिन पाखण्डियों को आश्रय नहीं देते थे। वैरागी सांसारिक मोह-माया छोड़ चुके थे, लेकिन गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज के साथ उनकी भेंट ने उनके जीवन की धारा को ही बदल दिया।**

गुरु महाराज जी के साथ उनकी भेंट 1708 ई. में हुई थी। गुरुजी ने बन्दा को पंजाब की परिस्थितियां बताई और उन्हें उत्तर भारत जाने की ओर प्रेरणा दी। वैरागी यह सब सुनकर द्रवित हो उठे और उत्तर की जाने को तैयार हो गए। इस समय उनकी बचपन की शिक्षा काम आई। उस शिक्षा के कारण **वे न सिर्फ वीर साहसी योद्धा थे, बल्कि कुशल सेनापति भी थे। गुरुजी ने उन्हें 25 व्यक्ति, एक तलवार और पांच तीर दिए। उनके कुशल सेनापति होने का ही परिणाम है कि उन्होंने पूरी योजना तैयार की कि वहां से सेना का गठन किया जा सकता है** और साधन जुटाए जा सकते हैं। **वह भरतपुर से राजस्थान होते हुए शक्तिशाली सेना लेकर पंजाब पहुंचे और शत्रु पर अचानक टूट पड़े।** जिन लोगों ने गुरु जी को त्रस्त किया था, उन सबसे बन्दा ने चुन-चुनकर बदला लिया।

उन्होंने फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, भिवानी और सोनीपत पर विजय प्राप्त की। इसके बाद सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई और गुरुजी के साहबजादों का बदला लिया। वहां के सूबेदार वजीर खां और दीवान सुच्चानन्द को समाप्त कर दिया, क्योंकि वजीर खां ने ही गुरु गोविन्दसिंह जी के पुत्रों को दीवारों में चुनने की आज्ञा दी थी और दीवान सुच्चानन्द ने सूबेदार को सलाह दी थी कि

दुश्मनों के बच्चों को समाप्त करना अच्छा है, ताकि आगे से भय न रहे।

इसके बाद वैरागी ने जलालुद्दीन के गांव पर हमला किया। उसके दस हजार सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया तथा सढौरा पर विजय पाई।

इस प्रकार वैरागी ने आठ साल तक लगातार युद्ध किया और शत्रुओं से बदला लिया। सन् 1719 ई. में हिमाचल के राजा उदयसिंह की पुत्री से विवाह किया। विवाह के उपरान्त भी उन्होंने धर्मयुद्ध जारी रखा। जब दिल्ली के बादशाह फर्रुखसीयर ने देखा कि बंदा ने पंजाब में अपनी शक्ति बढ़ा ली है और छोटे-छोटे क्षेत्र फतह कर लिए हैं तो बादशाह को भय हुआ कि कहीं वैरागी दिल्ली पर हमला न कर दे। इस भय को दूर करने के लिए उसने **अपने दरबारियों को बुलाया और कहा कि जो वैरागी को पकड़कर लाएगा, उसको बड़ी जागीर दी जाएगी। लेकिन किसी की हिम्मत न हुई कि वह बंदा वैरागी को पकड़ सके।**

अन्त में, यह **निश्चय हुआ कि वैरागी के थियों में फूट डाली जाए। इस षडयन्त्र में फर्रुखसीयर गी और उसके साथियों में फूट डालने में सफल गया।** बन्दा के कुछ साथी उससे अलग हो गए और न्होंने बादशाह से मिलकर बन्दा की शक्ति को कमजोर कर दिया।

वैरागी ने उन्हें बहुत समझाया कि बादशाह तुम्हें धोखा दे रहा है। और वह तुम्हारा वध कर सकता है। इससे देश को भारी क्षति होगी। परन्तु वे लोग लोभ-लालच के जाल में फंस चुके थे।

इस हरकत से देश को भारी हानि हुई। वीर वैरागी का बना-बनाया काम बिगड़ गया। **घर की फूट के कारण सारे राष्ट्र को तबाही का सामना करना पड़ा।** शक्ति कम होने के कारण वीर वैरागी पकड़ लिए गए और उनको दिल्ली में कैदी बना कर लाया गया। **उनको अनेक कष्ट दिए गए, यहां तक कि उनके बच्चे का कलेजा निकालकर उनके मुँह में ठूँसा गया.....** लेकिन बन्दा ने मुंह से उफ तक न की और न ही उनके पांव डगमगाए।

आज 344 वर्ष से भी अधिक समय हो गया है, लेकिन इतिहास साक्षी है कि जहां वे वीर योद्धा, संन्यासी तपस्वी और वैरागी थे, वहां वह देश तथा समाज के सुधारक भी थे। उन्होंने जागीरदारी को खत्म किया, सरहिन्द को फतह करके लोहगढ़ को राजधानी बनाया। तत्कालीन इतिहासकारों ने इन्हें एक वीर योद्धा माना है। इन्होंने देश को विदेशी हुकूमत से आजाद कराने के लिए जैसे-को-तैसा वाली नीति पर चलकर जालिमों से बदला लेते हुए जीवनभर संघर्ष किया।

भारत मां के सपूत ने धर्मयुद्ध किया। इन्होंने जो रास्ता अपने लिए निर्धारित किया, उस पर अन्त तक चलते रहे।

बड़ी से बड़ी कठिनाई में भी उन्होंने अपने लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग को कभी नहीं त्यागा। **इतिहास साक्षी है कि इन्होंने भक्तिमार्ग और राजमार्ग को अपनाया तथा भारत की गुलामी की जंजीरों को काटते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया।**

इन्होंने अपने **सात सौ चालीस साथियों के साथ दिल्ली के चांदनी चौक में बलिदान देकर अपना और अपने साथियों का जीवन सार्थक किया। इनके जीवन के बलिदान से राष्ट्र में नई जागृति आई और सम्मान व गौरव की चेतना जागी, जिससे प्रेरणा पाकर देशवासी स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी बने।** परिणामस्वरूप सन् 1757 ई. की पलासी की लड़ाई से लेकर 1857 की क्रान्ति तक स्वतन्त्रता संग्राम ने विकराल रूप धारण कर लिया।

इसके पश्चात् विदेशी मुगल शासन जहां 1757 ई. में समाप्त हो चुका था, वहां 1857 में अंग्रेजी शासन भी हिल गया था। यह उनकी प्रेरणा का परिणाम था। 1857 से 1947 ई. तक स्वतन्त्रता की क्रान्ति का दौर चला और देश स्वतन्त्र हुआ। यह इन्हीं जैसे महापुरुषों के बलिदानों का परिणाम है।

उस वीर पुरुष ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-इन चारों पुरुषार्थों पर चलकर अपना जीवन सार्थक किया। धर्म-मर्यादा के बन्धन में बंध कर इस परम्परा को आगे बढ़ाया। **धर्म के कंटीले धरातल पर पांव रखकर चलने से जो पीड़ा हुई, उसे वीर बन्दा वैरागी ने धैर्य से सहा।** धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण इस वीर ने धर्म और धैर्य रूपी अग्निकुण्ड में अपना जीवन होम दिया। उस होम की अग्नि ज्वाला की लपटें आज भी दिखाई देती हैं।

-पुराने क्वार्टर, सिंगल स्टोरी, रमेश नगर, नई दिल्ली

संस्मरण

रज्जू भैया

–आलोक कुमार 'एडवोकेट' (प्रान्त सह संघचालक, दिल्ली)

एक भावपूर्ण कार्यक्रम में, देवेन्द्र जी व बृजकिशोर शर्मा जी द्वारा सम्पादित पुस्तक **''हमारे रज्जू भैया''** का लोकार्पण हुआ। **श्री अशोक सिंघल ने रज्जू भैया पर बहुत भावपूर्ण व अन्तरंग संस्मरण सुनाए।**

29 जनवरी, 1922 को शाहजहांपुर (उ.प्र.) में जन्मे 'रज्जू भैया' (प्रो. राजेन्द्र सिंह) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चौथे सर संघचालक थे। पू सरसंघचालक के उद्‌बोधन ने रज्जू भैया को मानो प्रत्यक्ष हमारे हृदयों में पुनः मूर्तिमंत कर दिया। मेरे मन में तत्कालीन सह सरकार्यवाहक रज्जू भैया की कुछ प्रेरक स्मृतियां सहज कौंध गईं। **बाईस वर्ष पूर्व का वह समय जब सरकार की उदासीनता व न्यायालय की देरी से उत्तेजित, भावप्रवण कार सेवकों ने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बने ढांचे को गिरा दिया था। परिणामस्वरूप, तत्कालीन सरकार ने तीन संगठनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बजरंग दल और विश्व हिन्दू परिषद पर प्रतिबन्ध लगा दिया।**

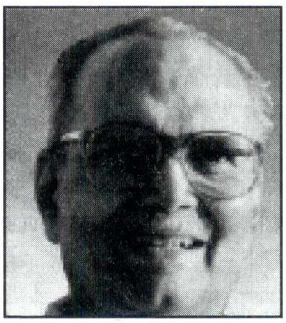

उत्सुकतावश अगले ही दिन मैंने उससे सम्बन्धित कानून का गम्भीरता और विस्तार से अध्ययन कर लिया। **यह संयोग ही था कि प्रतिबन्ध के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करने के लिए रज्जू भैया किसी वकील से सम्पर्क करना चाह रहे थे।** सम्भवत: सबसे पहले मेरा फोन मिला होगा। मैं रज्जू भैया के पास गया। उन्होंने मुझसे कानून की विस्तार से जानकारी ली।

रज्जू भैया ने बताया कि शांतिभूषण जी ने इस मुकदमे को लड़ने की इच्छा व्यक्त की है। **मैंने विनम्रता से कहा, ''रज्जू भैया, सम्भवतः इस मुकदमे में ऐसा वकील होना चाहिए जिसकी बुद्धि व हृदय दोनों इस काम में हों।''** रज्जू भैया ने कुछ क्षण सोचा व सिर हिला दिया। **हमारे सौभाग्य से, इस मुकदमे को लड़ने की जिम्मेवारी वरिष्ठ अधिवक्ता व चांदनी चौक के संघचालक श्री रामफल बंसल व मुझे सौंपी गई।** इस मुकदमे को लड़ने में हमें निरंतर उनका मार्गदर्शन मिला, इस आग्रह के साथ कि **'आप लोग कानून के विशेषज्ञ हैं, जैसा ठीक लगे, वैसा ही करना।'**

'श्री रज्जू भैया इस मुकदमे में संघ के गवाह भी थे। पत्रावली एक हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों की थी। कहीं से भी ज़िरह हो सकती थी। विषद तैयारी की आवश्यकता थी। उन्होंने कई बैठकों में इस गवाही की तैयारी की।

> ***उन प्रश्नों में कुछ ऐसे प्रश्न भी थे जिनका उत्तर हमारे पास नहीं था, लेकिन रज्जू भैया ने कहा, ''कोई बात नहीं, सही जवाब मिल ही जाएंगे।''** और **अदालत में उन्होंने उन प्रश्नों का जिस सहजता से सही-सही जवाब दिया, वो उनके स्वाध्याय, तर्कशीलता और ज्ञान का स्पष्ट उदाहरण था। मुकदमे में संघ की विजय में यह गवाही बहुत महत्वपूर्ण थी।***

निश्चित दिन अदालत में रज्जू भैया गवाही के लिए पधारे थे। उनके व्यक्तित्व की गरिमा का प्रभाव अदालत के अन्दर सभी पर स्पष्ट दिखाई पड़ा। रज्जू भैया से सरकारी वकील ज़िरह कर रहे थे कि भोजनावकाश का समय हो गया। विपक्ष के वकील को तीन बजे अपने किसी नज़दीकी सम्बन्धी की तेरहवीं में शामिल होना था। उसने मुकदमा अगले दिन रखने की प्रार्थना की। रज्जू भैया को रात की गाड़ी से बाहर जाना था, इसलिए उन्होंने अगले दि आने में असमर्थता बताई। **जज ने रा निकाला, ''हम भोजनावकाश स्थगि करते हैं, फिर उन्होंने रज्जू भैया के माथे पर हल्की सी शिकन देखी और पूछा, ''आप कुछ परेशान से दिख रहे हैं।'' रज्जू भैया ने कहा, ''मुझे डायबिटीज़ है और इसलिए मुझे ठीक वक्त पर खाना खाना होता है।'' जज महोदय ने कहा, ''ठीक है, मैं पंद्रह मिनट के लिए उठता हूं। आप भोजन करें। पूरा होने पर खबर भिजवाएं जिससे अदालत की कार्रवाई जारी रखी जा सके।''** रज्जू भैया का लंच समय से पहले खत्म हो गया और अदालत की कार्रवाई जारी हो गई। **वकालत के अब तक के मेरे लम्बे कार्यकाल में, अदालती कार्रवाई के दौरान यह पहला अवसर था जब गवाह की असुविधा देखते हुए जज ने लंच में कार्रवाई जारी रखी और विपक्ष के वकील ने भी उस पर अपनी सहमति दे दी। यह था-रज्जू भैया के भव्य व्यक्तित्व का प्रभामंडल।**

एक दिन मैं अपने कार्यालय में था। **मेरे पास एक फोन आया। मैंने सामान्य तौर पर उसे उठाया और कहा ,''हां जी।'' दूसरी ओर से उत्तर आया, ''मैं रज्जू भैया बोल रहा हूं।''** जबकि इतने बड़े व्यक्तित्व के सन्दर्भ में प्रक्रिया यह होती है कि कोई पहले फोन पर बताता है कि फलां मान्यवर आपसे बात करना चाहते

हैं। या, यह कि वह बात करना चाहते हैं, अथवा उन्हें फोन कर लें।'' **वह रज्जू भैया थे, जिन्हें न प्रोटोकोल का अहसास था और न ही वह उसकी परवाह करते थे। एक आम स्वसंसेवक, एक सहज पुरुष थे।**

एक और स्मृति है। **बात उस समय की है जब मैं स्कूल की पढ़ाई के अन्तिम वर्ष में था या शायद कॉलेज जाने लगा था।** उन दिनों मैं गुरु जी की सेवा में नियुक्त था। श्री गुरु जी अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक के लिए दिल्ली पधारे थे। मैं उनका प्रबन्धक था। **एक दिन मैं गुरु जी के पास से लौट रहा था, रज्जू भैया उनके पास मिलने के लिए अन्दर जा रहे थे। उस समय तक मेरा उनके कोई औपचारिक परिचय नहीं था। बावजूद इसके वह मुझे देख कर अपनत्व से मुस्कुराए,** मेरे दाहिने बाजू को कंधे और कोहनी के बीच पकड़ा, फिर अपनी ओर हाथ से **इशारा करते हुए कहा, ''ऐसा स्वास्थ्य होना चाहिए।'' स्वास्थ्य को महत्व देने वाले इस रज्जू भैया ने संघ के कार्यों में स्वयं को इतना डुबो दिया कि खुद का शरीर खोखला कर लिया।** वह पर्किन्सन की बीमारी से ग्रस्त हो गए, उनकी अस्थियां इतनी जर्जर हो गई थीं कि मामूली चोट से चरमरा जाती थीं। **संघ कार्य के लिए अपने रक्त को भी पानी करने वाले पूज्य डॉक्टर जी के वह सच्चे वीरव्रती अनुयायी थे।**

रज्जू भैया केवल हाड़-मांस का शरीर नहीं थे अपितु स्वयं में **ध्येयनिष्ठ, संकल्प व मूर्तिमन्त आदर्शवाद की साक्षात प्रतिमूर्ति थे।** पुरुषोत्तम दास टण्डन और लाल बहादुर शास्त्री जैसे राजनेताओं के साथ-साथ प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जैसे सन्तों का विश्वास और स्नेह भी उन्होंने अर्जित किया था। **बहुत सम्वेदनशील अन्तःकरण के साथ-साथ रज्जू भैया घोर यथार्थवादी भी थे।** वे किसी से भी कोई भी बात निस्संकोच कह देते थे और उनकी बात को टालना कठिन हो जाता था। **आपातकाल के बाद जनता पार्टी की सरकार में जब नाना जी देशमुख को उद्योग मन्त्री का पद देना निश्चित हो गया तो रज्जू भैया ने उनसे कहा कि-"नाना जी! अगर आप, अटल जी और आडवाणी जी-तीनों सरकार में चले जाएंगे तो बाहर रहकर संगठन को कौन सम्भालेगा?" नाना जी ने उनकी इच्छा का आदर करते हुए तुरन्त मन्त्री पद ठुकरा दिया।** और जनता पार्टी का महासचिव बनना स्वीकार किया। इस दृष्टि से देखें तो **रज्जू भैया सचमुच संघ परिवार के न केवल बोधि-वृक्ष अपितु सबको जोड़ने वाली कड़ी थे, नैतिक शक्ति और प्रभाव का स्रोत थे।** ❖❖❖

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम दस और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। **पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं।** उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। **विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से सम्बद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियाँ जनज्ञान की विशेषता है।**

- **यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।**
- **यह अभियान है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुँजाने का।**
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबन्धुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- आप अपने प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान का विज्ञापन भी जनज्ञान में दे सकते हैं!
- **यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुँचे जनज्ञान।**
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
  क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क-२००/-रु0, पांच वर्ष-९००/-रु0 और आजीवन ३१००/-रु0 हैं।

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" दिल्ली के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

–महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

<u>**गतांक से आगे....**</u>

लेकिन यह जंग अपने आखिरी मुकाम तक पहुंचती इससे पहले ही अंग्रेजों की कूटनीतिक चाल ने उनकी मति फेर दी और उनका सुर ही बदल गया। अब **उन्हें आजाद हिन्दुस्तान नहीं, बल्कि एक ऐसा आजाद मुल्क चाहिए था जो उनके मजहबी उसूलों के मुताबिक हो।**

जैसा कि आप जानते ही हैं, हमारा पुश्तैनी मकान सियालकोट में था, जो अब पाकिस्तान में है। उन दिनों भी उस इलाके में मुसलमानों की तादाद ज्यादा थी। **चूंकि मजहबी दंगा-फसाद काफी जोरों पर था, अतः उस समय हमारे सामने तो बड़ी मुसीबत खड़ी हो गयी। सियालकोट में मजहबी दंगा इस कदर भड़क उठा कि हमारा वहां रहना मुश्किल हो गया।** हम वहां पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बंटवारे की बात अखबारों में पढ़ते कि कभी मिस्टर जिन्ना की महात्मा गांधी के साथ मुलाकात होती, तो कभी महात्मा गांधी जिन्ना से मिलते। **'प्रताप' अखबार में महाशय कृष्ण यह लिखते रहते कि लोग यहां पड़े रहें कि चलें जाएं? मगर अपना पुश्तैनी मकान छोड़ना इतनी आसान बात भी तो नहीं थी।** एक साधारण आमदनी वाला आदमी जब कहीं एक छोटा-सा घर बनाता है, तो एक तरह से अपनी सारी जमा-पूंजी उस पर न्योछावर कर देता है, मगर **कितने बेरहम दिल वाले थे वे दंगा-फसाद करने वाले लोग, जो बस्तियां उजाड़कर मुस्करा रहे थे, लोगों की चीख-पुकार सुनकर ही जिन्हें मजा मिल रहा था।**

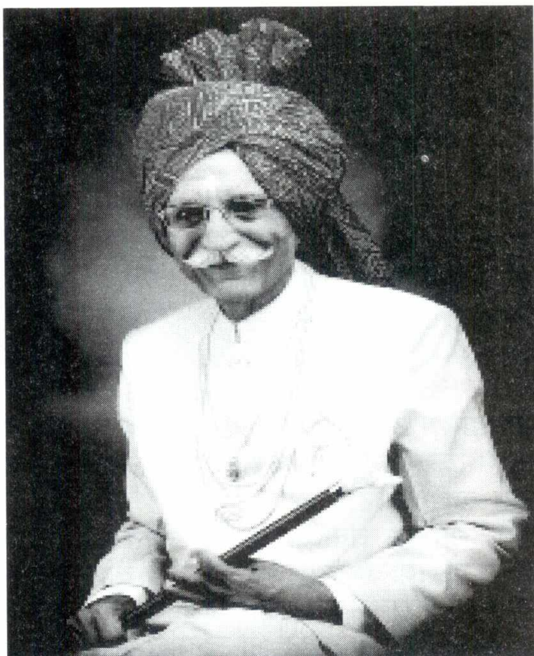

कहते हैं कि आदमी जब जानवर बन जाता है, तो जानवर से भी ज्यादा खूंखार हो जाता है। आपने यह बात केवल सुनी होगी, मगर मैंने अपनी इन्हीं आंखों से देखा है कि एक आदमी जहां जान बचाने के लिए भाग रहा है, वहीं उसी की तरह बनावट वाला एक दूसरा आदमी किसी भी कीमत पर उसे जिंदा छोड़ने को तैयार नहीं। उस बेचारे का कसूर सिर्फ इतना है कि उसका मजहब अलग है। **अपने गैर मजहबी होने की इतनी महंगी कीमत उसे चुकानी पड़ेगी, शायद सपने में भी उसने यह बात नहीं सोची होगी।........**

दंगे-फसाद ने उस जमाने में कुछ ऐसा भयानक रूप अख्तियार कर लिया कि लोगों की आंखों से नींद कोसों दूर जा चुकी थी, जान बचाने के लिए लोगों को सारी-सारी रात जागते हुए बितानी पड़ती थी। **जुर्म कुछ भी न था, मगर सजा-ए- मौत का खौफ हमेशा सताता रहता था। कब, किस गली में, किस पल, किस स्थिति में मौत इन्तजार में खड़ी मिल जाए, कह पाना मुश्किल था।**

उस जमाने में आ एस.एस.(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) हिन्दुओं की जमात थी। दस-ग्यारह साल पहले यह संस्था नागपुर से शुरू हुई थी। अगर यह संस्था न होती, तो यह कहना गलत न होगा कि आधे लोग भी उधर से जिन्दा बचकर भारत में नहीं आ सकते थे।

यह संस्था उन दिनों हर स्कूल में, हर मन्दिर में सुबह में शाखा लगाती थी। अपनी जिन्दगी से किसे प्यार नहीं होता है, **लोग अपनी जिन्दगी के लिए सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार हो जाते हैं, यहां तो बात बस शाखा में एकजुटता दिखाने की थी, अतः सब इसमें पूरे मन से भाग लेते।** घर-घर से लोग सुबह पांच बजे एक-दूसरे को जगाकर ले जाते।

अपने हाथों में लाठी लेकर हिन्दुओं को मिलकर साथ चलते देख मुसलमानों के मन में भी ऐसा ही भाव उछल-कूद मचाने लगा।.... क्रमशः.

स्वास्थ्य विचार

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्यायें

–डॉ. फणिभूषण दास

गतांक से आगे....

इन जांचों में ग्रासनलीय जठ रांत्रीय एवं ग्रहणीय दर्शन (**इसोफेगा गैस्ट्रो डुवाडेनोस्कोपी/ई.जी.डी.**), अवग्रहांत्रिक दर्शन (**सिगमोय-डोस्कोपी**) और बृहदांत्रिक दर्शन (**कोलोनोस्कोपी**) मुख्य है। सामान्यत: सभी व्यक्तियों में जठरांत्रिक प्रणाली (**गैस्ट्रोइनटेस्टाईनल सिस्टम**)की क्रिया विधि (फंक्शन) सुचारू रूप से चलती रहती है।

किन्तु, **वृद्ध व्यक्तियों में इस प्रणाली के विभिन्न अवयवों को विभिन्न रोगों से, विशेष कर कैंसर से ग्रसित होने की सम्भावना हमेशा ही रहती है।**

इन रोगों का निदान (**डायग्नोसिस**) शीघ्रता से करके उपयुक्त उपचार की व्यवस्था करना उनके व्याधि मुक्त जीवन के लिए आवश्यक होता है। जठरांत्रिक प्रणाली (**गैस्ट्रोइन टेस्टाईनल सिस्टम**) के रोगों के निदान (**डायग्नोसिस**) के लिए किए जाने वाले उपरोक्त तीनों परीक्षणों पर अलग-अलग विचार कर लेना उपयुक्त होगा।

ग्रासनलीय-जठरांत्रीय एवं ग्रहणीय दर्शन (ई. जी.डी.) : ग्रास नली (**इसोफेगस**), जठर/अमाशय (**स्टोमेक**) और ग्रहणी (**डुवाडेन**) में होने वाले रोगों की जांच और निदान (**डायग्नोसिस**) के लिए ग्रासनलीय-जठरांत्रीय-एवं ग्रहणीय (**इसोफेगोग्रेस्ट्रो डुवाडेनोस्कोपी / ई.जी.डी.**) दर्शन द्वारा इन अवयवों की जांच की जाती है जिसे शल्य क्रिया कक्ष (**ऑपरेटिंग रूम**) में सम्पन्न किया जाता है क्योंकि इस जांच के दौरान वेदना हारक विशेषज्ञ (**एनेस्थेसिस्ट**) द्वारा देखरेख तथा वेदनाशमन के लिए शामक (**सेडेटिम**) औषधियों की आवश्यकता होती है और ऐसी सुविधा शल्य चिकित्सा कक्ष (**औपरेटिंग रूम**) में उपलब्ध होती है।

इस प्रणाली में होने वाले रोगों की मौजूदगी की स्थिति में जीव ऊतकीय जांच (**बायेप्सी**) भी की जाती है जिससे इन रोगों का निदान पक्का हो जाता है और उपयुक्त उपचार की व्यवस्था सम्भव हो जाती है तथा व्याधिमुक्त वृद्धावस्था को अक्षुण्ण रखने में सहायता मिल जाती है।

अवग्रहांत्रिक दर्शन (सिगमोयडोस्कोपी): अवग्रहांत्रिक दर्शन (**सिगमोयडोस्कोपी**) एक सामान्य जांच है जिसे शल्य क्रिया कक्ष (**औपरेटिंग रूम**) में की जाती है लेकिन यह कहीं भी की जा सकती है क्योंकि इस जांच के लिए किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है। केवल एक एनिमा देने से ही इसकी तैयारी हो जाती है।

इस जांच से गुदा (**रेक्टम**) और अवग्रहांत्र (**सिग मोयडकोलोन**) के रोगों की जांच की जाती है और वहां पर मौजूद विकृति (**पैथोलोजी**) की जीव ऊतकीय जांच (**बायेप्सी**) भी की जाती है। इस जांच से निकाले गए निदर्श (**स्पेशिमेन**) की सूक्ष्म दर्शीय जांच (**माइक्रोस्कोपिक एक्जामिनेशन**) से इन रोगों का निदान पक्का हो जाता है। **जिसके उपरान्त उपचार की व्यवस्था करना सम्भव हो जाता है।** यदि इस जांच के नतीजे नकारात्मक हुए तो सम्भवत: रोग की सम्भावना अवग्रहांत्र (**सिगमोयड**) के ऊपर बृहदांत्र (**कोलेन**) में होती है। इसलिए सम्बन्धित रोगियों में बृहदांत्र दर्शन (**कोलोनोस्कोपी**) करवाने की आवश्यकता हो जाती है।

बृहदांत्र दर्शन (कोलोनोस्कोपी) : बृहदांत्र दर्शन (कोलोनोस्कोपी) एक बृहत परीक्षण होता है और इसका परिणाम अवग्रहांत्रिक दर्शन (**सिगमोयडो- स्कोपी**) की अपेक्षा काफी बड़ा होता है। इस परीक्षण के लिए बृहत तैयारी की आवश्यकता होती है। बृहदांत्र (**कोलोन**) में मौजूद मल/विष्ठा (**फीसिज**) का सम्पूर्ण निष्कासन आवश्यक होता है जिसके लिए विरेचक औषधि/जुलाब (**परगेटिक**) और एनिमा का उपयोग करना पड़ता है।

इस प्रक्रिया से बृहदांत्र (**कोलन**) पूर्ण रूप से साफ, खाली और मलविहीन हो जाता है और बृहदांत्र (कोलोन) की सन्तोषजनक जांच सम्भव हो जाती है

तथा **इसके अन्दर मौजूद रोग की पहचान सम्भव हो जाती है जिसकी जीव ऊतकीय जांच (बायेप्सी) करने के बाद निकाले गए निदर्श (स्पेशिमेन) का सूक्ष्मदर्शीय परीक्षण (माइक्रोस्कोपिक एक्जामिनेशन) से रोग का निदान (डायग्नोसिस) पक्का हो जाता है और उपयुक्त उपचार का निर्णय लेना सम्भव हो जाता है।......** क्रमश:....

समाचार दर्शन

दधीचि देह दान समिति की कार्यकारिणी की अर्धवार्षिक बैठक सम्पन्न

दधीचि देह दान समिति की कार्यकारिण की बैठक 17 जनवरी 2014 को संस्कृत भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर सम्पन्न हुई। इसमें समिति के गत 6 माह का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की **अध्यक्षता** समिति के अध्यक्ष **श्री आलोक कुमार एडवोकेट द्वारा की गई और संचालन महामन्त्री श्री हर्ष मल्होत्रा ने किया।** कार्यक्रम के मुख्य केन्द्र बिन्दु इस प्रकार है–

1. **दधीचि दर्शन यात्रा**–9 नवम्बर 2014 को 2 दिवसीय **प्रथम दधीचि दर्शन यात्रा** सम्पन्न हुई। जिसमें 36 तीर्थ यात्रियों ने भाग लिया। सीतापुरा स्थित दधीचि आश्रम की **इस यात्रा के मुख्य संयोजक डॉ. कीर्तिवर्धन साहनी ने इस यात्रा पर अपनी एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।**

2. **समिति के ई-जनरल का शुभारम्भ– 1 सितम्बर 2014 को केन्द्रीय मन्त्री श्री नितिन गडकरी जी द्वारा दधीचि देहदान समिति के ई-जनरल का शुभारम्भ किया गया।** इस अवसर पर सर्वश्री–**मांगे राम गर्ग** (पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक भाजपा, दिल्ली), **मनोज तिवारी** (सांसद), **आलोक कुमार 'एडवोकेट'** तथा **दिव्या आर्य** (सम्पादक जनज्ञान) सहित समिति के अन्य पदाधिकारी तथा सदस्य भी उपस्थित थे, जिसकी विस्तृत जानकारी **डॉ. विशाल चड्ढा ने प्रस्तुत की।** समिति अब तक 3 संस्करण निकाल चुकी है। **तीसरे संस्करण जनवरी-फरवरी 2015 का विमोचन स्वामी अनूभूतानन्द जी द्वारा कार्यकारिणी की बैठक में किया गया।**

3. **स्टैम सैल डोनेशन का लाँच, 'एक जागरूकता अभियान'**– 6 अगस्त 2014 को **'दधीचि देहदान समिति'** एवं **'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान'** (एम्स) द्वारा 'स्टैम सैल एवं बोन मैरो डोनेशन लाँच की एक विस्तृत रिपोर्ट **दिव्या आर्य** द्वारा प्रस्तुत की गई।

ऐतिहासिक आयुर्विज्ञान क्रान्ति के इस अभियान का शुभारम्भ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं कल्याण मन्त्री **डॉ. हर्षवर्धन, एम्स के निदेशक आचार्य एम.सी. मिश्रा, डीन–प्रो. नरेन्द्रकुमार मेहरा, दधीचि देहदान के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री आलोक कुमार एडवोकेट तथा जनज्ञान की सम्पादक दिव्या आर्य सहित लगभग 94 लोगों ने अपने रक्त का नमूना देकर दिया।**

दिव्या आर्य ने बताया कि समिति ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि बड़े पैमाने पर लगभग 100 कॉलेज जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय, नेशनल सर्विस स्कीम इत्यादि सम्मिलित हों, जागरुकता अभियान चलाया जाए, जिससे **प्रतिवर्ष 10,000 लोगों का एक 'रजिस्ट्री बैंक', 'स्टैम सैल डोनेशन' द्वारा तैयार किया जा सके।** जिससे थैलीसिया पीड़ित असाध्य रोग ब्लड कैंसर, HIV इत्यादि। जिसमें उपचार एवं निदान हेतु बोन मैरो (**अस्थि-मज्जा**) की आवश्यकता होती है, उनका उपचार **'स्टैम सैल डोनेशन'** द्वारा सम्भव हो सके।

4. **देहदान/अंगदान करने वालों की जानकारी**– गत 6 माह में हुए देहदान/अंगदान करने वालों की विस्तृत जानकारी **श्री सुधीर गुप्ता** ने प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि **देह/नेत्र/अंग** दान करने वालों के अवयव अथवा देह कौन से मेडिकल कॉलेज अथवा अस्पताल में प्रदान की गई।

श्री विनोद अग्रवाल ने 9 मार्च 2014 को उत्तरी दिल्ली में आयोजित 'देहदानियों के उत्सव की', **श्री रामधन जी ने 2 नवम्बर 2014** को पश्चिमी दिल्ली में आयोजित 'देहदानियों के उत्सव की', श्री विशाल चड्ढा ने 30 नवम्बर 2014 को गाजियाबाद में आयोजित उत्सव, जिसमें करीब 322 लोगों ने अंगदान/देहदान किए तथा 203 लोगों ने स्टैम सेल डोनेशन हेतु भागीदारी की, एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

श्री कमल खुराना ने दक्षिण दिल्ली में 14 दिसम्बर 2014 को मानव मन्दिर गुरुकुल द्वारा पूज्य आचार्य रूपचन्द्र जी ने अमृत महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में 82 देह/अंगदान की ब्यौरा दिया।

कार्यालय सचिव श्री अमित सिंह ने बताया कि समिति ने 652 आवेदन फरवरी 2014 के उत्सव के बाद प्राप्त किए हैं।

अन्त में, समिति के अध्यक्ष **श्री आलोक कुमार**

एडवोकेट ने 2015 से **प्रतिवर्ष दधीचि जयन्ती के अवसर पर दधीचि कथा के आयोजन का प्रस्ताव रखा,** जिसका सर्वसम्मति से सबने अनुमोदन किया। इसके साथ ही, फरीदाबाद सम्भाग के लिए उन्होंने **श्री राजीव गोयल तो जो सूचना मन्त्रालय के डिप्टी डायरेक्टर पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, कन्वीनर बनाए जाने की घोषणा की।......** ●●●

ब्र. राजसिंह आर्य की श्रद्धाञ्जलि सभा सम्पन्न

5 जनवरी 2015 को आर्य समाज के प्रखर विद्वान ब्र. राजसिंह आर्य का निधन हृदयाघात से हो गया। उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर आर्य जगत के अनेक जानी-मानी हस्तियां उपस्थित थी। जिनमें-स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति गुरुकुल कांगड़ी), स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद-सीकर), स्वामी ब्रह्ममुनि, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री योगानन्द शास्त्री, महाशय धर्मपाल जी, श्री माया प्रकाश त्यागी, दिव्या आर्य (सम्पादक जनज्ञान) सहित विशाल जनसमूह उपस्थित था।

आपने 1998 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वीर महासम्मेलन का आयोजन किया था तथा सन् 2006 से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की परम्परा आरम्भ की। **2003 में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का पद सम्भाला, जहां वे 12 वर्ष तक प्रधान रहे। 16 सितम्बर 1953 को जन्मे श्री राजसिंह आर्य ने अपना भाग्य मुम्बई नगरी में भी आजमाया। और 'अनोखा इंसान' शीर्षक फिल्म का निर्माण भी किया।** उनके असामयिक निधन से आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। **समस्त जनज्ञान एवं स्वामी दयानन्द संस्थान परिवार उन्हें विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।**

❖ ❖ ❖

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:

सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तोआपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्च में ले जाकर ईसई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। **मानवता की रक्षा हेतु** हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक **अध्यक्ष**	**मुन्ना कुमार शर्मा** **मन्त्री**	**वीरेश कुमार त्यागी** **कार्यालय मन्त्री**

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग पाँच लाख रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००/-, ५००/-, १०००/- रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''स्वामी दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए गो ग्रासरूप चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. **परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य २८००/-रु.।** अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में वेदभाष्य पहुंचायें। डाक से मंगाने पर ३००/-रुपये अधिक लगेंगे।

४. **बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३६०० रु.। डाक से मंगाने पर ३००/-रु. अधिक लगेंगे।**

५. विगत पचास वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक **''जनज्ञान''** के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। **वार्षिक शुल्क २००/- रुपये है।** इकतीस सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी दो सौ रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास **''जनज्ञान'' की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ १४०/- रुपये में मंगाकर बांटें** तथा **''जनज्ञान''** मासिक में **विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।**

७. **संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं,** जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। **अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।**

अध्यक्ष–पण्डिता राकेश रानी
स्वामी दयानन्द संस्थान

ओ३म्

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े तीन लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग २५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि **प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।** अतः गोभक्तों से निवेदन है **कि** गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में **अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा सस्ते मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पड़ता है। अभी दो लाख रुपए अनुमानतः कम पड़ेगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।** गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६ चलभाष : 9810257254, 8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 2800 रु.
2. सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी 300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी 20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री 20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा 300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य 20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी 80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी 300 रु.
17. History of the assassins 80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती 100 रु.
19. Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ) 60रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद) 300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand 40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी 80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत 100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम 20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
28. सत्संग पद्धति 15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत 20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा 5 रु.
31. उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी 100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार 100 रु.
37. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 100 रु.
38. श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति 80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर 20 रु.
40. वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय 5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान) 30 रु.
44. योगासन 20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश 3 रु.
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु: 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? —वेदभिक्षु: 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं—सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ —जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम—एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षु: 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 5.00 रु.
15. Bible in the Balence 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

जनज्ञान (मासिक)	माघ-फाल्गुन	Delhi Postal N0. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम	सम्वत्- २०७१	R.N.I. -10719/65
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६	फरवरी, सन्-२०१५	Posted at N.D.PSO on Date 5 & 6 of February-2015

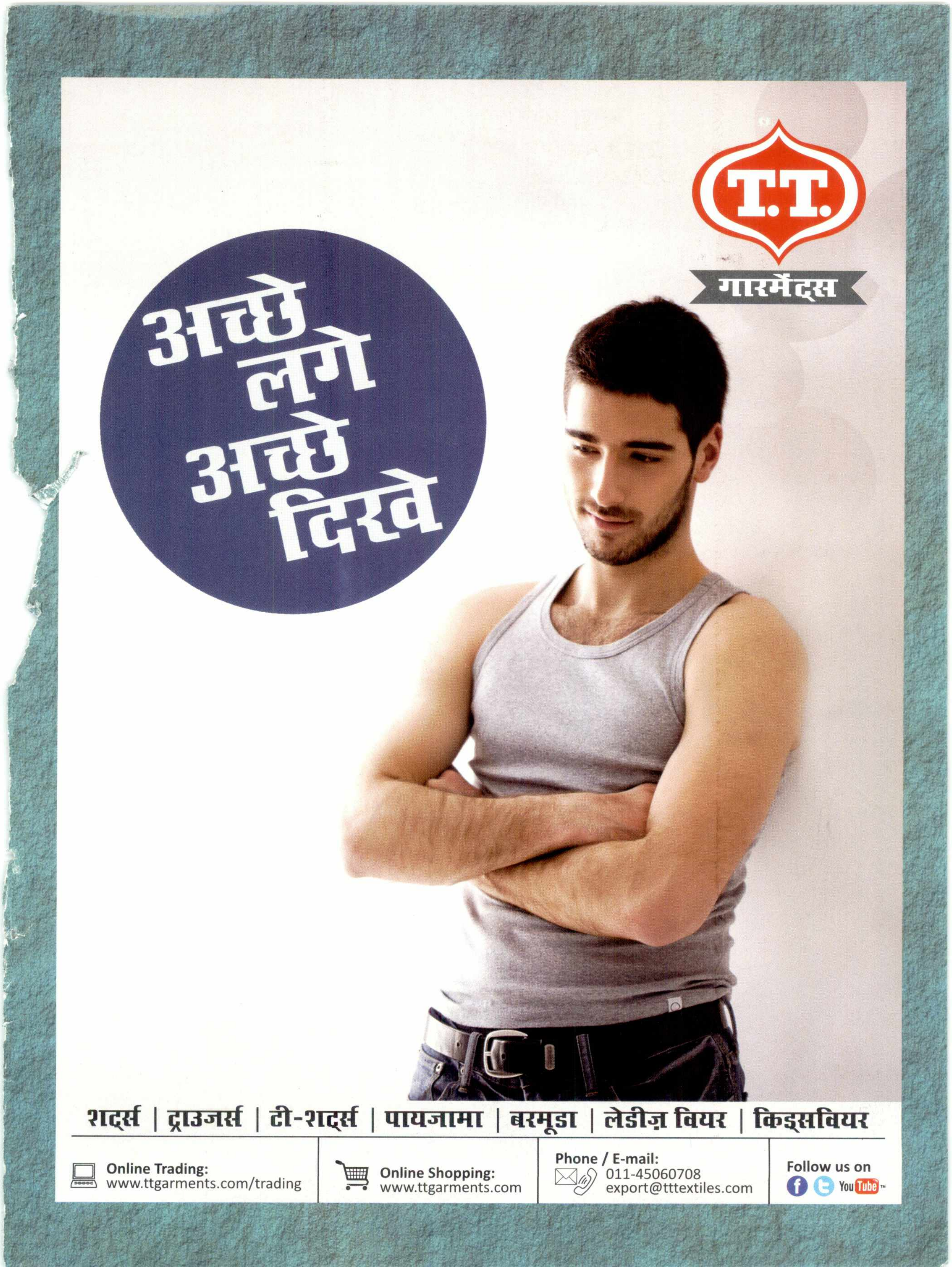
T.T.
गारमैंट्स
अच्छे लगे अच्छे दिखे
शर्ट्स | ट्राउजर्स | टी-शर्ट्स | पायजामा | बरमूडा | लेडीज़ वियर | किड्सवियर
Online Trading: www.ttgarments.com/trading
Online Shopping: www.ttgarments.com
Phone / E-mail: 011-45060708 export@tttextiles.com
Follow us on
YouTube